A.C. Joshi Library
P.U. Chandigarh

MSS No. 254 Subject Philosophy.

Name of MSS गीता श्रीमद् भागवद

Author

Period Folios 128

Script Hindi Source Prithipal Singh

Missing Folios

GITA - HINDI

P. 128

W. 10

P.P.S

2357

श्री॰ कोपमध्येन इस अरु श्लोक रविषैवासनाकेसर्वप्रकारोकूं
अरु नरक निवर्तकोपायोंकूं अरुमनकेस्वरूपकूं कहा है

(1)

254

७९ पत्रेपर यंत्रानेवंदस
श्लोक का अर्थ योग
निर्णय करके सुंदर
निरूपणा है

८० पत्रेपर बुद्धिमाह्वदस
२५ श्लोक का संपूर्ण प्रसं
ग करके सुंदरसे दरसाव
है

८६ पत्र श्लोक २६
योगनिर्णय श्लोक
पंच गौराचार्य सहित

श्रीरामायनमः अथ पंचम अध्याय को आरंभ ॥ द्वि
अध्यायों में कही याहै सांख्य कर्म अरु ज्ञान को ॥
अब के कर्म अरु कर्मों के त्याग को परलौकिक भावत है
इ पाँच अध्यायों कर के तृतीय अध्याय विषे प्रश्न है जो कर्म
ते बुद्धि इत्यादिक कर के अर्जुन कर के पूछा है याम
गवान ज्ञान कर्म को विकल्प समुच्चय के असंभव कर
के अधिकारी के भेद अवस्था कर के इस लोक
र्विधा द्विधा निष्ठा मैने कही है इत्यादिक कर के नि
र्णय कर लिया है तैसे ते अधिकारि कहे है के
म सो ज्ञान साधन नहीं समुच्चय को पावता प्रकार

अरु तैसें मेरु के जैसें एक काल कै असंभव तें औरु एक
मारिवेकार हेतु बुद्धि कें इरकर्तापक कौं ज्ञान कें तदि
रोधी न्वेबे॥ नहू बुद्धि कल्पा कहीयत है एकार्यत्व के अभा
वतैं ज्ञान कैं ज्ञान नाशुक कर्म कि कैं कर्वै को अशुद्धा
कपत्व तें ऐसें सकौ जान करि अरु तें मत्य को पावता है॥
नहीं औरु मार्ग विद्यमान मोहतां ई इस प्रवृत्ति तें अ
रु ज्ञान उत्पत्ति सें तें कर्म कार्य कों नहीं अपेक्षा कर्ता
ये हूं कहा है यावान् अर्थ उदपाने इस स्थान विषै तै
सें सें ज्ञानी के कर्मा न होय कारण पवयकरु
सें तें प्रारब्ध कर्म विशु तें वपा चेष्टा रूप क कै

रहित कर्मोंका कर्ता है अथवा सर्व कर्मोंका सन्यास ये दोनें
र्थि वा र चतुर्थाध्याय विषे निरूपण कीया है अब दोनें
नो अंतःकरणकी शुद्धि द्वारा ज्ञानोत्पत्ति के निमित्त कर्म क
र्त्तव्य हैं ऐसें इस आत्माको वेदानुवचनकर ब्राह्मण
जान्या चाहते हैं यज्ञ दान तप अनाशक कर कैं इस श्रु
तीतें सर्व कर्म संपूर्ण हे पार्थ ज्ञानविषे परिसमाप्त
होता है इस भगवद्वचनतें औ सो सर्व कर्म ज्ञानार्थ
है तैसें सर्व कर्म सन्यास ज्ञानार्थ श्रवणादिक करीय
ते हैं इस ही आत्मलोकको चाहते हुये सन्यासी स
न्यास ग्रहण करते हैं श्रुतिहू यातें होय या उपरंतहो

याते ते हहोयास्समातहेतहोयके कैं आपही देखेषे आत्मा
कोदेखे कर्मत्याग कर्ते पुरुषने सोपरहजीतबेयोगये है
कर्मत्यागकर्ते पुरुषके आत्मरूपपरमपदहोताहेस
ता अनंतसुखदुःखवेदयेलोकपरलोकेइसकर्व
कोत्याग केकैं आत्माहीको चाहेइत्यादेदेखेषे तहांकर्म
अरतातुत्यागकाभेरकेदेखेषेउपकारकप्राप्तेकर
केउपकारकोकेप्रयाजो अवघातकेजैसेनहीसंभच
यहोता दिखघत्वकेकैसामकालोत्वकेअभावतेंआअर
नपुनःकर्मअरकर्मत्यागको [illegible] भोगफलत्वके
रएकार्यत्वतें अरतेरात्रहैअर्थतेजिनोंको अरसीजो छोड
छोडबरात्रनामयसौलिसके कर्तसिसीजे एकरात्रकाहूबिघ्नकर
कर्मनिहेआवेतोओररहेनरघेबेवहकर्मकरलेवे अयवासनारवें
दिनबरएहविकल्पशास्त्रविषेकहाहे सोजहतांईहोनहीं॥१

येमनयमादिकैं संन्यासविचारके अवसरको दानकर्ता है ४

बीरविधके महत्त्व अमहत्त्वकेजैसें रवीकल्प होता है तारमें
रवकैं एकार्थत्वके अभावतें कर्मकाण्डने प्रवर्तककैं पा
पक्षयरूप अदृष्ट हीहारहै अरसंन्यासकातु सर्वस्वहे
पके अभावककैं विचारकौ अवसर दानरूप दृष्ट ही
कारहै अरनैयमको अपूर्वतु दृष्टके समवायीनको अव
घातर्हिकोरवे येंनहीं प्रयोजक तैसे संतेन अदृष्टार्थ
अरदृष्टार्थकिरनेकैं रवैवे उपकार कको प्राप्ते क
रके दोइ उपकारकोंकै एक के मुख्यार्थसंतेहूं रवे
कल्पनहीं प्रयोजन अवघातादिकोंके हूं तैसप्रसंगातें
कोरवे कल्पप्रसंगातें तातें कर्मककैं उभयपही अनुष्ठेय
है तातें संन्यासतें अनंतरकर्मको ग्रहण नहीं होइ जोन

॥ संस्कार

॥ हे॥

जैसे

ब्रह्मचारी कों पूर्वाश्रम के स्वीकार करिकै आरूढ उपनत्तत्व
से कर्मों का अनधिकार [illegible] अरु प्राक्तन संन्या
स का वैयर्थ्य होवेगा [illegible] अरु तैसें संन्यास के अदृष्ट
पत्व के अभावतें प्रथम कृत संन्यास करिकै ही ज्ञा
नाधिकार के लाभ संभवें तिसतें उत्तरकाल विषे क
र्मानुष्ठान का वैयर्थ्य ही होइगा तातें आरुरुक्षु विषे भ
गवत् अर्पित बुद्धि करिकै निःकाम कर्मों के अनुष्ठा
नतें अंतःकरण शुद्धि भये तें तीव्र वैराग्य के उदय
विषे शुद्धाधिकारी तें सर्व कर्मों संन्यास श्रवण मनना
दिरूप वेदांत वाक्य विचार रूप साधन के तो चाहे। औ सो
भगवान् का मत है तैसें कहा है न कर्मों के अनारंभ

तें नैष्कर्म्यको पुरुष पावताहै और कहेंहैं भी आरुरुक्षो
र्मुनेर्योगं कर्मकारणमुच्यते योगारूढस्य तस्यैव श
मः कारणमुच्यते इति योगाई होंतीव्र वैराग्यपूर्वक श्रव
णादिकन्को कहाहै सो कहाहै वार्त्तिककारोंने प्रत्यक् कीवि
विदिषा सिद्धाने नित्य वेदोंके अनुवचनादि कहैं औ र
ष प्राप्तिमें नित्यानुरक्तीनौंका त्यागहीं कहतेहैं प्रबलतें
इति स्मृतेहु कहतहै अंतःकरणको प्रथम कर्त्ताकर्म है
अज्ञानानुपक्रम गतिरूपहै अंतःकरणकुं वैरा[illegible]
प्रपक्क सत्वतें सकलें पीछें ज्ञान प्रवृत्ति होताहै इतिमो
ह धर्मविषेहु कहाहै अंतःकरणको प्रपक्क करकें

ब्रह्मचर्य ॥ बैकुंठ संसारयोनीयोंर विषे २   वैराग्य

तीन आश्रमोंर विषे परम उत्तम संन्यास योगय परमस्था
न को पावें सुषकर लोक कैं सुधात्मा होयार ने पक्षपक
कैं प्रथमा आश्रमर विषे मोह को पावता है । रत्ते सद्ज्ञानको
पायक कैं मुक्त रूप (वैराग्य) अरव चाहित है अर्थ जिसने औसा
जो ज्ञानवान है रत्ते सका तीन आश्रमोंर विषे कोन अर्थ
होता है जातें सो परमपद को चहता है इत्ति इस कर कैं क्रम
अक्रम रूप होनो संन्यास ही रहि रवाये तैसे श्रुति हूं
ब्रह्मचर्य को समाप्त कर कैं गृहस्थी होवे तातें वा
न प्रस्थी होइ कर संन्यास करे । जो और प्रकार तु
ब्रह्मचर्य तैं ही संन्यास ग्रहण करे अथवा गृहस्थ
...ले तीनो विवेजि सर्व्वबे संन्यास करे
सो अक्रम है ५

तो अध्यवायनतें क्लेसर्हनवैराग्यकोपावैतसर्द्दनहीं
सन्यासग्रहणकरेदूसरे तातें अग्नकेअवरहकरैश्रू
खिषेकर्मानुष्ठानअरइनतें पीछें तिसकोंहीरवि...करे
ग्रारवैषसन्यासहै अवतारदिकअयसर्दानकर्कै
ज्ञानार्थहिसोईसन्यास ऐसे अवस्थाभेदकरके
अग्नको अधिकारककैं कर्मअरकर्मत्यागकरहैवे
निमित्तपंचमषष्ठअध्यायआरंभकरीयेहैं इं
हांसन्यासतुज्ञानबलतें अर्थसिद्धहीहै ऐसे...रे
हकेअभावतैं ईहांनविचारायतहै तहांएक...रखे

५

नासी किं अप्रतिसानार्थ त्यक कर्मे अरु तत्यागके करनेते अर रवि रोधी होनो के एक काल अनुष्ठान के असंभव तें मोजे नासीने कया अब अनुष्ट यहै सो सो है है पुक्त होया अर्जुन उवाच श्लोक सन्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितं १ हे कृष्ण कर्मों कि सन्यास को अरु पुनः योग को कहते हो इन दोनो रवि बीच जो श्रेय है सो कहो निश्चय करकै ॥ हे कृष्ण क्या है सदानंद स्वरूप अथवा मेरे केउः रव का हरकर्ता कर्मों को जा जीवन पर्यंत पुनि करव रहित जो सन्यास ने दोनो ते कहै रहि श्लोका

भलीप्रकार त्यागजिज्ञासी अरु परलोक कहते हैं वे इनकैं
अरु तरहिकु इ योग क्या कर्मानुष्ठानरूपको कहते हैं ॥
इसही आत्मलोकको चहते हुवे संन्यासी संन्यासग्रहण
करते हैं अरु तिसही आत्माको वेदानुवचनकरकैं ब्राह्मण
जान्या चहते हैं यज्ञकरकैं इत्यादिक वाक्यद्वयकरकैं अरु
निराशीर्यतचित्तात्मात्यक्तसर्वपरिग्रहः शारीरं केवलं
कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषं छित्त्वैनं संशयं योगमा
तिष्ठोत्तिष्ठ भारत ॥ इनसे गीतावाक्यद्वयकरकैं तहां एक
अरु ह्यपरते कर्म अरु कर्मत्यागके करणतें एककाल होनो
के अनुष्ठानके असंभवतें इन दोनो कर्म अरु कर्म

त्यागकेमध्यखेलेजोएककार्यश्रेष्ठतरमानतेहो कर्मकाप
वा कर्मत्यागसामुलत्ताईकहोरनेपक्षयककैं जोउद्धाका
मतमुजकरअनुष्ठेयहै १ ऐसेअर्जुनकेप्रश्नखेिदउ
त्तरकोपश्रीभगवानुवाच मू० सन्यासः कर्मयोग
श्चनिःश्रेयसकरावुभौ तयोस्तुकर्मसन्यासात्क
र्मयोगोविशिष्यते २ टी० सन्यासअरु कर्मयोग ये
दोनोंरनिःश्रेयसकरहै इनदोनोंखेिषेकर्मसन्यास
तैकर्मयोगश्रेष्ठहै निःश्रेयसकर कहीयेज्ञानके
उत्पत्तिहेतुत्वकरकैं मोक्षकेउपयोगीहैंरत्तिनोंखेिषेतु
अनधिकारीकरकीयेकर्मसन्यासतैं कर्मयोगश्रेष्ठ है
कर्मोधिकारी

है अधिकारकी सिद्धताकै करनेतें तातें सही कर्मयोगको
स्तुति करते हैं तीन श्लोकों करिकै श्लो० ज्ञेयः स नित्यसंन्या
सी यो न द्वेष्टि न कांक्षति निर्द्वंद्वो हि महाबाहो सुखं बंधात्
प्रमुच्यते ३ सोऽर्न नित्यसंन्यासी जाननेयोग्य है जो न ही द्वे
ष करता और नहीं कांक्षा करता जो निर्द्वंद्व है हे महाबाहो सो सातें
सुखेन बंधतें मुक्त होता है सो कर्मविषै प्रवृत्त हुवा भी नि
त्यसंन्यासी ऐसे जाननेयोग्य है कौन ये जो न द्वेष क
रै है क्या भगवदर्पित बुद्धि करिकै क्रियमाण कर्मको
नै: फलत्व कांक्षा करिकै नहीं होई है पकर्ता और न चहता है स्व
र्गादिककौ निर्द्वंद्व है क्या रागद्वेषादिक करि रहित है जातें
इह कहा है

८

सुखेन कहीये अनायास करकै हे महाबाहु बंधतें कहीये अंतःकरणकी अशुद्धतारूप ज्ञानप्रतिबंधतें प्रमुच्य ते कहीये नित्यानित्य वस्तुविवेकादि प्रकर्षकरकै मुक्त होताहै ३ ननु जो कर्मविषय प्रवर्त्त है सो कैसें संन्यासी कैसें जानव्य है कर्म अरु कर्मत्यागके स्वरूपविरोधतें अरु फलैक्यतें तैसें है जो ऐसें कहो तो नहीं स्वरूपतें विरुद्ध होनो के फलविषैहू विरोधत्वके योगपत्तें तैसें संसारनिःश्रेयस करहै दोनो यें अयुक्त है ए हमारे नूं कारके कहतेहैं श्लो॰ सांख्ययोगौ पृथक बालाः प्रवदंति न पंडिताः एकमप्यास्थितः सम्यगुभयो विंदते फलं ४ सांख्ययोगको भिन्न बाल कहते हैं न पं

ॐ

इत एकहीकोआस्थितहोयाभलीप्रकारदोनोकेफ
लकोपावताहै टी० संख्याकहीयेभलीप्रकारआ
त्मबुद्धि इतिसकोजोप्राप्तहोवैज्ञानकेअंतरंगसा
धनकैकैसोकहीयेसांख्यक्यासन्यास योगके नी
हीयेपूर्वोक्तकर्मयोग इतिन दोनोकोपृथककही
येरवेदृष्टफल बालकहीयेजेआत्माअपरविवेक
ज्ञानशून्यहैं वेकहतेहैं नपंडित कौनहेतबपं
डितोंकामत सोकहीयतहै एककोसन्यासकर्म
केमध्यायेवेजोभलीप्रकारआस्थितहै क्योंख्या
धिकारकेअनुरूपकर्वैसम्यककहीये यथाआ

रव्य कर्मयोगानहोयादोनोकेपावताहैफलकोज्ञानो
नतिशानककैसे: प्रश्नयसरएकहीको ४ एकहीकेअनु
ष्ठानतैकैसेदोनोकेफलकोपावताहैंनहांकहतेहै श्लो
० यत्सांख्यैःप्राप्यतेस्थानं तद्योगैरपिगम्यते एकंसां
ख्यंचयोगंचयःपश्यतिसपश्यति ५ जोसांख्यो
नेस्थानपाईयतहै सोयोगीयोंनेहूंपाईयतहै सां
ख्यअरुयोगकोजोएकदेखताहैसोईयथार्थदे
खताहै टी० सांख्यकहीयेज्ञाननिष्ठसन्यासीयों
नेऐहिककर्मानुष्ठानपरत्वसंतेंहूंप्राक्जन्म
कर्मोकरहींसंस्कृतनयतःकरणोंकरकेश्रवण

रहिपूर्वकज्ञानतैइच्छाककैंजोप्रत्तिसेवस्थानेस्थितेनहोता
हैइसरवेिषेननुकहाचित्तरागेऽनहोताहैऐसीवृत्तित्ते
ककैंमोहरूपपाईयतहै क्याअवत्तीभावमात्र
ककैंपाईयत्तलैसहै रनेत्यप्राप्तत्वतें योगैकहीयेयो
गीयोंनेहूं भगवदर्पणबुद्धीककैंकलामें संधके
राहितताककैंकीयेहूयेजोकर्मभूतरूपायहैं सोक
हीयेंयोगावेज्ञेज्ञाकेहैं वेकहीयेंयोगॐ [illegible] युक्ताहै
त्वतैंमत्त्वपरिग्रचवप्रत्ययहै तेकहीयेंसेज्ञोनेक्यायोगी
योनेहूंअंतःकरणकीशुद्धताकरकेसन्यासपूर्वक
श्रवणादिपुरसरज्ञानरनेइष्टाककैंवर्त्तमानजन्म

खिषे अथवा भाखे ष्यातजन्मखेषे स्सिधा भई उसज्ञान
निष्ठा कऽकै सो स्थान पाईयत है इसीतैं एक फलत्वतैं
एकसां रव्य अरयोग कोजो देखता है सो हम भलीप्रका
र देखता है नऔर यभाव है ऐसे सौके सन्यासपूर्व
कज्ञाननिष्ठा देखीयत है तैसौ केरतैं सज्ञाननिष्ठा
हीकऽकै कयाज्ञाननिष्ठा होरवै तौकऽकै पूर्वजन्मोरवे
षे भगवदर्पित कर्मनिष्ठा अनुमान करीयत है
॥कारणविनाकार्योत्पत्तिके अयोगतें सोकहा
है जैइसजन्मतें औरजन्म है तैसोखेषे नेपवयाक
रकीयाहोता है जोपुरुषने इहां कर्तव्य है अन्यथा

मविक्षित

चलनरवे षेरस्थित नहीहोती॥ ऐसेलोकोके भगवद्
अर्पितकर्मनिष्ठा देखीयतहे तेक्नो केतैसनिष्ठा
हो[illegible] केचित्तककै भावनी सन्यासपूर्वक ज्ञान
निष्ठा अनुमान करीयतहे सामग्रीके कार्यकिअव्य
भिचारित्वतें तातें असमर्थ हमें अंतःकरणशुद्ध
निरमेन प्रथम कर्मयोग अनुष्ठेयहे ननुसन्यास सो
सन्यासतु वैराग्यतीव्रतासेंही स्वतःही होगो पअ
शुद्धांतःकरणनेहं सन्यासही प्रथम काहेतें नक
रीये ज्ञाननिष्ठाहेतुत्व कवैतेसके आवश्यकत्व
तें इसतेंचेसचाह श्लो० सन्यासस्तु महाबाहो दुःखमा
प्तुमयोगतः योगयुक्तोमुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगछ

ते ६ सन्यासजो हैतु पनः हे महाबाहो योगविनापायबे
तांई दुःखहै अरयोगयुक्तजो मुन है नचिरकालकरकै
ब्रह्मकोपावताहै अयोगतः कहीये योगरूप अंतः
करणप्रबोधक शास्त्रीयकर्मविनाहठतें हीजोकी
याहोयासन्यासहै सोतुपायबेतांईदुखरूप होताहै
अशुद्धांतःकरणत्वकरकै तिसके फलरूप ज्ञान
निष्ठाके असंभवतें अरप्रबोधकरूपकर्मविषे
अनधिकारतें॥ कर्मछुटनउ भयतें दृष्टत्वकर
के परमसंकटकी प्राप्तितें अरकर्मयोगयुक्तसु
शुद्धांतःकरणत्वतें मुनकहीये मननशीलसन्या
सीहोयकरकै ब्रह्मकहीये सत्यज्ञानारहिलहरणब्र

त्माको नत्वेश्वरककै कयाज्ञीघुहौ अथ्येगछीतै कयासाह
त्कार करतो है धातें बंधकके अभावतें ये कहा है पूर्वहीं
न कर्मणामनारंभान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते न च संन्यस
नादेव सिद्धिं समधिगछतीति इसीतें एकफलत्व सतें
हू कर्मसंन्यासतें कर्मयोग श्रेष्ठ है अरु जो प्राक् कहा
है सो युक्त है ६ ननु कर्मके बंधहेतुत्वतें योगयुक्त हू न ब्रह्म
को पावता है ये अयुक्त है तहां कहते हैं श्लो० योगयुक्तो वि
शुद्धात्मा विजितात्मा जितेंद्रियः सर्वभूतात्मभूतात्मा कु
र्वन्नपि न लिप्यते ७ योगयुक्त शुद्धचित्त विजितात्मा जितेंद्रि
य सर्वभूतों का आत्मभूत आत्मा ऐसा पुरुष करता हुआ
हू लेप को नहीं पावता टी० भगवदर्पण अरु फलाभिसं

धरा रहित्या रिहे गुणा युक्त ज्ञानस्वी कर्म योगा ऐसे कहीयत
है तैसे योगा करयुक्त पुरुष धृष्य महोवे और खेदपुष्या
मा कहीये खेदपुष्पर जात्मक कैं अकलुषवेत है ज्ञा
मा कहीये अंतःकरण रूप सत्व ऐसे सकौं सो तैसे
रने मलि अंतःकरण होय ऐसे जितात्मा कहीये अप
नेवश कीया है देह जैसेने तैसे जितेंद्रिय कहीये अ
पने वश कीये है सर्वबाह्येंद्रिय जैसेने इस कर्कें स
नुस्मरते कर्यो ते मैंही करहुं वाकमें अयं मनो मैं
और तैसे ही काय मैं करहुं ऐसे कै यत्नी जो मैं करूं सो यत्न है
सो तै मैंही ऐसे कहीयत है वाकुं ऐसे कहवा कर्कें

जडरूप अरु कहावे चैतन्यस्वरूप सोई है आत्मा कहीये त्रि
बोध्रंदेयकाउपलहनाहे एताद्रशपुरुषके तत्वज्ञान अ
नुभूयहोताहै ये कहतेहैं सर्वभूतात्मभूतात्मा क्यासर्वभूत जो
हैं आत्मभूत स्वरूपरूपसका सो तैसे जडाजडात्मक सर्व
को आत्ममात्र ही देखताहोयाहे ये अर्थहे अरु सर्वभूतोका
आत्मभूत है आत्मा जे सका ऐसे व्याख्यानविषेतु सर्व
भूतात्मा ऐसे इतने मात्र कै ही अर्थ कि लाभतें आत्मभू
तये अर्थ अधिक होताहे सर्व अरु आत्मपदों के जडाजड
पदविषेतुसंहरताहोतीहे एताद्रशपमार्थद्रष्टी क
तीहीयाहू कर्मोकोपरद्रष्टकवै नहीं रतीप्रहोतातिनक
र्मोकि कै खद्रष्टक कै रतेसकरणाके अभावतें इस्ति
इसही अर्थको विवर्ण करतेहैं पञ्चाकद्रूयक कै श्लोक

नैवकिंचित्करोमीति युक्तोमन्येततत्ववित् पश्यन्शृण्वन्
स्पृशन्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपन्श्वसन् प्रलपन्विसृ
जन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि इंद्रियाणींद्रियार्थेषुवर्त्तं
तइतिधारयन् ८ नकछुएककर्मकर्त्ताहौं ऐसेतत्त्ववे
त्तायोगीमानताहै देखतानाहोयसुनतानाहोयास्पर्शक
र्त्ताहोयासूंघत्ताहोयाखात्ताहोयाचलतानाहोयासोवत्ता
होयाश्वासोकोलेकोसतानाहोयाबोलतानाहोयात्यागक
र्त्ताहोयाग्रहणकर्त्ताहोयाउन्मेषनेमेषकर्त्ताहोयाइं
द्रेइंद्रियार्थोविषेवर्त्तंतिहैं ऐसेधारतानाहोयाइति टी०
चक्षुरादिकज्ञानेंद्रियोंककैं अरुवागादिकर्मेंद्रियो
ककैं प्राणादिवायुमेदोंककैं अंतःकरणचतुष्टेक

नेनुमै ३

कैंतैसरत्तेसचेष्टां...यमातासेत्ती इंइउयकाइंइयारेक
हांइंइया येरिवि बेक्याअपलोरविषयोंरवेषेवर्त्तते हैंका
प्रवर्त्तते हैं ऐसे लेनिश्चयकर्त्ताहोयानरकेंचितूकनाहीं
ऐसे मानताहै तात्व रवेत्र क्यापमर्यादिस्थी युक्तका
समारहेतत्वेत्र अथवा आरहे रविषेयुक्त ...कर्मयो
गककैं वर्णात् अंतःकरलाप्रसधारककैं तात्ववे
तूहोइककें नहीं रकेंचेतकर्त्ता ऐसे मानताहै येसबंध
है तहां रत्रुनिश्चयवास्पृ...नूघ्राणाश्चनयेचतु
श्रोत्रत्वक घ्राणरसनदूपेचज्ञानेंद्रियोंकेव्यापा न
रहैं ताते पत्रूपनश्चचनस्पृन्नानजेघ्रनश्चनूऐ

सो कहा है गत्ते पादों का धर्म है प्रलाप वाणी का धर्म है वि
सर्ग गुदा अरु लेंग का धर्म है ग्रहण हाथों का धर्म है ॥
औसे पंच कर्मेंद्रिय व्यापार हैं ॥ ग्रहन प्रलपन विस
र्जन गह्न न औसें कहा है स्वप्न ये प्राणाद्य पंचक का
धर्म है स्वप्न ये अंतःकरण चतुष्टे का धर्म है अर्थक्र
म के वस्तु तैं पाठ क्रम को भेद कर ये श्लोक व्याख्या
त है जाते सर्व व्यापारों विषे हूं आत्मा के अकर्तृत्व
को देखता है इसी तैं कर्त्ता होया हूं न ही लिप्त होता ये पु
रुष कहा है ये भाव है ॥ ९ ॥ सब अर विद्वान पुरुष कर्तृत्वा
भिमान तें लिप्त होवै है । तो से संतो कै से तै सकै स

न्यासपूर्वक ज्ञान रूपैसाहोवैहे तहांकहतेहैं ब्रह्म० ब्रह्मरायाधायकर्माणिसंगंत्यक्त्वा करोतियः लिप्यतेनसपा
पेनपद्मपत्रमिवांभसा १० ब्रह्मविषेधारककैकै
र्मोकोअरसंगकोत्यागकर्कैजोकत्ताहैसोपापकर
कैर्लिप्तनहीहोता पद्मपत्रजैसेजलकर्कै ब्रह्मवि
षे क्यापर्मेश्वरविषेआधायकहीयेसमर्पितकर्कै
संगकहीयेफलाभिलाषकोत्यागकर्कै ईश्वरार्पि
तजैसे स्वामी रूनिमित्त अपरोफलकीरनेपिहिताकर्कै
कर्ताहिं येअरमेवापकर्कै कर्मकहीयेलोकिकअर
वैदकोकोजोकर्ताहिसोपापकहीयेपापपुन्यात्मककर
मकर्कैनहींलिपकोपावताये अर्थहै जैसेपद्मपत्रेऊपर

रास्येजलकरकैंनहीलेपकोपावता तैसेभगवदर्पणबुद्धि
करकैंअनुष्ठितकर्मबुद्धिशुद्धहैफलजेसकाऐसाहोता
है १० सोहीदिखावताकरतेहैं श्लो० कायेनमनसाबुध्याके
वलैरिंद्रियैरपि योगिनःकर्मकुर्वंतिसंगंत्यक्त्वात्मशु
द्धये ११ शरीरकरकैंमनकरकैंबुद्धिकरकैंकेवलइंद्रियो
करकैंहूं योगीकरतेहैंसंगकोत्यागकरकैंचित्तकीशुद्ध
केनिमित्त ॥ टी० कायेकहीयेशरीरकरकेमनकरकैं
बुद्धिकरकेकेवलइंद्रोकरकैंहूं योगीक्याकर्मोंफ
लसंगकोत्यागकरकैंकर्मकरतेहैं कायारइसवेंकावि
शेषणहैकेवलैइन्हे ईश्वरताईकर्त्ताहौनअपरोक
लतांईऐसेममताकरकैंशून्योकरकैंएहकेवलपदकाअर्थ
है

आत्मशुध्दयेकर्म चित्त के सत्त्व की शुध्दार्थ ११ कर्त्ता अभि
मानसा आसक्ति हैं तें सही कर्म कैं कर्म्हसे सबंध होता
है कर्म्हसेत मुक्त होता है इसवैं शान्तरवैष कौन हेतु हैं त
हां कहते हैं युक्ता कर्मफलंत्यक्त्वा शांतिमाप्नोतिनैष्ठि श्लो०
की अयुक्तः कामकारेण फलेसक्तोनिबध्यते १२ यु
क्त होया कर्मफल को त्याग कै नैष्ठ की शांति को पाव
ता है अरु अयुक्त होया काम कार कैं फल रवैष सक्त
होया बंधन को पावता है। टी० युक्त कहाय ईश्वरतांईए
ह कर्म है न मुजे के फल तांई हैं असे कर्मे प्रापक कैं यु
क्त होया कर्मफल को त्याग कैं कर्मो का कर्ता होया

औरतेकहीयेमोक्षरूपकोप्राप्तहोताहै नैष्टकीकहीये
सत्वपुरुषनित्यानित्यवस्तुविवेकसन्यासज्ञाननिष्टा
केक्रमकरकैजोउत्पत्तिहैतिसकोयेप्राप्तिहै औरजो
पुनअयुक्तहैक्याईश्वरतांईलहकर्महैनमुजकेफल
तांईहै ऐसेअपनेभावकरकैजोप्रवृत्यहै सो कामका
रककै क्याकाममतकीप्रवृत्तिकरकैप्रापकेफल
तांईयेकर्मकर्ताहैं ऐसेफलविषेसक्तहोयाबंध
नकोपावताहै क्याकर्मोकिकैअतेप्रायकरसंसार
बंधकोपावताहै जातेंऐसेहै तातेंतूंहयुक्तहोयाक
र्मोकोकरयेप्रायहै १२ अथहरचेतनकेकेवलसन्या

सतें कर्मयोग श्रेष्ठ है इस पूर्वोक्त को खेस्तार कर कै अब
प्रभु श्रेष्ठ चित्त के सर्व कर्म सन्यास ही श्रेष्ठ है ये कहते हैं ॥
श्लो० सर्वकर्माणि मनसा सन्यस्यास्ते सुखं वशी
नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन् १३ सर्वकर्मों
कों मन कर कै सन्यास कर के वशी होया सुखेन बैठ
ता है नवद्वार पुरस्वेषे देही न कर्त्ता होया न करावता
होया नित्य नैरमित्तिक काम्य अरप्रात्ते वेह श्रेष्ठ से सर्व
कर्मों को मन कर कै क्या कर्मताप कर्म यः पशुपत् श्रे
सई हैं उक्त श्रम कर्ता आत्मस्वरूप के सम्यक् कर ज्ञान
कर कै सन्यास कर कै क्या त्याग कर कै प्रारब्ध कर्म वशा

तेस्थितहोताहीहै कहाउःखकवैस्थितहोताहै नयेक
हतेहैं सुखं क्याअनायासकवैं आयासकाहेतुजो
कायवाक्मनकेव्यापारहैंतेसोकवें मून्यत्वतें का
यवाक्मनकेसेनखछेहप्रवृत्तहोवेंगे तहांकहतेहैं
वज्री क्यावज्रीकृतहैकार्यकारणसंघातजेसने
असाहोया कहांबैठताहै नवद्वारेपुरे क्यानवद्वार
पुरविषे द्वयश्रोत्र द्वयचक्षुषी द्वयनासाके एकवा
क् औसेंसप्तोर्ध्वविषेसप्तद्वारहैं अरद्वयपायुउपस्थ
ये अधःद्वारहै औसेनवद्वारोंविषेजोदेहतिषेरहो
क्यादेहसेभिन्नआत्मरूपी प्रवासाजैसेपरगेहविषे
परदेश

तिसकी पूजा अरु निरादरादिक को करिकै न हर्ष न खेद को
पावता होय या अहंकार अरु ममकार करिकै शून्य होय या
स्थित होता है अरु जिनै क्षयक कै देहतादात्म्य अभिमान तौं रे
हही है नतु देह ही है सो देहादिक करता को ही आत्माधिक
रता मानता है जो देह विषे भूम अरु विषे अभ्यास न विषे मे स्थि
त हों औरु सो मानता है नतु देह विषै मे स्थित हों अरु स भे
रदृष्टि के अभावतैं अरु संघातानुव्यतिरिक आत्मद
र्शी सर्वकर्मसंन्यासी तुमे दृष्टि नितैं देह विषै मैं स्थि
त हों औरसे ज्ञान को प्राप्ति होता है इसी तैं ही देहतादात्म्या
पार अरु खेद्या करिकै अक्रिय आत्मा विषे जे समारोपि

तहैं तै तिन्हो कारखे घाककै जो बाध होहै सो सर्वकर्मस
न्यास ऐसै कहीयत है॥ इसीतैंही अज्ञ के वैल हारापतै
पुरुके है येर वे शूवरा जो नवद्वारपुर खिषे स्थित है सु ति
नम्नु ईहता है व्यापार जे आत्मा खिषे आरोपीत हैं तै तिन्हों के
नौ व्यापारों के तीरस्पव्रहार खिषे जैसें खे घाक कै बाध
सेतिहुं अपरो व्यापार खिषेहु कर्तत्व अर हैहा रहै व्यापा
र खिषे कारयेत्त्व होवै है ईहां कहते हैं नैव कुर्वन्
न कारयन् न करता हितया न करावता होया स्थित हो
ता है ये संबंध है १३ पुरुष को आपर खिषे प्राप्ते लिप्व
य करता तैंव यागमन जैसे स्थित सत्ते न हो होती ऐ
से आत्मा के हुं कर्तत्व अर कारयीत्तत्व स्वगत्ते सोती

हूं सन्यास संत्ति नहीं होता अथवा आकाशादिवेतल मलेन तारहि जैसे वस्तुवृत्ति कर न होन नहीं होवै है कर्तृनाहि ये संसय के दूरकनै निमित्त कहत्ते है श्लो० न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्त्तते १४ परमेश्वर न लोकों के कर्तृत्व अरु कर्म कि न रचता है न कर्मफलसंयोग को स्वभाव तु पुनः प्रवर्त्तता है टी० लोक के क्या देहादिक के कर्तृत्व को प्रभु कहिये आत्मा स्वामी नहीं रचता क्या प्रेरकत्व कर्के को रचिता नहीं होता ये अर्थ है न हू लोक के कर्म घटादिकों को आप रचता है कर्त्ता हूं नहीं होता ये अर्थ है और न हूं कर्म कर्त्ता लोक के तिस तिस फल संबंध को र

चताहै अर्थ जि भोजपेता अर भोक्ता हूं नही होता ये
अर्थ है सो समान है या हे तो लोकों को अनुकरता
करता है ध्यान करते जैसे है चंचल होते जैसे सुधी क्या
ज्ञानी इत्यादि है प्रवृत्ति तें अरई हां हूं कहते है शरीरस्थो
पि कौंतेय न करोति न लिप्यते इस उक्त ते जे रकीं चैत
हूं स्वतः न करावता है ने कर्ता है आत्मा तो कौन तब
करावता है या अर कर्ता है या प्रवृत्ति होता है ऐसे
तहां कहते हैं स्वभावस्तु क्या अज्ञानात्मका दैवी मा
या क्या प्रकृति प्रवृत्ति होती है १५ ननु ईश्वर कारयि
ता है अर जीव कर्ता है ऐसे कहते है येही ईश्वर सा
धक मर्म को करावता है ते सौ तं जे सकी उचानीया

चहताहै अरयेही असाधुकर्मकरावताहैतेसतैंखीस
को अधःनीयाचहताहैं अरस्मृतिहै येअज्ञानीजीवअ
समर्थहि आपकेसुखदुःखचेषे ईश्वरकरकेप्रेरितहु
याजाताहैस्वर्गकोअथवानर्ककोतैसेसतैजीयेप्रकार
केकर्तृत्वअरकारयेतत्वककैंभोक्तृत्वअरमोखयेत
त्वकेकैं पापपुण्यफलकेसंभवतेकैसेकहास्वभाव
प्रवर्तहिताहै औसे नहीकहताहै पर्माथतैं श्लोक नादत्ते
कस्यचितपापंनचैवसुकृतंविभुः अज्ञानेनावृतंज्ञानंते
नमुह्यंतजंतवः १५ नकहताहैकिसीएकके पापकोअ
रनपुण्यईश्वर अज्ञानकरकैंआवृतिहैज्ञानतिसकर को
जीवमोहकोपावतेहैं [illegible] विभुकहीयेपर्मेश्वरकेसी

एकजीवके पापकोअरपुन्यकोनहींकहता पर्मेश्वरतें
जीवके कर्तृत्वके अभावतें अरपर्मेश्वरके कारयितृ
त्वके अभावतें कैसेहैं तब श्रुति स्मृति अरलोकव्य
वहार नहीं कहतेहैं अज्ञानकरकैं क्या आवरणकिएहै
पश्चात् ज्ञानमायारव्य अन्तःतमकरकैं आवरितहै
सोन क्याजीवेश्वरजगत्भेद भ्रमाधिष्ठानभूतस्व
रूपस्वप्रकाशआनंदहानेंस्वरूप अद्वितीयरूप परमार्थि
सत्यस्वरूपतें स्वस्वरूपावरणकरकैं मोहकोपावतेहैं
क्याप्रमातृप्रमाणप्रमेयकर्मकर्तृकरणभोक्तृभो
६ ग्यभोगादिरूपनानाविधसंसाररूप मोहक्यानेंरतैसे
खेषेसोमृगजलभासरूपस्वैहौंपकोपावतेहैं जैसें

कार्य

कहीये जनननम्रील संसारी वस्तुस्वरूप के अरु श्री

अकर्त्ता अभोक्ता परमानंद अरु द्वैतीय आत्मस्वरू

प के अरु भ्रांति नैमित्तिक ये जीवेश्वर आगे हैं

अम प्रतीयमान होया वर्त्तता है मूढों को ते स अव

स्था मूढ प्रत्ययानुचारनी रखे षे हैं परंतु तें स्मृति वा

सों अद्वैत बोधवाक्य प्रगट भूत है ऐसे नहीं होवे १५ वै

तब सर्वों के अनादि अज्ञान कर आवृतत्व तें कैसे सं

सार की निवृत्ति है इसीतें कहते हैं श्लो० ज्ञानेन तु तदज्ञा

नं येषां नाशितमात्मनः तेषामादित्यवज्ज्ञानं प्रकाशय

ति तत्परं ज्ञान करकै सो अज्ञान रजे को का आपका नाशि

त है तिनको का ज्ञान सूर्य जैसे प्रकाश करता है ते स्वपर को

टी० सो आवर्णविक्षेपशक्तिमान अनादि अनिर्वाच्य अ-
नंत अनर्थसमूह का मूल अज्ञान क्या आत्मा प्रत्यक् अविद्या
मायादि नाम एवाच्य जो सो अपना अज्ञान ज्ञान करि कैं क्या
गुरुपदिष्ट वेदांतवाक्यजन्य श्रवण मनन रु निदिध्यासन
परिपाक करि कैं निर्मल अंतःकरणवर्त्ति स्वरूप करि कैं निर्वि-
कल्पक साक्षात्कार करि कैं प्रबोधित तत्त्वंपदार्थ तिन्ह में एक-
रूप ब्रह्मस्वरूप तानें रु अखंडैकरस वस्तुमात्र विषयक
कैं नाश कीत है क्या बाधित है कालत्रय विषे हू असत्
हो असत् है तैसे जान्या है अरु अधिष्ठान चैतन्य मात्रता
को प्राप्ति है प्रत्यक् विषे जैसे रज्जुतत्त्व का ज्ञान करि कैं जि-
ज्ञासु श्रवण मनन नादि साधन संपन्न भगवदनुगृहीत मुमु-

होके रत्तिक्रों के सोज्ञानकर्त्तारूप सूर्यजैसे क्याजैसे
सूर्यआपको उदयमात्रकरकेहीतमकोनिरवृत्तिप्रापत
यत्ति करताहि नतुकिंचितुसहाइकको अपेक्षा करताहि
तैसे ब्रह्मज्ञानहूं प्रबुधसत्वकेपरेरगासेवृत्तिव्याप
कप्रकाशरूपसोआपकोउत्पत्तिमात्रकरकेहीसं
हकारीऔरकोनअपेक्षाकरकैसकार्यअज्ञानको
निवर्तकिरतातियापरकहीयेसत्यज्ञानानंदरूपए
कअद्वैतीयपरमात्मतत्वकोप्रकाशकरताहै प्रत्ये
क्षबिंबमात्रकरकैहीकर्मतारविनाप्रगटकरताहै ईहां ग्रहण
अज्ञानकैआवृत्तिअरज्ञानकैनाशितजैसे

क्या अज्ञान अभावरूप नहीं

अज्ञान के आवरणत्व अरु ज्ञान नाशरूपत्व कर कैं ज्ञाना
भावरूपता रने वृत्त कीया है न अभावरूप र किसी के
आवरणकर्ता हैं अरु न ज्ञानाभाव ज्ञान कर कैं नाश
करीयत है ऐसे के स्वभाव कर कैं नाशरूपत्व तें तातें
मैं अज्ञ हों आपको अरु अन्य को नहीं जानता इत्यादि
कैसा ही कि कैं प्रत्यक्षसिद्ध भावरूप ही है अज्ञान
ऐसे भगवान का मत है इस कारवे स्तारतु अद्वैतरसि
धाविबरहस्य व्या है येषां ऐसे बहुवचन कर कें आलि
यमर दिखाया है तैसे प्रवृत्ती है तिस ब्रह्म को जो जो
देवत्यों के मध्य में जे जानता भया है सो ही सो होता

भयाहै अथ ःस्वोकेमध्यरवेषतैसेमनुष्योकेमध्यरवे
षसोएहीहोतोभयाहै अबहूंजोकैसेनानताहै भस्तहो
सोएहीसिवहोताहैइत्यादिकप्रमुलि यद्वेपव यदापअय
अज्ञानहैतातंद्वैपयततापअयपमाराज्ञानतेंरतेसकीनिवृ
त्तैहेइत्यादिककैंप्रान्तेअनैयमकोदिखावताहै तहाअ
ज्ञानमेंतज्ञावरणद्वैविधहै एकसत्वकाहूअसत्वापादि
कअरजोरभानकाहूअभानापादिक तहांआघपदो
होपरोक्षसाधारणप्रमाणज्ञानमान्नतेंनिवर्तीहोता
है न कात्तिककअनुभीतसंतीहूपवतवरवैवकान्तहैर
त्यादिकम्मकेअन्तूनितै तैसेसत्वंज्ञानमन्ततंभत

ऐसे वाक्यतें परोक्ष ज्ञान तें पक्ष पर्यंसेंत्ति हुं ब्रह्म नहीं एह अपरो
क्षवृत्ति होता ही है हैं। ऐसा एकेंतु मुझ के नहीं भासै है ये
अज्ञान का हेतु ताय अभाना वरणसाक्षात्कारवृत्ति ही वि
वृत्ति होता ही है अरु सो साक्षात्कार वेदांत वाक्यन
कैं ही उत्पत्ति होता है निर्विकल्पक स्यारिक अद्वैत
रसिक के अनुसंधान करबे योग्य है इति १६ ज्ञानक
कैं परमात्मतत्वप्रकाशू सेंत्ति श्लो॰ तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परा
यणाः गछंत्यपुनरावृत्तीं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः १७ जे सर्वब है बुधे
जे ज्ञानी अरु तदात्मा हैं तन्निष्ठ हैं तत्परायण है ज्ञानकर्कें निर्धूत
हैं होषपत्ने ज्ञानी कें ऐसे पुरुष अपुनरावृत्ति को पावते हैं ॥ टी॰
जे सर्वब कहीये ज्ञानक कैं प्रकाशित परमात्मतत्व सच्चिदानंद

घनखेंबेहीबाह्यसर्वखेषयकेपरित्यागकरकैंसाधनकोपरयाकातें
पर्यवसानकोप्राप्तिहैबुद्धिकहीयेअंतःकरणवृत्तीसाक्षात्कार
लोहलगारजेक्ष्रौकी येकहीयेंतदुपायाः सर्वदातिनेबीरवसमा
रखिभाजीयेअर्थहै सोकहाबोधहैजीवबोध्यहैमलतैसे
सेबोधबोध्यलक्षणभेदहै नहीयेकहतेहैं तदात्मानः सोप
रब्रह्महीहैआत्मारजेक्ष्रौंका तैसेबोधबोध्यभावस्वरूपकर्के
है मायाखेलसितैंनवास्तवभेदसोयखेरोधीहै येभावहै ननु
तदात्मानः ऐसाखेंबूषणव्यर्थहै अखेदत्तव्यावर्तकहैतिसरूप
करकेखेदनखेविशेषणता असत्यवस्तुगत्तेककैंतदात्माहैं ऐसेके
सेत्तैसाकीव्यवृत्तिहै इतीचेतन इतरआत्मत्वकीव्यावृत्तिखेयेतात्प
र्यतें अमजोहैतिसरूपकरअनात्मभूतदेहादिखेषेआत्मारमेमा
नीहैं ऐसेसंत्तैनहींवेतदात्मा ऐसेकहीयतें अरखिवानुत्तैवृत्य
है

रूप

देहादिकमेंमानहैं इसीतैंयुक्तकहेहैं वितृष्णा ननुकर्मानुष्ठानरूपवेदहै
परसंतैसेंकैसेंमेवत्यदेहादिकमेंमानहैं अरुकैसेंसर्वोराधनेवर्त्तेहैं त
हांकहतेहैं तन्निष्ठा तैसेंहीअतलविषे सर्वकर्मोंकेअनुष्ठानतैंविहप
कोनिवर्त्तिककैहेंतिस्पेतरजेमनोकीवेकहीयेतन्निष्ठा क्यासर्वकर्म
सन्याससंतैंतदेकाविचारपरायणहैं येअर्थहै फलरागसक्तैंकें
सेतन्साधनभूतकर्मकात्यागहैतहांकहतेहैं तत्परायणाः सोअस्ता
तोहैपरमअर्थनकहीयेप्राप्तव्यवस्तु तिनोकावेकहीयेतत्परायणाः क्या
सर्वतैंवैरक्तहैं येअर्थहै ईहांतद्बुद्धयः इसकहणकरकेसाह
त्कारकहा तदात्मानाः इसकरकेअनात्मामेंमानरूपवेदप्रीतगा
वनातैंनिवर्त्ते फलनिदिध्यासनपरपाककहा तन्निष्ठा इसकरकें
सर्वकर्मसन्यासपूर्वकप्रमाणप्रमेयगततिअसंभावनातैंनिवर्त्तेफ
लवहांतदविचारपरवणमननपरपोकरूपकहा तत्परायणाः २

सबकौं वैराग्यकाप्रकर्षकह्यौ ऐसे उत्तरोत्तरका पूर्वपूर्वहेतुत्व
देखवेयोग्यहै येउक्तहैं विबुधा बलात्जेन्होंके ऐसे पावाजाते हैं
अपुनरावृत्तिको क्यापुनर्देहसंबंधाभावरूप मुक्तकोपा
वतेहैं एकबारमुक्तोंके हू पुनर्देहसंबंधकाहेतु नहोवे ऐ
से नहीं कहतेहैं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः ज्ञानकरकैं निर्धूतहैं यथा
समूलउन्मूलनलीनहै पुनर्देहसंबंधकारणरूप कल्मषकहि
ये पुण्यपापात्मककर्मजिन्होंके वेकहिये ज्ञाननिर्धूतक
ल्मषः तैसे संतै ज्ञानककै अनादि अज्ञानकी निवृत्तिकरकै
तत्कार्यकर्मकिक्षयसंतेतन्मूलक पुनर्देहग्रहणकैसे हो
वैहै यभावहै १७ देहपाततें ऊर्ध्वविदेहमुक्तिरूपज्ञानफलको
कहिके प्रारब्धकर्मवशातें देहसंतेहू जीवन्मुक्तरूपतैसेज्ञा
नफलकोकहतेहैं श्लो॰ विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणेगवि हस्तिनि
शुनिचैव श्वपाकेच पंडिताः समदर्शिनः १८ विद्याविनयसंपन्नब्रा

सत्वादिगुणकार्यजो छे सर्वे हैं तिन्ह कौं के सत्वादिगुणों अरु तउत्पन्न कैया
संस्कार नं कु कैं
ब्राह्मण विषै गौ विषै हस्ती विषै श्वान विषै चांडाल विषै पंडित
समदर्शी हैं टी० विद्या कहीये वेदार्थ का परिज्ञान अथवा ब्र
ह्मविद्या विनय कहीये निरहंकारत्व अरु अनौद्धत्य ये अर्थ हैं तिन
नें होनाक कैं संपन्न ब्रह्मवेत्ता विषै अरु [illegible] ब्राह्मण विषै सा
त्विक सर्वोत्तम विषै तैसें गौ विषै क्या संस्कार करहीन राज
स [illegible] मध्यम रूप विषै तैसें हस्ती विषै श्वान विषै अरु
श्वपाक [illegible] अत्यंत तामसी सर्वाधम विषै हू सत्वादिगुणो
कर्कैं अरु तउत्पन्न संस्कारों करकैं अस्पृष्ट हीं सम ब्रह्म कौं दे
खबे का है शील कहीये स्वभाव जिन्हों का वे कहीये समदर्शी
पंडित क्या ज्ञानी जैसें गंगा संबंधी जल विषै अरु तडाग विषै
मद्य विषै मूत्र विषै प्रतिबिंबित आदित्य के नहीं उन्हों के गुणों का
संबंध तैसें ब्रह्म के हू चिदाभास सहस्र प्रतिबिंबित [illegible] नहीं उ
पाधिगत गुण दोष संबंध ऐसें जानते हूये सर्वत्र समदृष्टि

तैसे हि खावतेहैं

कर्कैं ही क्यारागा है घकेरा हि त्यक कैं पर्मानेश्का स्फूर्तिक कैं
जीवन्मुक्त को अनुभव करते हैं ये अर्थ है ९९ ननु सार त्वे करगज
सना मि स स्वभाव विघ्न मप्रागी यों खिषे सम न्त वश्अनि धर्म श्रा
स्नक कैं निषेधै हैं तैसे तिसका अन्नगमी वहै ऐसे करिके कर्कैं
गोत्तम स्मर्तीकत्ती है समखे घ मोंतां इ खिघ्न समन्तातें पूजाने
इति समखे घर्मेतांई ये चतुर्थी का बहुवचन है अरखेषमसम
ऐसे द्वंद्व समास के एकवचन के भाव कर्कैं सप्तमी का एकव
चन है चतुर्वेद पारंगामी अंत्यंत सदाचारयुक्तों का याद ग्राव
स्थाले कारअन्नाहिक दान पूर्वक जो पूजा खे ऋषकैं री ये ति
ससमान औरचतुर्वेद पारग सदाचारयुक्ततांइ खेष मुक
तोपि रतिसकी अपेक्षा कर्कैं न्यूनपूजा प्रकार की येसे ति तैसे
ऐसे जैसे ब्राह्मणों विषे कहा है। तैसे पुरुष को पाय के तैसी पूजा के नकी
येसंते॥ तैसे अल्प वेद अनाचार को जैसे पूजा कही है सो चतुर्वेद ब्राह्मण

अल्पवरअनाचारयुक्तोंकायादअहीन साधनपूजाप्रकारक
रीयेहै तादअतोंईहीक्याअसमपूर्वोक्तवेदपारगअर सदा
चारवानआलस्योंकीअपेक्षाकरकेहीनतोंईतोदआहीनपू
जाअर्थेकेविषे [illegible] मुख्यपूजाकेअसमप्रकारकीयेस
तेक्याउत्तमकेहीनतोकरकेअरहीनकेउत्तमताकरकेपू
जातेतेसपूजाकर्त्ताकाअन्नअभोज्यहै॥अरपूजाकर्त्ताअस
म्यक ज्ञानरवेदूषको कर्त्ताहीयाधनअरधर्मतेंहीनहोताहैयेओ
रदोषहै यथोक्तं विनः श्वगृहसंन्यासीयोंकेपाककेअभावतेंअर
धनकेअभावतेंअभोजअन्नत्वअरधनहीनत्वस्वतहहींवि
रूप यमानहै तथापिधर्महीनहोयत्तिज्ञाकहोवैहैअभोजअने
त्वअरअपवित्रत्वकरकैपापोंसंसलिलहृदयेंतेयोधनोंकानपहै
॥ त

धनहै ऐसे सो तपो धनहा न रूप इष्ट का होवै है ऐसे संतो के दो
सामृह न्मृ रिपै है तजीवन मुक्त है ऐसे इष्ट को प्राप्त संतो हर कर
ते है श्लो॰ इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः। निर्दो
षं हि समं ब्रह्म तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः॥ १९॥ इहां ही तिनो ने स
र्ग जीत्या है तिनो का मन समता विषे स्थित है निर्दोष सम है
ब्रह्म ताते ते ब्रह्म विषे स्थित हैं टी॰ तैः कहीये समदृष्टि पंडतो
ने इहां कहीये जीवन दशा विषे ही जीत्या है क्या जीता है
सर्ग रचीये इस व्युतपत्त करके क्या द्वैत प्रपंच रहै पातीत उलं
घ उलंघन योग्य है ये कहीये के तिनो ने जीत्या है सर्ग तिनो का येषां
साम्ये कहीये सर्व भूत विषे समभाव विषे हुं वर्तमान ब्रह्म के सम
भाव विषे स्थित कहीये निश्चल है मन सो कहीये यस्मात्

नैर्दोषसमक्यासर्वविकारभूत्याकूटस्थ नित्यएकहैअस
ङ्गातेंवेसमहब्रह्मस्नहीविषेस्थितहैं येभावहै दुष्टत्वंनिप्र
पकरसप्रकाशहोताहै अदुष्टकेहेदुष्टसंबंधतेंजैसेगंगोद
ककेमूत्रादिपाततें अथवास्वतःहीहैजैसेमूत्रादिकके ते
हेंदोषवान् श्वपाकादिकोविषेस्थितरविकाकेदोषोंकर
दूषितहोताहैअग्निजैसेविभाव्यमानहैसर्वदोषोंककेंअसं
स्पृष्टहैअग्निआकाशजैसेंअसंगत्वतेंअसंगहैनेपलब्धकर्थे
येपुरुषसूर्यजैसेसर्वलोकोंकाचक्षुरूपहै नहींदूषित
होताचाक्षुषबाह्यदोषोंककें तैसेएकसर्वभूतोंकाअं
तरात्मानहींलिप्तहोतालोकदुःखककेंजातेंबाह्यहैक्या
असंगहैइतिश्रुतेः नपुनःकामादिधर्मवत्ताककेंस्वतः

दोष

दूखेत है कामादिकके अंतःकरणधर्मतिनके प्रवृत्ते स्रतते कायें
रसे घत्वतें ताते निर्दोषब्रह्मरूपसन्यासी जीवन्मुक्त अभोज
अन्नादिक करतु है ये इनकी या आरस्मतें अरु वे दुःखनहस्त
खेषपा है तैसका अन्नभोज है औ सेव्यार भतें पूजातः का
पूजाते औसेम ध्यखेक कहताते धन अरु धर्मतें हीन होता है औ
सें इष्टप्याहे १९ जाते निर्दोषि सम है ब्रह्म ताते तद्रूप आपको
साक्षात्कार कर्तोहि यो श्लो० न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्वि
जेत्प्राप्य चाप्रियं स्थिरबुद्धिरसंमूढो ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थि
तः २० न प्रसन्न होवै प्रियको पायके न उद्वेग को पावै अप्रिय
को पायके स्थिरबुद्धि असंमूढ औ सब्रिसा वेत ब्रह्म विषै
स्थित है टी० दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः

ॐ

ऐसेंईहांपूर्वार्धविषैंख्यातहै जीवन्मुक्तोंकोजे स्वाभाविकलक्ष
णहैसोंहीमुमुक्षुहोनेप्रयत्नपूर्वकअनुष्टेयहैं ऐसेंकहतेहैंतो
इसलियैप्रत्ययहैंक्याविधस्वरूपताकरमुमुक्षुप्रतिउपदेशहैंअ
र्द्धितीयश्लोकमैंअर्जुनकेमूलप्रश्नरूपकेअनुवादतेंअनन्तरैकप्रथा
प्रयपदार्थकिप्राप्तिअप्राप्तिनैंतरस्नेमेतकहर्षविषादहोतेहैं
येअर्थहै अबअर्द्धितीयश्लोककरस्थितिहीकोविवरणकरतेहैं
स्थिरबुद्धिः स्थिरकहीयेनिश्चलहैसन्यासपूर्वकवेदांत
वाक्यकेपरपाककरिकैं सर्वसंज्ञायशून्यत्वककेनिःसंश
यनिश्चितहैब्रह्मविषैबुद्धिजेसकीसोकहीयेस्थिर
बुद्धि येयालक्षहै श्रवणमननकाफलजोसनेयेअर्थहै
एतावताकैसर्वअसंभावनाशून्यत्वसंतिहरविपरीतभावना

नंहो

नअंतराले मुक्त

करप्रतिबंधतें साक्षात्कार उदय होता है इसीतें रमेरह ध्यासनकों
कहते हैं असंमूढः रमेरह ध्यासनके विजातीय प्रत्यय करि अं
तरित सजातीय प्रत्यय के प्रवाह के परपाक कर्के विप्रीत भा
वनारूप मोह कर्के रहित है तापाछे सर्व प्रतिबंध के अप
गमतें अत्यंत रवित है क्या ब्रह्म का साक्षात्कारवानु है तिसतें स
माधि के परपाक कर्के नेही षसम ब्रह्म ही विषे स्थित है
नअन्यत्र ऐसे अत्यंत विषे स्थित जीवन्मुक्त स्थित प्रज्ञ है
ये अर्थ है एतादृशा के द्वैत दर्शन के अभावतें प्रहर्षोद्वेग
नहीं होते हैं साधकनें तु द्वैत दर्शन विद्यमान संती हर्ष विषय
द्वेष दर्शनादिक कर्के प्रहर्ष विषाद त्याज्य है ये अर्थ प्राप
है २०

ऐसे स्वरूप का अनुभव पहिलें कहत है अनुभवसें रीते चल रूप है
ननु बाह्य विषय प्रीति के अनेक जन्मों विषे अनुभूतत्व के कैं
अरति प्रबलत्वतें रति स्व विषे आसक्त कर चित्त के कैसें दृष्ट सु
खविषु खरहित अलौकिक आनंद विषे स्थितता होवै है पै स्वा
नंद रूपत्वतें इस ही चेतन्न रतें सें आनंद के अननुभूत चल
रूप करके चित्तस्थित हेतुत्व के अभावतें सो कहा है वातें
कर विषे प्रवृत्ति तें आनंद हूं सा हास्य प्रमाता कवैं आविर्भाई
तो है सो आनंद दृष्टानंद के अभिलाष को मंद करवे तो ईस जो
मर्थ नहीं इस तें तहां कहत है श्लो० बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा
विंदत्यात्मनि यत्सुखं स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयम
श्नुते २१ बाह्यस्पर्शों विषे असक्त है आत्मा जिसका ऐसो
साधु पुरुष पावता है आपविषे जो सत्सुख को सो ब्रह्मयो

गमुक्तात्माअक्षयसुखकोपावताहै ॥ इहलोककैंस्पर्शी
करीयेसोकहीयेंस्पर्शक्याशब्दादिकवेबाह्यरूपेंआनाहैं
मेंधर्मत्विनेंरतिकोरवेषेअसक्तात्माकहीयेअनासक्त
चित्तहोयाक्यानेंघमाकीशून्यताककैंविरक्तहूयाआ
त्मनिकहीयेअंतःकरणविषेहीबाह्यविषयनेपेंह
जोउपशमात्मकसुखहैतिसकोपावताहैतैंमलिस
त्ववत्तिकर्के सोकहाहैभारतविषे जोकामसुखहैलो
कविषेअरजोस्वर्गादिकमहत्तसुखहैयेसर्वसुख
तृष्णाक्षयसुखकीषोडषीकलाकोनहींपावतेइति
श्रुपवांश्रुत्पणात्मात्वेयहापेविषेजोसुखहैस्वरूपभू
तसकुप्रत्येकै ॥ अतएवभूयमानंबाह्यविषयासक्तस्य
आत्मानेकहीये

प्रतिबंधतें अत्यंतमानसोंही सुखरत्तेसकें अभावतें पा
इयै है। न केवलत्वंपदार्थसुखहीकौ पावताहै किंतुतत्प
दार्थसाथएकताके अनुभवककैं पूर्णसुखकौ हू पाव
ताहै ये कहतेहैं सोतद्याककैं अरूपपुरुषप्रत्यत्वेषकया
परमात्माविषे जो योगहै वयासमाधिहै तातेंसककैं युक्त
है वयातें सर्वविषे व्यापृत है आत्मा कहीये अंतःकरण
ताजेसका सो कहीये अत्ययोगयुक्तात्मा अथवा अत्य
कहीये तत्पदार्थविषे योग कहीये वाक्यार्थानुभवरू
पसमाधिककैं युक्त कहीये एकत्वकौ प्राप्त है आत्मा
कहीये त्वंपदार्थस्वरूप जिसका सो कहीये अत्ययो

सुख

गयुक्तात्मा अक्षय कहिये अनंत सुख स्वरूपभूतको
पावता है सुखानुभवरूप है सर्वदा होता है यै अभिप्राय है।
रनै त्याहूं वस्तु विषे अरवे घारनै वर्ते अभिप्राय करकै घा
त्वार्य का योग अपचार है कहै क्या पावता है ऐसा कपन
उपचार मात्र है तातें आत्मा विषे अक्षय सुखानुभवा
पी होया ब्रह्म के रूप महान की ब्धुनी बाह्य विषय उ
प्रीति तें इन्द्रों को लै वर्ते करे ऐते तनै करकै ही भ्रमन विषे
स्थित होता है यै अभिप्राय है २१ न तु बाह्य विषय प्री
तकी लै वर्ते सं ते आपविषे अक्षय सुखका अनुभ
व होता है अरते सुख के अनुभव सां तौ तिसके प्र

साहतें आदि [illegible] ही बाह्यविषयप्रीतकी निवृत्ति होती है
ऐसे इतरेतर आश्रय प्रवृत्ति ए कहैं न ऐसे होता ये आगु का
कर कै विषय पर विषै दोष दृष्टि कै अभ्यास कर कै ही सो प्री
२१ ति निवृत्ति होवै है ऐसे प्रकार को कहते हैं श्लो० ये हि संस्पर्श
जा भोगा दुःखयोनय एव ते आद्यंतवंतः कौंतेय न तेषु र
मते बुधः २२ जे संस्पर्शज भोग हैं वे दुःखयोन ही हैं। आ
दि अंतवान् हैं हे कौंतेय रति कां विषै बुध नहीं रमता॥ यहि
कहीये जे सहित ते जे संस्पर्शज कहीये विषयोंद्रियसंबं
धतें उत्पन्न भोग हैं क्या हुक्ष सुख लव के अनुभव हैं
इन लोक विषै अरु परलोक विषै राग द्वेषादि को क
कै व्याप्तत्व कर कै दुःखयोन ही हैं वे सर्वही। क्या उल

लोकपर्यंतदुःखकाहेतुहैं सोकहाहै [illegible]पुराणविषे
जेतनेकर्त्ताहैं येजीवप्रात्ममनकेसंबंधोकोलेतने
स्नकेहृदयविषेघडहोतेहैंश्लोककेकीलकरते ईश्वा
दृश्राहैं नहींस्थिर क्याश्राधेतवानहैं श्रारहैकहीये
विषयेंद्रियसंयोग श्रंतकहीयेतद्वियोगहीएहहै
तोरवेद्यमानहैंजेत्तांकेवेंपूर्वापरविषेश्रसत्वतेंम
ध्यविषेस्वप्नजैसेश्राविर्भूतिहैं इसकोकहैं इसीतेंरमै
ध्याभूतहैं सोकह्योहैगोरपादाचार्यैनि श्रादिश्र
रुंतरविषेजोश्रसत्रूपहै मध्यविषेहैसोतैसेही
तौहैइतेजातेंश्रसैहै तातेंरतिन्होंविषे बुधकहीये

खेवेकोनहीरमता प्रतिकूलवेदनीयत्वतें कैसा खे
वेकापरिज्ञानहै कि नारिविषयस्वरूप जैसेनेनतु
अखेवेकीकैसेहै अरहैपात्रकेतुल्यहै खे पक्षयक
खेज्ञानसोअत्यल्प दुःखलेशाककैंहुं उद्वेगकोपा
वताहै जैसे ऊर्णातंतु अतिसुकोमलहै अरहैपात्रवि
षेधारीहोई स्पर्शकिकैं दुःख उत्पत्ति करतीहै नेत्रो
में आगोखेवे तैसेखेवेकीकेहूं मिष्टान्नयुक्त अन्नभो
जनजैसे सर्वहूं भोगसाधनं कालत्रयविषेहूं क्लेशा
युक्तहोवेतें दुःखस्वरूपहै नमूढके क्याबहुविध दुःख
खसहनशीलके पंअयहि तहांपरितामतापसं

लेहूराग का कहा ... ता जीया होता है जैसे कहीये
औसे नेत्रवा ... सुखकके पुत्र अनुका पुरुष है

स्कारदुःखैरेरित्ते भूतवर्तमानभविष्यत्ते कालेपिदुःखा
नुवेधात्वा द्वेपाद्यिकं दुःखत्वं रवेषयसुखस्योक्तं गु
णवृत्तेर्वेरोधाच्चेत्यनेनस्वरूपतोपिदुःखत्वं इत्ते
सूत्र तहां परिणामताप संस्कारवे ही दुःखरते श्री
ककैं ये अर्थ है ईहां इस्य भूतलेहरागविषेयत्तीया
है जैसे देखावते हैं रागकै पुत्रकहीहै सबही सुखका
अनुभव नेत्र हां नहीं रागको पावता रतेस सुखकके दु
खीहत्ते होता है ईमाही प्रथम उद्भूत होया रविषयकीप्रा
पतिकके सुखरूपककै परिणामको पावता है रतेस रोग
के प्रत्ते हलावर्धमानत्वकके दुःखविषयत्वतेरतेस

वेषु २

सुखके चांचल्यमें अनुपयोगी होत्ताहै तातें सो दुःखही है।
इंद्रिनोंके भोगाभ्यासकरिकैं तघ्मारहित्यकरबेको साम
र्थ्य होवैहै ये नहीं कहिबेयोग्य जातें भोगाभ्यासतैं वध
होवैहै रागअरु इंद्रिनोंके कौशल अरु रसभत्ते हु कहतैहै
न कहूं चित्तकामें कामके उपभोगकरिकैं शांति होताहै इ
ति तातें दुःखात्मक रागके परिणाममें तातें विषयसु
ख हु दुःखही है कार्यकारणके अभेदतें ऐसें सिद्ध
भयो परिणामदुःख तैसें सुखके अनुभवकालमें
षेत्तिसके प्रतिकूल दुःखसाधनोंको द्वेष करताहै।
ननहिंसाकरिकैं भूतोंको उपभोग असंभव होताहै इसी
तें भूतोंको हिंसाकरताहै अरु द्वेष होताहै ऐसें सर्व दुः
कहाये

खसाधनमूलकेमत्तहोवैं॥ सोसंकल्पखेदोष जिसीतैं
नेरत्तिनसर्वोंकोकोईएकदूरकरबेकोसमर्थहोताहे इसी
तैंसुखकेअनुभवकालविषेहूं रतिससुखकेपरपंचीप्र
तिहूषकेसर्वदाहीअवस्थितत्वतैं तापदुःखदुःपरहर
हीहे तापकहीवेहेष औसेदुखसाधनोकोदूरकरबेतैं
ईअसमर्थहोयामोहकोपावताहे इसीतैंमोहदुःखता
हूंव्याख्येहै तैसेंकहाहे योगभाष्यकारोंने सर्वकोद्वेष
करकेयुक्तचेतनाचेतनसाधनोंधीनतापकाअनुभव
हे औसेतहांद्वेषजकर्म॥ अपरदुखसाधनोकोप्राप्तमा
नहोयाकायककैवाचाकीमनककैचलताहै क्याअनताहै
तिसतैंअनंतरजिसीकोअनुग्रहअरकैंसीकोरह

४०

साकर्त्ताहै ऐसें औरकें अनहंअरपीडाकर्के धर्माधर्मादिककोसंचयकर्ताहै सोकर्माध्यपलो मन्मरमोहवे ऐसाहोताहै येतापदुःखता कहायेहै तैसेवर्तमानसुखकाअनुभवअपलेंखेनाआकालखेषेसंस्कारकोधारताहै सोसंस्कारसुखकेस्मलकोधारताहै सोसुखस्मर्णरागकोधारताहै सोरागमनवाक्कायकीचेष्टाकोधारताहै सोपुण्यापुण्यकर्मार्थ्ययोंकोधारताहैव आध्यजन्मादिककोधारतेहैं ऐसेसंस्कारकोदुःखताहै ऐसेंतापअरमोहकेहं संस्कारकरहेवे थायहैं ऐसेकालत्रयखेषुहंदुःखपुताल्वतेखेषयसुखदुखहीहैयेकरहकर्के स्वरूपतेंहंदुःखताकोकहतेहैं गुणाववृत्तिविरोधाच्चेति गुणकहीयेसत्वरजतमसुखदुःख

मोहात्मकौं वेपरस्परं विरुद्धस्वभाव हैं तैलवर्तग्रग्नितें जैसे दीपक को पुरुषके भोग सहायकत्वकरिके त्रिगुणात्मक एक कार्यको आरंभकरते हैं तहां एकगुणके प्राधान्यसें तीन्हूनकी गौणभावतैं प्रधानमार्गके व्यपदेश करिकें सात्विक राजस तामस सन्ज्ञा सें त्रिगुणात्मकहू कार्य एकगुणात्मक के कहीयत हैं तहां सुखका उपभोगरूप हूं प्रत्ययं उद्भूत सत्वका पत्ति सत्तैं हूं अनुद्भूत रजस तमः कार्यत्वतैं त्रिगुणात्मक ही है तैसें संतै सुखात्मकत्वविषेदुःखात्मकत्वति सकारनिपक्षय है इसीतें दुःखरूप ही है सर्वविषय वैवे कीकै अरुन पुनः एता दृशहू प्रत्ययस्थिर है जाते कहा है चंचलहै गुणवृत्ते इति अरु तीघ्रपरिणामी रचितक

कैसें मुक्त होहै ननु एक प्र[illegible]से परस्पर विरुद्ध सुख
दुःख मोह [illegible] को एक समय प्राप्त होता है इति चेन्न
उद्भूत [illegible]तों के विरोध के अभावतें समवृत्त के ही गु
णों को एक काल विरोध होता है न विषमवृत्तों को का
होता है जैसे धर्म ज्ञान वैराग्य पर ऐश्वर्य हैं लब्धवृत्ते क
रूप सो वे लब्धवृत्ते कही अधर्म अज्ञान अवैराग्य अ
नैश्वर्य सो साथ विरोध को पावते हैं ननु स्वरूप कैसें अ
सत्तारूपों सा परविरोध पावते हैं प्रधान का प्रधान सा
थ विरोध होता है ननु दुर्बलों साथ पन्याइहै जैसे सत्व र
जतम [illegible] परस्पर प्राधान्यमात्र को एककाल नहीं सह
ते न कोई स्वरूप के सद्भाव को नहीं सहते इसका परलो

कातेजो

सत्तापसंस्कारदुःखोंविषे[illegible]हेषमोहइन्होंकासमुका
लेसन्नावकहाहे प्रसुप्ततनुविछिन्नउदाररूपककैंकैंग्नी
कीचारअवस्थाहे सोदृष्टिखावतेहे अविद्याअस्मितारागा
द्वेषअभिनिवेशायेपांचक्लेषहे अविद्याप्रसुप्त तनु[illegible]विछि[illegible] प
नउदाररूपचारोंकाहेतुहे अनित्यअशुचदुःखअनात्म
इन्होंविषेनित्यशुचसुखआत्मबुद्धिअविद्याकहायेहे
दृकदर्शनिकीशक्तिकीजोएकात्मकैंताहेसोअस्मिताहे
॥सुखकेअनुकूलवर्तीरागाकहायतहे॥दुःखकाअनु
षंगीद्वेषकहायेहे अपनेरसविषेप्रवाहकबुद्धिमान
केहूंमूर्खोजैसेआरूढअभिनिवेशाकहायेहे॥तेप्रति
प्रसवहेयाः सूक्ष्माः ध्यानहेयास्तद्वृत्तयः क्लेशमूलः कर्माशयो
दृष्टादृष्टजन्मवेदनीयः सतिमूलेतद्विपाकोजात्यायुर्भोगाः

इति पातंजला रनि[illegible]णारो तहां नरत्ति स्त्र चेषे सो बुद्धि रवेव
यै [illegible] यथाज्ञान [illegible] वियायपयर्यि हैं इत्ति सब्म्र खेध्याको
खे[illegible] संसारकालमे ह्वानरूप है तहां अत्रैयावीषे
[illegible] बुद्धि जैसे स्थिर है पथवी स्थिर रहै है स हित चं
[illegible] कोऊं के आकाशारी स्थिर रहैं अमर रहैं स्वर्गवासी
इति अप्पु च कहाये परमस्थान का स्थान जो शरीर है तैसे
खिषप्पु च बुद्धि जैसे नौतन [illegible] चेडमा की रेखा जैसे महा सं
दर कैं न्यांये कन्या है मधुर अमृत युक्त अंगो करत नि र्म
त है अरु चेडमंडल को फोर कर निकसी है मानो ऐसे जानी
यत है नीलोत्पलपत्र जैसे विशाल है नेत्र जैसे के हाव है मध्य
खिषे जे क्रोके ऐसे लोचनों कर जीव लोक को आनंद उत्प

रत्तिकरत्तीहै मानो स्थानतें बीजुतें तोभी धानतें मस्युतें अरु
आरंभि अपवित्र अशुचितें शरीरको पवित्र शुचि कहते हैं ऐसा
व्यासो कहै इस करके अपुण्यरूपविषै पुण्यप्रत्यय अनर्थ
रूपविषै अर्थप्रत्यय कह्यो है दुःखविषै सुखको ख्यान
कह्यो है परिणामतापसंस्कार दुःखोंकर के अरु गुणवृत्ति
सोंविरोधते ॥ दुःखही है सब विवेकी के इत्यादिक करके
॥ अनात्मविषै आत्मख्यान है जैसे शरीरविषै मनुष्य है
इत्यादिक ये हैं अविद्या सब क्लेशों का मूलभूत है सोतें
मन्त्रै सब कहीयत है बुद्धिसे अरु पुरुषका अ मे हारमे मान
अस्मितारूप मोह कहीये है साधन रहित मुजके है

ऐसे

सुखसमूहहोवै याविषै पर्य्याय विशेषराग कहीयेहै सोही
महामोह कहीयतहै दुःखसाधनविद्यमान संतेहूं कछु एक
दुःखभुजकेमतहोवै यहखविपर्य्यायविशेषद्वेषहै सोतामि
स्त्र कहीयतहै आयाके अभाव संतेहूं इन शरीर इन्द्रिया
दिक अनित्यरूपोंकके भुज कारवियोग मत होवै स्वाभावि
क सर्वप्राणियोंका साधारण मरणरूपरवि पर्य्यायवि
शेष अभिनिवेश है सो अंधतामिस्र कहीयेहै सो कहा
है पुराणोंविषै तम मोह महामोह तामिस्र अंधतामिस्र
ये अविद्यापंचपर्वा प्रगट भई है महात्माते अस्ये के
श्रीचार अवस्था होतीहै तहां अस्ताके अनुत्पत्तिते

ऐसे तनुरूप करकर्या बीजरूप
करस्थितहैं इसीतें १

अप्रगटरूपकरजोअवस्थानहैसोउप्तावस्थाकहीयेहै
अरप्रगटहूयेकेहूसहकारीकेअलाभतेजोकार्यकाअ
जननहैसोतनुअवस्थाकहीयेहैअरप्रगटहोकरउत्पत्ती
कीयाहैकार्यजिसनेतिसकेहूंकेसीएकबलीकेवै
जोअरभिभवहैसोविछिन्नावस्थाकहीयेहैअरप्रगटहै
स्वरूपजिसकाअरपाईहैसहकारीकींसंपदाजिसने स्वरूपा
ऐसेकेप्रतिबंधरहितपणेकरकेजोस्वकार्यकर्त्तृत्वहैसोउ
दारावस्थाकहीयेहैएतादृशअवस्थाचतुष्टयकेकैपु
क्लिष्टजोअस्मितादिकचारतेपर्य्यायरूपकूंप्राप्तहै
तिन्होंकाअविद्याहीसामान्यरूपाहोनेतेहैक्योंप्रसव
भूमहैसकलोंकेहीविपर्य्ययरूपत्वतेंतिसकरकेअवि
द्याकीनिवृत्तिकरकेहीनिवृत्तिहैयेअर्थहैवैकल्प्याप्रसु

ध्रुवकहीयेजैसेप्रकृततत्वविषेलीनपदार्थकिअवस्था तिनुकही
येंप्रकृतिपदहीकीभावनाकरैसूक्ष्मकरचेहूये जैसेयोगियोंके
हैं तातेंएहदोनोसूक्ष्महीहैं वेप्रतिप्रसवेनकहीयेमनकेनि
रोधककैंहीं क्यातेबीजसमाधिककैरूपहैं अरतैसूक्ष्मा
वर्त्तीहैं अरउन्नोकाकार्यभिन्नस्थूलभूततत्वविषेंछीनअरउहारहै
विरोधीनकहीयेविषेरकोपायपायककैंतीसरतीसस्वरूपके
कैंपुनः प्रादुरभावकोपावैंगे जैसेरागकालविषेक्रोधरवैही
नहोयाहैतेंहीप्रादुरभावकोप्राप्तहैं सेखेरघीनकहीयतहैं
।।जैसेएकस्त्रीविषेचैत्रनामापुरुषरागकोप्राप्तहैनओ
रस्त्रीयांविषेखेरक्तहै क्याएकस्त्रीविषेरागलक्षवर्त्तेहै
औरांविषेसामान्येवृत्तिनवर्त्तीहै इससेहेतुतेंसोतनुवरुवेरघीन

कहीयतहै जबरयोगयोरवेलखावत्तेवक्लेशहोतेहैं तबस
वेप्रकारप्राउरभूतहयेउदारकहीयतहै एहउभयसहीभरते
स्थूलत्वतैप्रभूसत्वमयभगावतध्यानककैत्याज्यहैंनमन
केनिरोधकोन्मुपेहाकरतेहैं निरोधककैत्याज्यतोसहज
हीहै तैसपरेरेताभत्तापसेरकारदुःखोविषमनुपतनु
योरध्यानरूपककैसर्वक्लेशसर्वकालविषेत्यजितहैं॥
उदारतानुकहाचितर्कैसीकेहोत्तहैं येरवेशेषहे ये
बाधतालहराउःखकोउत्पत्तेकरत्तहयेक्लेशास्वा
चीहोतेहैं जातेंधर्माधर्मारव्यकर्माशयक्लेशमूलकोहैहैं
॥मूल॥ क्लेशमूलःकर्माशयोदृष्टादृष्टजन्मवेदनीयः॥ क्लेशमूलक्लेशकैरसंस्तैलीसकर्माशय क्लारखेपाककही
येफलजन्मआयुभोगहोत्तहैं सोकर्माशयइनलोकपर

लोकखिषेस्वखेषप्रपंचकात्वककैहसा हस्वजन्मरूपजो
रा बेयोगयहे औसेकेसकी संताप घटी येजैसे सनिरंतर
वर्त्तीहै इसानेये सुंदरकहाहै येसंस्वगूजाभोगाकुस्व
यानपूर्वते अर्थितवंत हते उः स्वयोनैत्व परिणाममात्रहिको
ककै अस्तुख्यवृत्तिकेखेदोधतेहैं अदृश्याघातचत्वगुराव
सेकेचलत्वते औसीयोगामतत्विषेव्याख्याहै औपरनेषतो
है कौतुअनाहिभावरूतसअज्ञानमेंयें अवद्यों अहंकारध
मरिवषमध्यासअस्मैनोकहीयेहै याहेषत्अमेलेवतु
लधृतिसेयेरूपहै अविद्यामूलत्वतेसर्वहू अविद्यात्मक
त्वात्रिमिथ्याभूतहै रज्जुसुयोगाध्यासजैसैस मिथ्यात्व

सो रत्तिहं डु:खयोनि हैं और स्वप्नादिकन रूप सह मात्र त्वेक कैं
आद्यंतवान् हैं इसीतें बुद्धिमान अध्येपनके सा हात्का
रक कैं निवर्त्ति भाग्य ह यातें कोई विषे न ही रमता यथा
मृगतृष्णा स्वरूप ज्ञानवान् जे सो हो जल लेने नितव
हे प्रवर्त्ते होता क्या संसार सुख को गंधमात्र है नहीं
ऐसे जान करिकैं रत्ते सत्तें सर्वेंद्रियों को निवर्त्ति करें येथा
यहै २२ सर्वानर्थप्राप्तिका हेतु अविवाद है ये पञ्चयो मार्ग अति
को प्रतिपक्ष हो कैं स्वरूप हो पंबडे यत्न करिकैं मुमुक्षुने लेवा त्यो
यहै इसीत्तें यत्नाधिकाके कारण निरन्तर पुनः कहत्ते हैं
श्लो० त्याक्त्रोक्ती है वपः सोऽहं प्रकर्णादी रखवैमो हरणत्र

॥ सविकारकहाविसंयोगाख्य
विषयाभकाल

कामक्रोधोद्भवं वेगं सयुक्तः स सुखी नरः २२ समर्थ होत्ता है जो
इहां ही सहिवे ताइ शरीर के विमोक्षण ते पूर्व काम क्रोध ते उ
त्पन्न वेग को सहि सकै है सो सुखी नर है। आत्मा के अनुकूल
रूप जो सुखहेतु है ये दृश्यमान संत्ति पृथ्यमान संत्ति अथवा
वाम्भरी मान संत्ति स्त्री को गुणानुसंधान के अभ्यास कर के
जो रत्तरूप अभिलाषा है क्या तृष्णा है क्या लोभ है सो स्त्री पुरु
ष के परस्पर चित्त के विशेष अभिलाष अनुरत्ति नीरूढ काम
शास्त्र के कुलूपेत है इस अर्थ में प्रायक कै काम क्रोधास्तथा
लोभा यो सो इहां धनतृष्णा लोभ कहा है और स्त्री व्यत्ति कर
तृष्णा काम कहा है इसी ते काम लोभ पृथक कहे है ईहां तृष्णा
के सामान्य अर्थ में प्रायक कै काम श्रुष्ट कहा है इसी ते लोभ

रूपके नहीं कहा ऐसे आत्मा के प्रतिकूलरूप दुःख हेतु हैं रूपमा
न से तिसे रूप मानसं तें अथवा समर्थमान सें तिसे तिसके दोषा
नुसंधान अभ्यास करकै जो प्रज्वलना ता के दोष से वा मन्यु
है सो क्रोध कहीयत है तिन दोनो की उत्कटावस्था लोकवे
द के विरोध का जो प्रतिसंधानु है तिसकी प्रतिबंध कर्ता
करकै प्रवृत्ति के सन्मुख वर्तनरूप नदी वेग के साम्य करकै वेग
ऐसे कहीयतु है जैसे नदी का वेग वर्षाकाल विषे अति
प्रबलता करकै लोकवेद विरोध के प्रतिसंधान करकै न
चहते हैं ये पुरुष को हूं खैंच करि विषम गेड़ा पक कै डुबावता गर्त
है और अधः को पात प्राप्त करता है तैसे काम क्रोध का वेग है
विषयार सें ध्यान के अभ्यास करकै वर्षाकाल स्थानी अति
चैहं और

प्रबलक कैलोकवेस्वविरोधके प्रतिसंधान कवैनेचहते
ह्यपुरुषपलो हं खेप्राप्तविषेरगोडायक कै संसारस
मुद्रखेवडे डुबावताहै अरु अधः कही येमहानकोकोप्रा
पकताहै ऐसे कापद प्रयोग ककै जनायाहे येअर्थ
कैनप्रयुक्तो यंइसप्रसंगकाविवर्णहूं कयो रतेसएतो
म ह्याकोकोधो जववेम अंतः करणप्रहो न रूपस्थानें
खेदरहिके अनेक बाह्यखेकाद्रलिंगको शूंदारखेमो "
हरणपर्यंत अनेक नैसेनोकेव घ्रातैसुवहासंभाव्यमान
तकके खेपवासकेअयोग्यहे अरु अंतः उत्पन्न मात्रहूं द
सकोएहा कहीये बहिरं डेयव्यापारहूपपातपातानते
पूर्वहीजोयतीक्याधीररत्ते सेंशीलजेसेन हंविमकोरवे

काश्रुरादत्यागपर्यंत इनकूं विसाहकरा
चिंतनकरे

= निवृत्तिकोपाय कहै हैं॥

बपरावेष हाषसत्रोन अभ्यासतें उत्पन्न वशीकार संज्ञक वैरा
ग्य कहै हैं सो तु कहा परंतु सके अंतरूप कार्य कों संपादन
करकै अनर्थ को कारक वैसे तां ईश्वर कों तें कहिये जो समर्थ होता है
सो ही योगी है सो ही सुखी व रहै पुरुषार्थ कों संपादन तें
तिसतें अन्य तु अतादर नैउभय ये मैथुनादिक पशुधर्मन
मैं विषे रत त्वचक कैं मनुष्याकार पशु ही है ऐसा वही है।
ऐसे ... सो हम पर्यंत ईहां और ख्यान है जैसे भर
रातें रुधिर विलाप करती पुत्रतीपोकुं कैं आलेंगमान रुया
हं अरु पुत्रादि करके हुमान होया हु प्राणशून्य त्वतें काम
क्रोध के वेग को सहता है तैसे मरणतें पूर्व हु क्या जीवता हु
इति और कर करु से अर्थ कों दिखावता होया तिसको इ पता है॥

इति क्रोधकर कह्या अर्थ काम क्रोध की अनुत्पत्ति को जनावता है अरु इहां काम
को सहक वेग को सहे [illegible] को नहीं [illegible]
या है जो सहता है सो [illegible] इहां पर [illegible] मरण जैसे
जीव [illegible] के काम क्रोध के अनुत्पत्ति मात्र को कहते बेही
सो [illegible] ता है जैसे कोई [illegible] जीने प्राण गये संते जैसे
[illegible] दुःख को नहीं जाणता तैसे जे प्राण युक्त हु होवे
सो [illegible] वल्या [illegible] विषय [illegible] है इति इहां तु उत्पन्न काम क्रोधों
के सहन [illegible] विषे इतिनों की अनुत्पत्ति मात्र नहीं दृष्टांत इति क्या
है अरु ते हठ कर के रहु काम क्रोध के वेग सहन मात्र करके मो
[illegible] होय पतन है न रु किंतु प्रो० योंऽन्तः सुखोंऽन्तराराम स्तथान्तर
[illegible] यः स योगी ब्रह्म निर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति २४
जो [illegible] सुख है अरु अंतराराम [illegible] से [illegible] हो है
जो सो यो [illegible] न हो [illegible] को प्राप्त होता है

कृपा कार्य की
सिद्धता होती
है ४

श्री

अंतः कहा पै बाह्य विषयनसें पैदा होय ही स्वरूप [illegible]त है सुख
जिसको सो कहा पै अंतः सुखः कया [illegible] ह सुख विषयपनित
सुख करि पद्म न्य है पै अर्थ है। काहैतें बाह्य सुख का अभाव
हैं तहां कहते है अंतराराम: अंतः कहा पै आत्मा ही है सखी है
नतु बाह्य सुख साधन रूप स्त्री या आदि है सखी है आ[illegible]
कहा पै आरमतो क्रीडा जिसकी सो कहा पै अंतरा[illegible]
मः अर्थ बाह्य जो सर्व प्रपंच ताकूं वै सुख साधन करि कै [illegible]
न्य है ये अर्थ है नतु त्यागकीया है सर्व प्रपंच जिसने [illegible]
सें यतीका हृदय गृह ताकूं कैसा है जे कोकला रहित [illegible]
रूप करि के है अरु [illegible] स्वयंप्रकाश है अर्द्ध चढ़ो हय [illegible]न
स्वरूप है अरु मयूर [illegible] है [illegible] है औ रत्न भरे तेगधु

घ्रातो

[illegible] केन की [illegible] धका इत्यादि
कै [illegible] स्मरु [illegible] यत्ते के [illegible] के से बा [illegible]
स्य [illegible] त्सा घनो क कै प्रन्यत्व है तहां कहत्ते है त्यांतर
ज्याते विषयः जैसे अंतः होसु स्व है न बाह्य रविषयों कु कै
ते [illegible] आत्मा विषे ज्याते कहावे र विज्ञानन बाह्य ज्यो क
कै [illegible] सके सो कही पे अंत रज्याते क्या आवा रहित्व नाबाह्य
हि विज्ञान कर्कै रहित्त है पे भाव है एव कार र विज्ञा [illegible]
य विषे ही संबंध को पावता है [illegible] कालर विषे [illegible]
के [illegible] भास के अभाव त्ते [illegible] काल विषे [illegible]
हि भास सत्ते हैं मिथ्यात्व तै [illegible] नही बाह्य र विषयो क

कैरत्तिसकेसुखकोत्याति [illegible] येग्रुथहि जो ऐसा
यथोक्तविभूषणसंपन्नहै सोयोगासमा [illegible]
वीताकहीये ब्रह्मपरमानंदस्वरूपकोकाल्पित [illegible]
पथामस्वरूपत्वकरकैनिवारणको [illegible] कल्पितता [illegible] के
अधिष्ठानात्मकत्वं अविद्यायाआवरणकी निवृत्तिकरकैं मैं
प्राप्तिहोताहै नित्यप्राप्तिकोहीप्राप्तिहोताहै जातेसर्व
दाहीब्रह्मभूतहै नहीं और ब्रह्महीहोयाब्रह्मकोपावता
है इनश्रुतितें अव [illegible] स्थितिकाशंकत्व इहते [illegible] ॥ स्थि
अवस्थितकहीयेसो [illegible] कैअवस्थित [illegible] ब्रह्म
स्वरूपहै ऐसेकाशं [illegible] आचार्य कहताहै २८ मुक्तहेतु

सोधनो कै रवि वर्तकिरते

[illegible] ... ऐसे ये कहत्ते हैं श्लो०

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः छिन्नद्वैधा

यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः २५ पावत्ते हैं ब्रह्मनिर्वा

ण को क्षीणकल्मष ऋषि केसे हैं वे ऋषि छिन्न है द्वैधा जि

न्होंने [illegible] का यतात्मा हैं सर्वभूतों के हित विषै रत्त हैं टी०

ऋषयः नाम विवेकी कौं कहैं क्षीण पाप हैं ऐसे सत्त अंतःकर

ण की शुद्धि कौं ऋषि कहा है संशय वस्तु विवेचन विषै

तै समर्थ संन्यासी ऐसे ब्रह्मचर्य गृहस्थ पाप कौं ... कै छि

न्न द्वैधा कहा है निवर्त्तै है सर्व संशय जिन्हों के ऐसे सत्त

निदिध्यासन के परपाक कौं के संयतात्मा हैं का ...

माहीरविषरकार्य [illegible] तौ [illegible] रवीलिक
कैसर्वभूतनहतिविषरत क्योहित्ता कवे [illegible]
वेत्ता ब्रह्मनिर्वाण को पावते हैं रजेसविषे [illegible]
आत्माहीहोतभयारवैजानतपुरुषके तहांको [illegible] भाह
हैकौनश्लोककहैएकत्वैस्थितपुरुषकेएहप्रभु [illegible] वडु
वचनईहां ऐसोजो हैवत्योकेमध्यविषेरत्याहैकि प्रति
ककैं उक्त आनै यामकेप्रहृष्णीनाश्रुपहि रूपक्ष्यम
उत्पन्नजो कामक्रोधहैत्ते क्रोधकावेगासहिवेपा [illegible] है
येकहाआबद्ध [illegible] नीकी उत्पत्तिकाप्रलैवें [illegible] हीकर्त
यहैयेकहतेहै श्लो० कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां

[illegible] नं रह कामक्रो
[illegible] चित्तजिन्होंने अखवेहित हैं आत्मा
[illegible] यासोयाकचे हैं और स्वम्रस्तुवर्तताहे टी० काम
क्रोधवियोग इतिक्रोकीअनुत्पत्तिनामहे इतिसकरवेयुक्त हैं
वै [illegible] काम क्रोधरवियुक्ता इसीहीतेजीत्या हैचित्तजिन्होंने
[illegible] तेहै क्यासा ह्यात्मेतहै परमात्माजिन्होंने ऐसेजोय
तीहै [illegible] पनशीलसन्यासीहै इतिक्रोके अभितः कहीयेउभ
[illegible] हते क्याजीवतेअस्मृत्यरतेक्रोके ब्रह्मनिर्वाण कहीयमो
[illegible] ताहे नित्यत्वतें नतुमोहहोवैगा साधनके अभावतें
[illegible] पम ईश्वरप्रापित है सर्वभावजिस्नने ऐसेपुरुषके
कर्म [illegible] के अंतःकरणकी [illegible] सर्व
कर्मोका सन्यासहोताहै [illegible]
इपुरुषकेतत्व ज्ञान ऐसो इका साधनउदयहोताहे येकहा

अधुनानुसो [illegible] इहां कहो ध्या
नयोग सम्यक ह भगवान् कान्मतदेव [illegible] वो विस्तार
कर कै कहे है तांई स्व तस्थानीय तीन श्लोक [illegible] का है भग
वान् इन तीन श्लोको का यतेस्थानीय संपूर्ण [illegible] ध्याय है
वैराग्य ते होहू इ पञ्च श्लोको कर कै सो है प्रकट योग [illegible] पत है अ
रु तृतीय श्लोक कर कै मुक्ति सयोग का फल रूप [illegible] ज्ञा
न कहे है इति नो विवेक है श्लो० स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यां
श्चक्षुश्चैवांतरे भ्रुवोः प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यंतर
चारिणौ २७ यतेंद्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः [illegible] ग
तेच्छा [illegible] २८ जो पुरुष बाह्य
स्पर्शों को बाहिर कर कै अरु नेत्रको भ्रुवो के मध्य विषे कर कै

[illegible] कवैं जीतत है॥

[illegible] मन [illegible] सुनमाह रवैषततत्पर है विदाल्ले है इंद्रियन के

कोधलिसके सामुनस्य हास्तुक्त कही है॥ टी० स्पर्श कहीये

अशरहिक बाह्य भावको जे स्पर्शहै के स्पर्श तिनि वारत तहा

कारत्यत: करलाचुततयो कवै अंतः प्रवेश है तेतिनको

उन [illegible] येही कवै परमवैराग्य वक्त्रा कवै तत्र हाकादा

[illegible] नउत्पात्ते कवै येव्यापुर्है जे एह स्पर्शहै कं अंतरहे

वैत [illegible] उपाय सहस्रान कवै हूं बाह्य नहीं होवे हैं स्वभावमे

नाकप्रसंगते रागावरातें अंतह प्रवेश जे बाह्य है तेतिनको

वैराग्य कवै [illegible] है [illegible]

रवित्रापरय कहीहै तीतर स्प कथन कवै वैराग्य को कहे है

[illegible] वैराग्य [illegible]

क्यौं करता कृष्टऐतांभी संबंधको पावता है

के अवनाभ्या[illegible] होवै है चेष्टाकों अवांके [illegible] पेक

रके ऐसे अनुभव है जोत्त मृत्यांत न मालव के अभ्या[illegible] वक वा

रने द्वार ख्यालया मकां वृत्ति होवै है अथ ऐसा रत्न खेषत

प्रमाण विपर्यय विकल्प स्मृति रूप या चार प्रकार

कां वृत्ति होवै है ऐसे पांचों वृत्ति ज्ञान वे योग पै ऐसे सि

धनमीलन करके भुवमध्य देखे नेत्रों का धार[illegible] हो

है तैसे प्राण अपान को सम कहीये ऊर्ध्व [illegible]

खेचर करके नासा के अग्र भाग धार चारी कुंभक के [illegible] करके

इस उपाय करके [illegible] पत्त है इड़ [illegible] न [illegible] बुधे

[illegible] सात [illegible] हि पराइ या कहीये सवनिरवे

रक्तहोयाभुन [illegible] मन [illegible] ॥ [illegible] तेश्रीमयकोष
इसका [illegible] धायेव्याख्यानकीयो एताहृत्रे
जीसन्यास [illegible] सहहोतौंमुक्तहीहेसो ननुरत्तेसकेमोहक
ते [illegible] प्यवाएताहस्मैसोसहेचकहायेजानतहेंमुक्तहो
हे [illegible] सोयोगमुक्तकेयाजानकेमुक्तहोतताहेतहांकहतेहे
श्लो॰ मोक्षकारंयज्ञतपसो सर्वलोकमहेश्वरं सुहृदंस
र्वभूतानांज्ञात्वामांशांतिमृछति २९ यज्ञतपोकामोक्ष
सर्वलोकोकामहेश्वरसर्वभूताकासुहृद ऐसेमोकोंजा
नेकरशांतिकोपावताहे टी॰ सर्व॰ [illegible] लोकाश्रुतपोकाक
लि [illegible] ताद्रूपकके मोक्षकर्ममोगकेतीनेयवापा

मैं हत्त ईश्वर क्या हिरण्यगर्भ रहिके १

लकसचलीकों [illegible] गर्भ रहिको
काहूं रनेयेत्तासर्वप्राणीयोंकों [illegible] पापृतो [illegible] कारकी
नैपि हित्ताककै उपकारदीसर्वकोन्अतर [illegible] को
अविभासकपरपूर्णसच्चिदानंदएकरस [illegible]
रूपसाक्षात्मानाराइसाको जाताकै क्यां आत्मी [illegible]
सा हात्कार कक्कै आरतेकहीयेसर्वसंसारतें उपर
तेरूप मुक्तकोप्राप्तिहोतीहै येअर्थहि तोकोईश्वरता हवा
हकैसैमैमुक्त नहीं इससआज्ञाकाकेरनेसाकरणनेस
तरवेआपरीकहै काउकरूपककैहीं [illegible]
नेमुक्तकोकौरत्त [illegible] भावि है अनेकसाधनो [illegible] भ्या
है येभावहै १

...कैं ... धहरदेकर के ... स्वपकापरदे
...नसर्वाक ... कोसाधनहै॥२९ इतिश्रीभगव
... ... दीपकायां पंचमोध्यायः ५
या ... तान श्लोकोंक के पंच म अध्यायके अंतमैं बजोकहा
है ... कातेनतत्वरव्यानतेरमित षष्ठअध्यायआरंभकरि
यन ... सर्वकर्मत्यागकके योगकोकरायाचहताहै या
... कर्के हैनित्वको आश्रांकाकके कर्मयोगकोस्तुत्व
... हैंश्लोकद्वयकके श्लोक अनाश्रितकर्मफलकार्यकि
मकितेयः ससन्यासीचयोगीचनननि ... नचाक्रियः
...कर्मफलकोंअनाश्रितहयाकार्यकर्मकोजोकर्ताहैसोसन्यासी
हैअरयोगीहैननि ... यहै टी० कर्मफलकोंअ
...र्जुनके आश्रांकाहोवेजो ... हैं तोनि
हीनरूपहयेइसीतेंकर्मयोगकोस्तुतकरकहतेहैं
नेः

अभाव

नाश्रितहोय [illegible] अपेक्षमानहोया क्याफलाभिसंधि
तेरहितहूया कार्यकहीयेकर्तव्यताताके रूपात्मककवैर्व
रहितजोनित्यरूप अग्निहोत्रादिककर्महै तिसकोजोकरतो
है सोकर्मीहोयाहू संन्यासीअरयोगीऐसेस्तुतिकरीयत
है संन्यासकहीयेत्याग चित्तगतिरवहेपको अभाव [illegible] कहीयेयो
ग वेदोनोइसकेविद्यमानहै फलत्यागते अरफल [illegible]
परचित्तविक्षेपके अभावते॥ कर्मफलत्याग अरततध्यानयोग [illegible]
होतोतोवरतिकर्के संन्यासयोगशब्दोकरकेकहीयतेहै [illegible]को॥
मोकोंअपेक्षाकरकेप्राशस्त्यकथननिमित्त अवश्यभावीहैसे
कामकर्मनिष्ठानापुरुषकेमुख्यरूपसंन्यासयो[illegible] नातैसे
निःकामीयथाविनहीतैनिरग्नि क्याअग्निसाध्यक्रियाकात्यागी
नहीहोता अरनअक्रि[illegible]हैकोअग्निनिरपेक्षस्मार्तक्रियाका

क्यों निराग्नि संन्यासी नहीं अक्रिय योगी नहीं

सो

त्यागनिहींहोता तो हम संन्यासी अरु योगी मानन्य है अथवा निर
ग्नि अरु अक्रिय संन्यासी अरु योगी मानबेयोग्य है किंतु साग्नि
अरु सक्रिय निष्काम कर्मानुष्टाई संन्यासी अरु योगी मानबे
योग्य है ऐसे स्तुति करीयत है अपरं तु हैगो अपरं तें अन्य पक्षु
गो अर्थ है इहां ही प्रशंसा लक्षणा कर के निकार के अन्वय की
सिद्धता होती है इहां अक्रिय इस पद कर के ही सर्व कर्म संन्या
सी लक्ष्य विशेष निराग्नि ऐसो पद व्यर्थ होता है इसतें अग्नि शब्द
क के सर्व कर्मों को जनाय कर के निराग्नि ऐसो संन्यासी या अ
रक्रिय शब्द कर के चित्त वृत्ति लखाय कर के अक्रिय ऐसे के
हराक के निरुद्ध चित्त वृत्ति योगी कहीयत है तो सक के न
निरग्नि इस पद क के संन्यासी मानबे योग्य है अरु न वा

७६

स्रूकिपः इसपरकवै योगी औसे मान रोगयोग्य है औसेय
थासे ख्याहोनोकाव्यत रे कहे खब योग्य है औसे संतेह
यनकारहसायकि होते है येऔसे हे खब योगय ह्रते
औसन्यास खिबहं सन्यास इति प्रयोगसंरते ल्लेरमेत भूतगुरस
न्यासको औरऔ योग खिबहं योग इति प्रयोगसंतेल्लेरमेत भूत
गुरायोग है ख्याइबे निमित्त कहते हैं श्लो० यं संन्यासमिति प्रा
योगंतं विद्धि पांडव न ह्यसंन्यस्तसंकल्पो योगी भवति कश्चनः
२ जैसको सन्यास औसे कहते हैं हे पांडव योग तैसको जान॥
निष्पक्षपककै असन्यस्तसंकल्प योगी कोई एकु नही होता टी०
यकहीयें सर्व कर्म अरतत्फल परित्यागको सन्यास औसे कह खेस
हते हैं अरु नी सन्यास ही त्याग करावता है इसातें पुनः षतारे
खितोषरताने लोके घरगतें उठ कर के रमै हाचपको कहते हैं

जैसे कोइ अफलहेत पुरुषको कहे जो एह अफल [illegible] है सो हम संद्रष्टा भावतें ऐसे
मानते हैं अन्य [illegible] काजो [illegible] को [illegible] है [illegible]
[illegible] योग कहीये फलत्याग और कर्तृत्वाभिमान के [illegible]
[illegible] त्याग करके [illegible] काजो अनुष्ठान है, तिसको सन्यास
जानत [illegible] सन्यासको योग जानत ऐसे फलहेतको अफलहेत
ऐसे कहता है वे हम अफलहेत संद्रष्टा हैं ये ऐसे मानते हैं इस सन्या
[illegible] और [illegible] प्रयुज्यमान होया सा द्रष्टा को जनावता है
[illegible] वृत्ति करके [illegible] आपके आपे [illegible] प्रसंग [illegible]
[illegible] कौन सा द्रष्टा है ऐसा सा कहते हैं न जातें असन्यस्त संकल्प
[illegible] अत्यक्तफल संकल्प कोई एक ही योगी होता है अरु त्यक्तस
[illegible] योगी त्यक्तफल संकल्प ही होता है ऐसे फलत्याग साम्यतें
[illegible] चित्तवृत्ति निरोध साम्यतें [illegible] वृत्ति करके
कर्म ही सन्यासी अरु योगी होता है ये अर्थ है सो दिखावते हैं
योग कहीये चित्तवृत्ति निरोध ॥ अभ्यास वैराग्य [illegible] करके ॥२॥

इस प्र[illegible]के[illegible]प्रमाणतो [illegible] के[illegible]को कहते हैं

योगी कहते हैं [illegible] प्रमाण [illegible] सु कोच वि का [illegible]

स्मृति ऐसे वृत्ति पंचविध है तहां प्रत्यक्ष अनुमान आगम उपमा
न अर्थापत्ति अभाव ए षट प्रमाण प्रसिद्ध है ऐसे [illegible] कहते हैं प्रत्य
क्ष अनुमान आगम प्रमाण त्रय योगी कहते हैं अन्य [illegible] बहिर
भावोंके संकोच विकार है ए सब योग्य है इसलिये ही [illegible] के का
रिकोंके मतमें है ए हैं विपर्यय कहिये मिथ्याज्ञान सो [illegible] पंचमें
हैं अरु वे [illegible] अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश हैं [illegible] यत
हैं शब्दज्ञानका अनुपाती वस्तुशून्य विकल्प कहिये है। प्रमा अरु
अप्रमाते [illegible] अरु सत् अर्थ का व्यवहार रूप [illegible]
सत है अरु पुरुषका चैतन्य है इत्यादिक रूप अभावप्रत्ययका
आलंबन रूप वृत्ति निद्रा कहिये है [illegible] के अभाव का प्र
त्यय कारण जो तमोगुण है तिस का आलंबन रूप वृत्ति ही निद्रा है

नेत्र्रतेश्चायत्त्माग [illegible] क्योंकि अतिरतेचारो नेहोनाहि इसी ते
अनेतव [illegible] कहीहै

नतु सो [illegible] कोंको [illegible] नलेइहहै ये अर्थ है अनुभूतवि
षयका असंप्रमोषः स्मृति [illegible] सम्तत्ति कहीये है क्यापूर्वानुभव
संस्कार [illegible] जन्यहै सर्ववृत्तिजन्यत्वतें अं [illegible] विषकथ
नहे [illegible] दिकवृत्तीयोंकाभी पांचोहीके अन्तरभावहै स्वहै
एतादृश सर्वचित्तवृत्तीयोंका निरोधयोग अरु सअदसमाधिको
सोकहीयतहै फलसंकल्पतु रागार्थ्यातंतायेखिषयमे है जो
सकानिरोधमात्र है योगाचत्तीककैयोग [illegible] संन्यास
सोकहीयतहै इसतिनहीं विरोधरः सोकर्मयोगकहीये जीवत्वतेजी
वनपर्यंत अनुष्ठेहै अैसे नहोयेकहतेहैं आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म
कारणमुच्यते योगारूढस्यतस्यैव शमः कारणमुच्यते ३ योगको
चडनाचाहताहो याजोपुरुषहैतिसकेकर्मही कारणकहीयतहै यो
गारूढरहेसोही के शममेंही कारणकहीयतहै टी० योगकहिये

[illegible]

तः करणशुद्धरूपवैराग्य तिसको चढ्या चहता जो पुरुष है तिसकेन तु आरूरु[illegible] मुनके क्या कलत घमात्यागीके कर्मक हाये आसक्तरहित अग्निहोत्रादिकर्म [illegible] रूप [illegible] वर्णाश्र लिक कैं कीया होया कारण है योगके आरोहण [illegible] साधन रूप अनुष्ठे कहीयत है वे ह सुखकर के भजने अरु योगारूढ के क्या योग कहीये अंतः करणशुद्धरूप वैराग्यको प्राप्त्रिवान् तसही पूर्व किसीके होय शम कहीये सर्वकर्म सन्यासही कारण कहीये अनुष्टेय ताके कैं ज्ञानपरपाकताका कारण कहीयतेहै ३ कद योगारूढ होता है सो कहीयत है श्लो० यदा हि नेंद्रियार्थेषु न कर्मस्वनुषज्जते सर्वसंकल्पसंन्यासी योगारूढ[illegible]स्तदोच्यते ४ यदि हिन इंद्रियों विषयों विषै न कर्मविषै लिप्त होता है सर्वसंकल्पसंन्यासी तस्योगारूढ कहीयत है ३०

जब क्या चित्त के समाधान काल विषै इंद्रियार्थ कहीये शब्दादि
कौं विषे अर कर्मों विषे क्या नित्य नैमित्तिक काम्य लौकिक प्र
तिषिद्ध विषे नहीं आसक्त होना क्या तीन कर्मों कि मिथ्यात्व
स्फुर्ति कर्तृत्व आदि के अकर्त्ता अभोक्ता परमानंद अद्वय स्वरू
प के स्फुर्ति के प्रयोजना भाव को जान कर के इन्हो कर्मों क
नहीं अर ये मेरे भोग्य है ऐसो अभिमान विवेक अनुषंग कही
ये तिसको जो नहीं कर्त्ता है कहीये यस्मात् त्यक्त है सर्व संक
ल्प जिसने सो संन्यासी क्या सर्व संकल्पों का ये मैं ने कर्त्तव्य है
इस का फल भोक्तव्य है ऐसो स्वरूप मनो वृत्ति विशेष रूप
सर्व कामों का अर तत्साधन रूप कर्मों का त्यागशील है तब
शब्दादिक कौं विषे अर कर्मों विषे अनुषंग का अभाव ते सर्व के
हेतु रूप संकल्प का योगारोहता प्रतिबंध [illegible] अभाव ते

ऐसे कहीयत है २

योगा कहीये समाधि तिसको जो आरूढ होइ सो कहीये योगा
रूढ ४ जो जब ऐसो योगारूढ होता है तिसने आत्मा ही कै
कै आत्मा उधरत होता है संसार के [illegible] मैं रहते इसी ते ध्यो
० उधरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् आत्मैव ह्यात्म
नो बंधुरात्मैव रिपुरात्मनः ५ उधार करै आत्मा ककै आ
त्मा को न आत्मा को पीडित करै जाते आत्मा ही आत्मा का बं
धु है और आत्मा ही आत्मा का रिपु है २० आत्मनः कहीये
स्वविवेकयुक्त मन कर कै आत्माने कहीये स्वजीव को क्या संसा
र समुद्र विषे तिमगन को तिसते उधार करै क्या ते सतें उर्ध
को प्राप्ति करै स्वविषयसंग के परित्याग करकै योगारूढ तो
को [illegible] थ्य है. ने तु र विषय [illegible] करै आत्मा को अव

साहन करे यथा मंसार समुद्र वे बांधे रहे कहीये जाते
आत्मा ही आत्मा का बंधु है क्या हेतु ते बी है क्या संसार बंधन
ते मोचन को हेतु है नहि और कोई लौकिक बंधु के हेतु स्नेह हेतु
बंध के है बंधु हेतुत्व ते आत्मा ही है नहीं और कोई रिपु क्या
विषय भोगनु कर आश्र हेत कादर विषय बंधनागार प्रवेश ताते को कु
कृपण जो स आत्मनः कहीये आपको बाधि है रिपु के आत्म
पुरपु कत्व ते पुक्त है नि पक्षय करता जो आप ही रिपु है आप
का इति पत्र बको न लहत आत्मा आपको बंधु है अरु को न
लहत आत्मा आपको रिपु है ये कहावत है श्लो० बंधुरात्मात्मा
नस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मै
व शत्रुवत् ६ बंधु है आत्मा ताते सन आत्मा को रक्षी सनें आत्मा आत्मा

हीकर्के रक्षित है अनात्मा का आत्मा शत्रु की नाई विषे वर्त्तता है शत्रु जै
से टी० आत्मा कहीये कार्यकारण [illegible] जिसने जीत्या है
कार्य अपने वश्य कीया है आत्मना कहीये विवेक युक्त मन क
र्के हीं ननु आत्मा है के कैसे तिसका आत्मा कृपा स्वरूप आत्मा
का बंधु है जिसें खलप्रवृत्तिके अभावके कै अपुने हेत करता है
॥ तु पनः अनात्मा के क्या अजीतात्मा के ये ही शत्रुत्व कहीये श
त्रुभाव विषे वर्त्तता है आत्मा शत्रु जैसे क्या शत्रु जैसे सं खलप्रवृत्त
के कै आपके कै अनिष्ट करता है ६ जीतात्मा के स्वचं बंधुत्वको व
र्नन करते हैं श्लो० जितात्मनः प्रशांतस्य परमात्मा समाहितः
शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयो ७ जीतात्मा प्रशां

तौ पुरुषका परमात्मा समाधिहीन है [illegible] तो [illegible] सुखदुःखयोर्विषे
तैसें मानापमानयोर्विषे [illegible] ॥ तौ [illegible] सुखदुःख जो चित्तविषे
हैं [illegible] संतति हैं तैसें मानापमानकी पूजा [illegible] परस्त
[illegible] विषे [illegible] प्रकार होत है तितें शीत उष्ण लोतितें शीतरूप विषेसम
त्वकर्के [illegible] जेतात्मा कहीये पूर्वोक्तरीति जैतें इंद्रियगण तितें कहीये
सर्वत्र [illegible] बुद्धिके रागद्वेष प्रभृत्य पुरुषका परमात्माक
हीये स्वरूपको अज्ञान स्वभाव आत्मा समाहित है कया समाधि
विषे याका [illegible] होता है अथवा परं ऐसा पद [illegible] है जिता
त्मा [illegible] कांही पर कहीये केवल आत्मा समाहित है सो है न
और का [illegible] जेतात्मा [illegible] है ॥ ७ ॥ कछु और
और
१६ [illegible] कहीये पुरुष को
[illegible] करता तैसें [illegible]
परस्में आत्मा [illegible] सो पर

मी कहते हैं श्लो० ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो वि[illegible]
जितेन्द्रियः युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकाञ्चनः ८
ज्ञान रु विज्ञान करि कै तृप्त है आत्मा जिसका [illegible] कूटस्थ है रु जितेन्द्रि
य है और सम है लोष्ठ पाषाण काञ्चन जिसको ऐसा योगी यु
क्त ऐसा कहियतु है ज्ञान कहिये शास्त्रोक्त पदार्थों का उप
देश उपजन्य रु विज्ञान कहिये तिस की अप्रामान्य शंका के निव
करता विषयफलरूप रु विचार करि कै तिस ही तिन पदार्थों
के स्वानुभव करि कै जो अपरोक्ष ही करता है तिन करि कै तृ
प्त कहिये उत्पन्न है अलंप्रत्यय जिसके ऐसा है आत्मा कहिये
रु चित्त जिसका सो कहिये ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा रु कूटस्थ
कहिये विषय के निकट [illegible] तिन करि विकार करि कै शून्य इस ही तें ही

खेसलेतेहैं क्यायारा ... पूर्ण ... पाया ... तैं नैवत्तकरा
थीहै इंद्रियनतैसनेसे ... परखेसतेतें इंद्रियः स्सतेंहै योपा
देयबुद्धि ... कसम्महै ॥ मत्तपेंठ पाषाणकोचनखो
सके ... योगीक्यापरमहंसपरब्राजकहैपरमवैरा
ग्ययुक्त ... युक्तिकहायेयोगारूढ ऐसेकहायतहे ८
स्वहृन्मित्राद्दिकोंखैषसमबुद्धहोतुसवयोगयोंखैषको
हैं येकहतेहैं श्लो० सुहृन्मित्रारयुदासीनमध्यस्थदे
ष्यबंधुषु साधुष्वपिचपापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते ९
सुहृन्मित्रारयुदासीनमध्य ... द्वेषीबंधुइनकोखैषसा
धोकोपापीकोखैषसमबुद्धि ... तीहै सु

हूतकहीयेप्रत्युपकारकोनहेरवककैंपूर्वस्नेहसंबंधरखेता
होजोउपकारकर्त्ताहोवेसोमित्रकहीयेरककेंउपकारकोन
हेरवककेंउपकारकर्त्ताहोवेअरकहीयेस्वाभाविकगृ
उताककेंजोहानकर्त्ताहोवेउदासीनकहीयेरवेवाहकोनै
होनारवेषेउपेक्षकहोवेमध्यस्थकहीयेरवेवाहकोनै
नोरवेषेहूंहितकर्त्ताहोवेद्वेष्यकहीयेआपरवेषेकौं
पकाररजेसनेअसेपुरुषकोअपेक्षाककेंअपकारकर्त्ता
होवेबंधुकहीयेसंबंधूककेंजोउपकारकहोवेरजोरवेषे
साधुकहीयेसाधुककेंविहितकर्मकारीयोरवेषेपापिक
हीयेशास्त्रप्रतिषेधकर्मकारीकोरवेषेहूंवकारनेओरो

विषें जो सर्वविषे समबुद्धि है तथा कौन कैसे कर्मोंको क
रते हैं ऐसे अनुसंधान [illegible] करता है बुद्धि जिसकी तथा सर्वत्र
रहता है ताके विषे [illegible] सो विशिष्यते कहीये सर्वतें उत्कृ
ष्ट होता है [illegible] वा विमुच्यते ऐसा पाठ है ९ ऐसे योगा
रूढको [illegible] फलको कहिके तिसके अंगसहित योगको
कहते हैं योगी इत्यादि कैसे योगी परमो मतः इत्यपेक्षित ऐसे विशे
षको कहते हैं ऐसे उत्तम फलकी प्राप्ति निमित्त श्लो० योगी यु
ञ्जीत सततमात्मानं रहसि स्थितः एकाकी यतचित्तात्मा निरा
शीरपरिग्रहः १० योगी एकांत विषे स्थित होया निरंतर चित्तको
सावधान करे एकाकी होया यतचित्त आत्मा निराशने ऐसा हो
या [illegible] परिग्रह रहित होया योगी कहीये योगारू
ढ आत्माने कहीये चित्तको सतत कहीये निरंतर युञ्जीत कहीये

॥ वेहि प्रभु सकाके परि त्यागकैं एकाग्र [illegible] सेध भूम
काके कै सिमारहित करे रहस्य [illegible] एकांत [illegible] हिकै
खिषे योगप्रवृत्ति बंधरूप उर्जेनार [illegible] ति है [illegible] खे षे तसे २
ते होया एकाकी कहीये त्यागकीया है सब [illegible] परवार ते
सने क्या सन्यासी होया ए चित्त कहीये अंतः [illegible] आत्मा
त्मा कहीये देह ये दोनो संयत कहीये योगप्रवृत्त बंधक व्यापा
रक कै भूष्य है जिसके सो कहीये यतचित्तात्मा जो [illegible]
राशी है क्या वैराग्य की धरउता कैं विगलित हुआ है इसीतें
ही अपरिग्रह है क्या ग्राहक कैं अनुज्ञात हू योगप्रवृत्ति बंध
क परिग्रह कैं शून्य है १० तहां आसन नियम को [illegible] रखा
वते हूये कहते हैं [illegible] कोक के श्लो० शुचौ देशे प्रतिष्ठा
प्य स्थिरमासनमात्मनः नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैलाजि

नकुंआगेतरं ९१ प्रश्नहै आरबिषे आसनके स्थिरत्व आसनकों
धारके कैसा है आसन नअतिआयककैं ऊंचा है नअति
आपकरनीचा है चैल मृग कुशाहे उत्तरोत्तर जिसबिषे
सुचकहीये स्वभाव नअपवासंस्कारत्ते पुथहो कंपाजन
समूहककैरहितता मै नियां गात तरगुहा दिक है आर बिषे
सुमरस्थानन बिषे प्रतिष्ठाप्य कहीयेस्थितककैरस्थिर
कहीये तैसे पल नअतिआयककैं ऊंच नअतिआपककैं नी
च आर चैल अजनकुंश उत्तर चैल कहीये कोमल वस्त्र अजि
नकुंहीये कोमल व्याघ्रादिक चर्म ये दोनांकुं शओतें उत्तर कही
ये उपरतन है जिसबिषे बैठाये इसबिषे सो कहीये आसन
कयाकुंआसय तैसके ऊपरम रह्चमरतैसके ऊपर मृद्र वस्त्र
रूपये अपहि तैसे कहताभया है भगवान् पतंजलि स्थिर

सुखस्वरूप आसन होवै इति आत्मनः इस प्रकारकै और के
आसन की निवृत्ति का है तिस कै उपरि धारणा ध्येय मके
अभाव ककै योग विषे बैठै हैं इति अर्थ ११ औसे आसन
को रची तक कै क्या करै तहां कहते हैं श्लो° तत्रैकाग्रं मनः
कृत्वा यतचित्तेंद्रिय क्रियः उपविश्यासने युंज्याद्योगमा
त्मविशुद्धये १२ तहां मन को एकाग्र ककै जीता है चित्त
और इंद्रियों की क्रिया जिसने आसन विषे बैठ ककै यो
ग को जुडे रचित की शुद्धता निमित्त टी° तत्र कहीये ति स
आसन विषे उपविश्य कहीये बैठकर केहीनतु सोया
होया न खडा होया बैठा होवे संभवते इस न्याशते य
तो कहीये संयत है क्या उपतीहै चित्त की और इंद्रीयों की क्र

याकहीयेचनीरवीसनेंसोत्रैसापनरवीलैं[illegible]यावहै
या योग कहीये समाधि को पुंजात कहीये अभ्यास
करे एकेसा[illegible] आत्मरवे प्रदुधये आत्मा कहीये अं
तःकरण[illegible] सके सर्व विहेपपकृत्यतक कै अरतो स
हितताकरकै [illegible] साहात्कारकीयोगपता नैरमेत दे
खीयत है अह बुद्धि करकै सहक्ष हस्तुरी याते इतिश्रुतिः
कयाकरकै योगको अभ्यास करे सो कहते हैं एकान्त क
हीये राजस तामस बृत्यानां रत्यपूर्व कथित भूमित्रय
के प्रति त्याग करकै एक विषयक धारावाहक अनेक
वृत्ति प्रकर्ष अधिक है सत्वजे सर्व विषय से मन को क
कै क्या धडंमन काकरकै प्रयत्न करकै प्राप्त होइ करकै

एकाग्रता की रहाते निकोन योग कहीये संप्रज्ञात समा
धि को अभ्यास कर सो समाधि में तदाकार मनो वृत्ति प्र
वाह ही निरोध्याभ्यास नाम है सो कहा है तदाकार मनो
वृत्ति का प्रवाह अहं कर्ता विना ध्यानाभ्यास के प्रकर्ष
ते संप्रज्ञात समाधि होत है ये ही अभ्यासी पुरुष के ध्याना
भ्यास के प्रकार को कहता भया है भगवान् योगी युंजी
त सततं युंजा योगमात्मविशुद्धये युक्त आसीत मत्
परः इत्यादि बहुवार १२ तिस योग निमित्त बाह्य आस
न को कहि के कैसे बैठ तहां के सो शरीर धारणा है सो कही
यत है श्लो० समं काय शिरो ग्रीवं धारयन्न चलं स्थिरं संप्रे
क्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन् १२ समान काय
शीर अरु ग्रीवा को अचल स्थिर धारता है या अप्रतोना

कालांद

सागरकोरेखताहोयाअ रसिमत को ने रखवाहोया।। ली°
कोन यहे स्यान अरस्खो रस्खा वायेस
वेवयामूलायेमालुकरमस्तकपायेत समकहीयेरक्त
मारहेत अचलकहीयेकंपरहेत धारयनकहीयेएकत
लेकेअभ्यासककैरवि हेप सहभावाभ्यांगक्या सहजरवेहे
पयुक्तअंगकोकंपाभावले सहोतेसरसे धकतहोयाष्ट्रे
रकहीये पडग्रयत्नहैक कै कछुजोर भी कहते हैं रवक
हीयेरत्र कोयना सागरकोरेखताहोया कालपरवेहेपकेर
हेत्पतोइरवेषप्रवर्त्तेरहेत अनुमालीतनेसहोयायेअ
वहिअंदरहेभ्रूकोन रेखताहोया क्यारहेभ्रू के अंतरात
केअवलोकनकोनकतहोया जानरहेभ्रूका अवलोक
नरोसयोगकाप्रत्तेबंधकहे जैसारहे होयोअभ्यासनवे

देखे देये उन्ना [illegible] सामासि जैंहे १३ कछु और सी कहते हैं
श्लो० अ[illegible]त्मा रवे गति भक्ति [illegible]चार [illegible] : [illegible]
मच्युतो युक्त आसीत मत्पर: १४ ध्रु[illegible]त्मा [illegible] यो रखे गति में
यहो या ब्रह्मचार व्रत विषे स्थित होय [illegible]न को [illegible] मेरी
तमत पर युक्त पूर्वो कआ सन रखे बेस्थित [illegible] टी० प्रशांता
त्मा कहाये सिहान रखे वत्ति स्व पक्ष कर्त्तू क कैं शांत है क्वारा
गादि दोष रहित है आत्मा कहीये अंत: करणस जेस का शूा
स्त्री निर्भय प कोध्ध डता तें रखे गति है भी कंहीये सर्व कर्मो के
परित्याग कै हु का युक्त त्वन्नां का जेस की सो कहीये रखे गति
मीर ब्रह्मचारी यों के व्रत विषे स्थित [illegible] यों का ब्रह्म
चर्यं [illegible] ब्रूपारमे [illegible] नारि कर वे बस्थित हो या मन
को सय मक कै क्या विषया कार वृत्ति कर अन्य क कैं मुज

पर्मेश्वरविषेकया प्रणयाचैतन्यविषे सगुणकवासनेगुरुसवे
षेहै चितनहोसकासो कहीयेमनचित्तः क्यामदृषयकेधारा
वाहकचितवृत्तिमानहोया पुत्रादिकप्रपंचचितमायसक्ति
कैसम्बंधसेहोवैहै तहांकहतेहैं मनपरा मैहीहोंपरमानेहरू
पवृत्ते परमपुरुषापर्सरूपप्रेपयलेसकासोकहीयेमनपरा
तातेंयेआत्माप्रेपहै पुरुषतेंप्रेपहैचित्ततेंप्रेपहैओरसवतेंप्रे
पहैयातेयेआत्माअंतरअंतरहै इसप्रकारतें ऐसेरविषया
कारसर्ववृत्तिकेनिरोधककैं भगवदकाकारहैचित्तवृत्ति
सेइसकीअरसंप्रज्ञातसमाधिककैपुरुषहोयाआसी
तः कयाउपवेशाकरबैठे पयाप्राणनतुअपरणाइष्टी
कवैव्युत्थानकरयेअर्थहि होताहेकोइएकमोगीस्त्री
खिषरकरचेतनतुस्त्रीकोहीपरत्वककैंआराधत्वककैं
वा

ग्रहण करता है और कोई एकता को अथवा स्व को पर
त्व और आराध्यत्व कर्कै ग्रहण करता है परंतु तहां तो नहीं
और ये योगी तो मरछ्यो है और मतपरमै सर्वाराध्यत्व कर्कै
सो कौं ही मानता है औसा भाष्यकारों की व्याख्या है ॥ व्या
ख्यातत्व संतो हूई हां सूत्र के भाष्यकार सायन हं तौ लक्ष्मा गुंज्या
के एक तुला रवैषे आयो है तो संतो हू रवतो सायन है तौ लक्ष्मा
१५ और सं प्रज्ञात समाधि कै आसीन योगी के वेंचा हो
तौ ये कहीयत है ॥ श्लो० युंजन्नेवं सदात्मानं योगी नियतमा है
नसः ॥ शांतिं निर्वाणपरमां मत्संस्थामधिगच्छति १५
योगी औसें आत्मा कौ समाहित करता हैं या नियतमानस
होया शांति रूप निर्वाण परमा मेरी निष्ठा कौ पावता है ॥
टी० औ सें एकोतत्व अवस्थान आदिक पूर्वोक्त नियम कर्कै

आत्मा ॥ अं कहीये मन ॥ बु ॥ बुद्धि मन कहीये [illegible] कैसे
मालिन करता होय ॥ ती ॥ क्यासरैवत्र [illegible] अभ्या
सको ॥ ति ॥ नायकर्मा नियत है क्यारो क्या है मानस कहीये म
न लि[illegible] यवारि तियत है क्यारो केय है मानस कहीये वर्ततिरू
परवि[illegible] से बने सो कहीये नियत मानसः ॥ ऐसा होयया प्र
भूपारते कहीये सर्ववृत्तीयोंकी उपर तद्रूपा कोक्या अस्त्रेत्रा
य भूतरनेको नवैराग्य परमा कहीये तत्वसा हात्कार उत्पत्ति
कारा सकार्यात्वे घाकी निवर्तनेक कैसु हे [illegible] घिसायनी
मनस्संस्था कहीये मेरा स्वरूप परमानंद स्वरूप निष्ठाको
पावनो है न तु संसारिक ईश्वर पल्लनाते विष [illegible] समाधि
केफलीको प्राप्ति होतो है जाते तिन ईश्वर यों कि मो हो पयो
गनी समाधि [illegible] विघ्न रूप है ते सरने सरते सम्प्रसमाधि
फलाको वर्सीकर के कहता भया भगवान् पतंजल ने स

क

साधानुपसर्गाः स्वपा[illegible] ये इति [illegible] नुपसर्गो [illegible] रो सं
गम [illegible] पुनरस्नेहप्रसंगात् इति च अर्थ ये है ता
ईश्वर यो [illegible] समाधि [illegible] विघ्न रूप है [illegible] सिद्धी
है स्थानी यो [illegible] संगम [illegible] है
पुनः अस्नेह [illegible] स्थानी [illegible] देवता [illegible]
कमुन देवत्यो करके आमंत्रित होयो हूं क्या बुलायो [illegible] सो
तेहां संगमा [illegible] क[illegible] कोन [illegible] देवत्यों को ने
रा इस के [illegible] अनिष्ट के [illegible] बारस्ता [illegible]
माराधि को [illegible] जाने हूं कहा पत है आरम [illegible]
नेत्या [illegible] समाधि ये जनायो है पतंजल ने व्यत [illegible] करिवा [illegible]
[illegible] नता अनुगमते सं [illegible] समाधि होता है [illegible]
[illegible] क प्रकार [illegible] संज्ञा [illegible] वसाय [illegible]
[illegible] के प्रज्ञा [illegible] प्रकार के [illegible] स्वरूप के

ध्यायते ध्याताने ये भाव्य का रूप जो रक के सो कहते
संप्रज्ञात समाधि ध्या भावना ध्येय भावना निपल
या कर भाव्य के विषय अंतर के परहार कर के चित्त विषे
पुनः पुनः प्रवेश करवो जो भाव्य है सो दोय विध है ग्राह्य
ग्रहण महीत भेद तें ग्राह्य हूं द्वि विध है स्थूल सूक्ष्म भेद
तें सो कहा है हीता व तु रूप जात स्ये व मत गृहीत ग्र
हणा र्थेषु तत्स्थात दंजनता समापत्तिः अर्थ ये ही ता
हें रज तता मस वृत्ति से सकी तिस चित्त की ग्रहीत ग्र
हण ग्राह्यो विषे ध्या ग्राह्य ... विषे जो तत्स्थता है ॥
ध्याता तें गो विषे ही जो ... जाता है और तदंजनता को ही
... ता है ... तें चित्त विषे भाव्य मान को ही
जो उत्कर्ष है ये अर्थ है तिस प्रकार को जो समापत्ती क्या

ॐ पारधि ग्रा प्रस्य

तद्रूपपरिणाम होवै है जैसे अभिजात कहीये निर्मल स्फ
टिक मणि के तिस तिस ॐ पाधि पाश्रय पंच भूते रतिस तिस स्व
रूप की प्राप्ति होती है ऐसे निर्मल चित्त के तिस तिस भाव
नीय वस्तु के उपराग ते तिस तिस स्वरूप की जो प्राप्ति है
सो कहीये समापत्ति अरु समाधि ये पर्याय है पद
रवि ग्रहीत ग्रहण नहि विषु ऐसे कहा है तो हूं भूम्यादिक क्रम
के वस्तु ते ग्राह्य ग्रहण ग्रहीत विषु ऐसे जानवे योग्य है जो चेप
यम ग्राह्य विषे एह समाधि होवै है तिस ते पीछे ग्रहण विषे
एह होवै ता पाछै ग्रहीत विषे एह होवै ऐसे ग्रहीत आदिक क्र
म हूं आगे व्याख्यान करीये है तैसे ही स्थावते हैं तहां प्र
थम स्थूल महाभूत इन्द्रियात्मक षोडश विकार रूप ध्येय व
स्तु ग्रहण करकै पूर्वापर के अनुसंधान करकै अर्थ ग्रहण

पंचमहाभूत एकादश इंद्रिय

यकिंउलूखलकै भावनाकरीयेहै तबसवितर्कसमा
धिकहीयतहै इसहीआलंबनविषे पूर्वापरअनुसंधान
करिकै शब्दार्थोल्लेखशून्यत्वकरिकै जबभावनाप्रवर्त्तीहोती
है तबतिसैनिर्वितर्कसमाधिकहीयतहै येदोनोभावनारूपहैं
ईहांवितर्कशब्दकरिकैकहीयतहैं तन्मात्रअंतःकरणालिंग
तासूक्ष्मविषयकोआलंबनकरिकैतिसविषयकेदेशकाल
धर्माविशिष्टरूपकरिकै भावनाप्रवर्त्तीहोवैसोसविचारसमा
धिकहीयतहै तैसेहीआलंबनविषेदेशकालधर्माविशेषविना
धर्मीमात्रकेअवभासित्वकरिकैजबभावनाप्रवर्त्तीहोवैतब
निर्विचारसमाधिकहीयतहै येदोनोंहीविचारशब्दकरिकै
कहेहैं तैसेभाष्यकारकहताहै वितर्कश्चित्तकेस्थूलालंबनविषे
आभोगहै सूक्ष्मविषयविचारहै इति येग्राह्यसमापत्ति

कहीयतहै जबतु रजतमोलेसु करियुक्त अंतःकरण
सत्वभावनाकरीयेहै तबचित्तशक्तिकेसुरषभावतैंसु
खप्रकाशमयभावमान सत्वगुणकेआधिक्यतेंसा
नंद समाधिहोतीहै इसहीसमाधिविषैजेबंधेयैयेहै
वेअन्यतत्वरूपप्रधानपुरुषकोनहींदेखते वेदेहरहित
हंकारत्वतैंविदेह शब्दकरिकैकहीयतहै येमहता शब्दक
कैंकहीयतहै येमहता समापत्तिकहीयतहै ऐसैंतेंपीछें
रजतमोलेशकरिकै अनाभिभूतशुद्धसत्वकोअवलंबन
करिकै जोभावनाप्रवर्तिहोतीहै ऐसैंसविषेशआदिसत्वकेआ
धिक्यतेंचित्तशक्तिकेआधिक्यतेंसत्तामात्रअवशेषरू
पसत्वकरिकैसमाधिसास्मितैऐसेंकहीयतहै अहंकारक

स्मिता का ग्रभे है येन हीं भूं का कर बे यो ग्य जातें जहां
अंतःकरण अहंकार के स्थूल एवक कै विषयों को जानता है
सो ग्रहंकार है ग्रस्त जहां तो ग्रंतर स्थ सत्ता कहै प्रति लोम
परिणाम कहै प्रकृत लीन स्वैत संति सत्ता मात्र जो ग्रासे
सो ग्रस्मिता है इसहीं समाधि विषे कृत परता गहैं वे
परम पुरुष को देखते हैं पश्चिम के प्रकृत विषे लीन स्वतें प्र
कृत लय ऐसे कहावत है सो ग्रसंप्रज्ञात समाधि है ग्रस्मिता
मात्र रूप के ग्रहीतव्य निष्ठ स्वतें जे तु परम पुरुष को भेद
करके भावना को करते हैं उन्हों को केवल पुरुष खेल
या विवेक ख्याति ग्रहीतव्य समाधि हुं नहीं या ग्रस्मिता समा
धि १ विवेक कहै ग्रस्मिता के त्याग तें ग्रहां ग्रहीत मान

जिसकेग्रहणमानसमाधिहै
जिसकेनग्रहणसोचक्रयोगहै

पूर्वकहीग्रहणोंभानहै ओरग्रहणभानपूर्वकसूक्ष्म
ग्राह्यभानहै ओरसूक्ष्मग्राह्यभानपूर्वकस्थूलग्राह्य
भानहै इसतेजैसेस्थूलहैवेषपर्जेसकाअभासहोवे
धहै सवितर्कचतुरैविषैअनुगातेहै ओरदुतीयपक्षास
विचारसवितर्ककुकैअन्यहोयसतपविषैअनुगाते
है सतीयपक्षाआनंदसवितर्कसविचारककेअन्यहोयो
रूपविषैअनुगातेहै ओरचतुर्थपक्षाअस्मितासवित
र्कसविचारआनंदइनकोकरपरअन्यहोयाअस्मितामा
त्रहै जैसेचतुरअवस्थायुकेसंप्रज्ञातहै इसतेजैसे
सवितर्कसविचारसआनंदसास्मितसमाधिअंतरधा
नाहोसेवहीकीहेतुनाककैमैकेहेतुसमाधिकेवेरा है

त्वेतत्याज्यहींहैं उस हीयोंने ग्रहीत अरु ग्रहण को हैं
चित्तवृत्तिकी विषयता है अरु विषयता विकार विषयताई हैं
पत्तेंहैं यापाह पकेर वै मातकथन ने चित्त ग्राह्य समा
पत्तेंहीं विवर्नन करी है सूत्रकारने चतुर्विधा हि ग्राह्य
समापत्ति चतुर्विधही है ग्राह्य समाधि स्थूलग्राह्यगोच
रा द्विविधा है सवितर्क ने निर्वितर्क रूप अरु सूक्ष्म ग्राह्य
गोचरा द्विविधा है सविचार निर्विचार रूप तत्र शब्दार्थ
ज्ञान विकल्पैः संकीर्णा सविकल्पः तहांशब्द अर्थ ज्ञान विक
ल्पाक के संभिन्न स्थूल अर्थकी अविभास रूप सवि
तर्क समापत्तिहै यास्थूलगोचरा सविकल्पक वृत्ति सम
त्पति स्मृ धी स्वरूप शून्येव ह मात्रने भी सा निर्वितर्का

स्तेसहांहीस्थूलआलंबनरवेषे ग्राह्यअर्थस्मृत्तेकेप्रवलयसांत्ति
उरहित्तस्पष्टमाह्याकारप्रत्तेभासताकैवैवध्यज्ञानांग्रात्वक
केस्वरूपप्पून्याजेसेनिर्वेत्तर्कासमापत्तेहे क्यास्थूलगोचरा
निर्विकल्पकवृत्तेयेअर्थहि एतयैवसविचारानिर्विचाद
चसूक्ष्मविषयाव्याख्याता सूक्ष्मतन्मात्रादिकहैविषयजे
सकासोकहीयेसूक्ष्मविषया सासूक्ष्मविषयासमापत्तेहै
विधिहैसविचारानिर्विचारासविकल्पकनिर्विकल्पकमेद
ककैं सोइसहीसवितर्कनिर्वितर्कस्थूलविषयासमापत्ते
ककैव्याख्यातहे ग्राह्यार्थज्ञानविकल्पकेसहितत्वककैदेश
कालधर्मादिककेकैप्रवच्छेनसूक्ष्मअर्थभासताहेजेसवि
षेसासविचाराहे अरग्राह्यार्थज्ञानविकल्पकरहितत्वक

कैं अरु देश काल धर्मादिक के अनवछिन्नत्वक कैं धर्मी मात्रता
क कैं सूक्ष्म अर्थ भासता है जे सविषे सो कह्यो ये निर्विचारा
सविचारा निर्विचार के सूक्ष्म विषयत्व विषे पर्यन्त सवितर्क
निर्वितर्क के स्थूल विषयत्व अपने व्याख्यात है सूक्ष्म वि
षयत्वं चालिंग पर्यवसानं ४५ सूक्ष्म विषयत्व अलिंग
पर्यवसान है सविचारा अरु निर्विचारा समापत्ति का जो सू
क्ष्म विषयत्व कह्या है सो अलिंग पर्यन्त देखवे योग्य है ऐसे स
क कैं सान हे अरु देसा तें अंतगत महत्त्व अरु महत्त्व समापत्ति के है
ग्राह्य समापत्ति विषे हां अंतरभाव है ये अर्थ है सो दिखावते हैं
पार्थिव अणु का गंध तन्मात्र सूक्ष्म विषय है आप्य का हु रस
तन्मात्र सूक्ष्म विषय है तैजस का रूप तन्मात्र है वायवीय
का स्पर्श तन्मात्र है नभ का शब्द तन्मात्र है इन्हों का सूक्ष्म

रवेषयअहंकारहै ऐसेकालिंगमात्रमहात्तहै ऐसेकाहू
अलिंगरूपप्रधानसूक्ष्मविषयहै सप्तहूंप्रकृतियोंका
प्रधानहीहैसूक्ष्मतारवेष्यांतत ऐसेपर्यंतही सूक्ष्मविष
यत्वकहा यद्यपिप्रधानतैंहूंपुरुषसूक्ष्महै तोहूं ऐसेके
अन्वयीकारणताकेअभावतेसर्वान्वयीकारणरूपप्रधा
नविषेहीअरऐतेनूयसूक्ष्मताव्याख्यातहै पुरुषताने
निमित्तकारणहूयाहं नअन्वयीकारणत्वककेसूक्ष्मताको
योग्यहोताहै अन्वयीकारणत्वकीअविवक्षाहैविषेतोपुरु
षसूक्ष्महोवेहैयेइहसंख्याहै ताएवासबीजः समाधिः ये
हीसबीजसमाधिहै ताकहीयेवेचारसमापत्तीताविवक
पबीजसाध्यवतैंसोअसेसबीजसमाधिकहीयेहै रवितर्क

विचार आनंद अस्मितके अनुगमतें संप्रज्ञात समाधि है ऐसे
पूर्वोक्त हैं स्थूल अर्थविषे सवितर्क निर्वितर्क समाधि है॥
सूक्ष्म अर्थविषे सविचार निर्विचार समाधि है ऐसे पूर्वो
क्त हैं तहां अंतिमका फल कहीयत है निर्विचारवैशारद्ये
ध्यात्मप्रसादः निर्विचार समाधिकै उज्वलत्वविषे अध्या
त्मका प्रसाद होता है स्थूलविषयत्वतुल्य संतें हूं सवितर्क
समाधिका शब्द अर्थज्ञान विकल्प करिकै संयुक्त आपेहाक
कैरिसखर है तातें निर्विकल्परूप निर्वितर्क समाधिके प्रा
धान्य है तिसतें सूक्ष्मविषयपेक सविकल्पक प्रतिभासरू
प सविचार समाधि है तिसतें हूं सूक्ष्मविषयपनें निर्विकल्प
कप्रतिभासरूप निर्विचार समाधिके प्राधान्य है तहांपू
र्वतीन समाधियोंके निर्विचार समाधिपर्यंत होतें निर्विचार समा
धिके फलकरिकै ही फलवत्व है और निर्विचार समाधिकेउ

॥ सवितर्क निर्वितर्क सविचार येतीनं निर्विचारकी
सिधनानिमित्त है सो जिसातें निर्विचार साफ
ल्यरूप है तातें येतीनभी निर्फल नहीं है

प्रकर्षाभ्यासके बलतें वैशारद्य संज्ञक जब रजतमोकरिकै
अनभिभूत सत्वके आरध्येकप सें तिब अध्यात्मका प्रसाद
होता है क्या क्रम आवासना रहिताके भूत अर्थविषयक क्रम
के अनुकूलता रहित प्रत्यक्ष प्रज्ञाका आलोक प्रगट होता
है तैसें भाष्य कहै है प्रज्ञारूप मंदिरको चढकरिकै अशोच्य
सो योगी शोकयुक्त जिनोंको देखता है जैसें वा पर्वतस्थ पुरु
ष भूमिस्थ पुरुषोंकों जैसें ऋतंभरा तत्र प्रज्ञा तहां ऋतंभरा
प्रज्ञा है तहां कहिये तिस प्रज्ञा प्रसाद संज्ञि समाहित चित
योगीके जो प्रज्ञा उत्पत्ति होती है सो ऋतंभरा कहीयत है ऋ
तं कहिये सत्यको बिभर्त्ति किंवा धारे सो कहिये ऋतंभरा तहं
न विपर्यासकी गंधहू है जैसे योगीकूं विशेय समाख्यात
है सो उत्तम योग है तैसे भाष्य कहत है आगमकैं अनु

विपर्यो

मानककैं ऋतंभरा प्रज्ञा नाम्यास केरसककैं तीन प्रकारं बुद्धि की कल्पना कर्तहिं यो उत्तम योग को पावता है इत्तैं सो बुद्धि तो श्रु तानुमान युक्त प्रज्ञाकैं कैं अन्यविषया है विशेषार्थत्वात् श्रुत कहीये आगम अंवसान सो सामान्यविषयहीहै नरवे विशेष सा ध्यनरहरए की संगति ग्रहण करबेको समर्थ होईयत है तैसे अनुमान समान विषयहीहै नर विशेषसाध्य के सीकी व्याप्ति ग्रहण करबे तांई समर्थ हूजीयतहै ताते श्रुत अनुमान का विषय न विशेष कोई एक है नैर सस्य सूक्ष्म व्यवहित विप्रकृष्ट वस्तु का लोक प्रत्यक्ष कैं ग्रहण है त्वि तु समाधि प्रज्ञा कैं निर्मि हांही सो विशेष होता है सो विशेष भूत सूक्ष्मगति है वा पुरुषगत है ताते निर्विचार वैशारद्ये तैं समुत्पन्न वै के या उत्पन्न है श्रुत अनुमान तें विलक्षण है सूक्ष्म विचार हेतु रविप्रकृ गीनि महान प्रयत्न करबे योग्य है ये अर्थ है ननु है प्रसङ्ग विशेष प्रा कार विषय है ८

सर्व विशेष है विषय जे सका अ सीरत्त भरा ही प्रज्ञा विषयो वस्तुलोक प्रत्यक्ष प्रमाण लिप्याप्य करसा है ५

श्रुतानुमानप्रज्ञाभ्यामन्यविषया विशेषार्थत्वात्

तज्जः संस्कारोऽन्यसंस्कारप्रतिबन्धी

ख्यौ व्युत्थानसंस्कारोके अरु एकाग्रभूमिका खेषप्राप्तस्खचितकै
स्नैर्वितर्कसविचारोतें उत्पन्नसंस्कारोके सञ्चातें अरु तिन्होंक ॥
कैं चाल्यमान स्वचितके कैसा नैर्विचारवैशारद्यपूर्वक अध्यात्म
प्रसाद करकैलभ्य ऋतंभरा प्रज्ञा प्रवृत्ति होतीहोवैहै तहांकहतेहैं
तज्जः संस्कारोन्यसंस्कारप्रतिबंधी तैसतें उत्पन्नसंस्कार अन्यसं
स्कारप्रतिबंधीहै तत् कहीये तैस ऋतंभराप्रज्ञाकैं जः कही
ये जानेत जो संस्कार है सो तत्त्वविषयाप्रज्ञाकर जनेतत्त्वककै
बलवन्तें अन्य कहीये व्युत्थानतें उत्पन्न अरु समाधितें उत्पन्न जे सं
स्कार हैं अतत्त्वविषयाप्रज्ञाककैं जिनतत्त्वककैं दुर्बल हैं तैसोको
बाधताहै क्या अपनेकार्यविषे असमर्थकरताहै अथवा नाश
करताहै तैनसंस्कारोके अभावतें तिनतें उत्पन्न जो प्रत्यय
हैं वे नहीं होते तैसतें समाधि उदय होती है तैसतें पीछें समाधि
तें उत्पन्न प्रज्ञा होती है तैसें प्रज्ञाककैं कृतसंस्कार होते है अैसे

९८

नवनवसंस्कारारम्भपवघहोताहै तेसतेंपीछेंप्रज्ञाहोती है तिस
तेसंस्कारहोतेहैं इत्ते ननुहोवै अतत्वविषयाप्रज्ञाकर
जनित व्युत्थानसंस्कारोंका तत्वमात्रविषयसंप्रज्ञातसमाधि
प्रज्ञातें प्रभवसंस्कारक कै प्रतिबंध परन्तु तिनसंस्कारोंकेउ
प्रतिबंधकके अभावतें एकाग्रभूमविषैं हीसबीजसमाध
होवैहै ननु निर्बीजसमाधिनिरोधभूमविषैहोवैहै तहांक
हतेहैं तस्यापिनिरोधेसर्वनिरोधान्निर्बीजः समाधिः इतेस
केहूंनिरोधसेंते सर्वनिरोधतें निर्बीजसमाधिहोतेहै तस्यक
हीये एकाग्रभूमतेउत्पन्नसबीजसमाधके अपिन्ना इतें रहित
मूहवेहिपके हूंनिरोधसेंते क्यायोगीकेप्रयत्नविशेषकरवि
लयसेंते सर्वकेनिरोधतें क्यासमाधिके अरसमाधितेउत्पन्न
संस्कारकेहूंनिरोधतेंनिर्बीजकहीयेनिरालेंबनअसंप्रज्ञात

समाधिहोतहै सोसमाधिउपायसहेतपूर्वसूचितहै ॥ विरामप्रत्ययाभ्यास
पूर्वःसंस्कारशेषोऽन्यः ॥ विरामप्रत्ययकेअभ्यासपूर्वकसंस्कारशे
षअन्यसमाधिहै ॥ विरमपत्तेकहियेखेप्साम करियेइसकहैंसोक
हियेविराम ॥ क्यावितर्कविचारआनंदअस्मितारूपवृत्तिनका
त्यागतिसकाप्रत्यय क्याकारण क्यापरमवैराग्ययेअर्थहै ॥ विरा
मप्रत्ययक्याचित्तवृत्तिविशेष अथवायेअर्थहै ॥ तिसकाअभ्या
सक्यापुनःपुनःचित्तविषेप्रवेशन सोहीहै पूर्वकहियेकारणजि
सकासोकहियेविरामप्रत्ययाभ्यासपूर्वः ॥ औसोजोसंस्कारमा
त्रशेषक्यासर्वथाआनंदरूपत्वसोअन्यसमाधिहै ॥ क्यापूर्वो
क्तसबीजतैंकेवलहणिनिर्बीजअसंप्रज्ञातसमाधिहै येअर्थ
है ॥ संप्रज्ञातसमाधिकेदोउपायउक्तहैं वैराग्यऔरअभ्यासतिन्हैं
अभ्यासकेसालंबनत्वतैंनिरालंबनसमाधिकाहेतुत्वनहींबणैहै

इसहेतुतैं निरालंबेन रवैष परम वैराग्य हेतुत्व ककैं कहीयत है॥
अरु अभ्यासतु संप्रज्ञात समाधि द्वारा प्राणायामादिकोकी उ
पयोग रूप होईयत है सो कहाहै त्रयमंतरंगं पूर्वेभ्यः त्रयअं
तरंगरूप हैं पूर्वेति धारणाध्यानसमाधिरूप त्रय आसन
प्राणायाम प्रत्याहार रूप साधन पंचककी अपेक्षा करिकै सबीज
समाधिका अंतरंगसाधन हैं पुनसाधनको रवैष समाधिउ
पकके अभ्यासही कहीयत है मुख्यसमाधिके साध्यत्वतें त
दपि बहिरंगं निर्बीजस्य सो है बहिरंग रूप हैं निर्बीज समा
धिके निर्बीजसमाधिके तु सो हे त्रय बहिरंगसाधन हैं का
परंपरा करके उपकारी हैं इतिसनिर्बीज समाधिका तु परम
वैराग्य है अंतरंगसाधन है ये अर्थ है अथ मत्येद्विविधो
भवप्रत्यय उपायप्रत्ययपद्म भवप्रत्यय को रवैदेहप्रकृतिलया

नां येहंद्विविधहै भवप्रत्यय अरुउपायप्रत्यय भवप्रत्यय
विदेहप्रकृतलयोंकाहै विदेहकहीयेंसानंद अरुप्रकृत
लयकहीयेसास्मित एवजोपूर्वव्याख्यातहैं एतिनोंका
जन्मविनुपायतें अरुऔषधविनुपायतें मंत्रविनुपायतें अरुतपो
विनुपायतें जोसमाधिहै सोभवप्रत्ययकहीयेहै भवकहीये
संसार क्या आत्मानात्मविवेकाभावरूपसोहैप्रत्ययकही
येकारणजिसकासोकहीयेभवप्रत्यय अथवाजन्ममात्र
हेतुकपक्षीयोंके आकाशगमनजैसे पुनःसंसारहेतुत्वतें
मुमुक्षुयोंनेंत्याज्यहै येअर्थहै श्रद्धावीर्यस्मृतिसमाधिप्र
ज्ञापूर्वक इतरेषां श्रद्धादिकओरोंकेहै जन्मऔ
षधमंत्रतपइनविनापायोंतें व्यतिरिक्त आत्मानात्मविवेक
इच्छुकयोंकेतोजोसमाधिहैसोश्रद्धादिपूर्वकहै क्याश्र

धाद्दिकहै पूर्वकहीयेउपायरूतेसकेसो कहीयेश्रधावीर्य
स्मृतिसमाधिप्रज्ञापूर्वक क्याउपायप्रत्ययये अर्थहै ॥
तिनविषे क्याश्रधायोगविषेजो चित्तकाप्रसाद है सो
जननीजैसेयोगीकोरक्षाकरताहै तैसतेंपी छेश्रधायु
क्तविवेकीकाधर्मकेवीर्यकहीयेउत्साहउत्पत्तिहोताहै मे
लीप्रकारउत्पत्तिहै वीर्यजैसकेऐसेयोगीकेपश्चात्प
भूमकाउंविषेस्मृतिउत्पत्तिहोती है तैसस्मृतितेचित्त
व्याकुलताकर रहितहोया सावधानहोताहै समाधिईहां
एकाग्रता है समाहितचित्तकेप्रज्ञाभाव्यगोचराविवेक
कबैउत्पत्तिहोतीहै तैसअभ्यासतेअरपरमवैराग्यतें
होताहैअसंप्रज्ञातसमाधिमुमुक्षुहीयोकेयेअर्थहै प्रतेह
तापरकामीहैं भावनेमक्षयककैडक्सन्यायककै तैस
चैतन्यविना

हो सर्ववृत्तिनिरोधावस्थाविषै चित्त परिणाम प्रवाह अरु तज्ज
न्य संस्कार प्रवाह होता ही है येअ रनै प्राय ककै संस्कार जोय
ऐसे कहा है पूर्वसूत्रविषै तस्य च संस्कारस्य प्रयोजनमुक्तं
तेन प्रशांतवाहिता संस्कारादिति इस संस्कार का प्रयोजन
कहा है इस संस्कारतैं प्रशांतवाहिता होती है प्रशांतवाहि
ता नाम अवृत्तिक चित्त का निरंधन अग्नि जैसे घृत लोमादि का
मकै उपशम मैं जैसे समित अग्नि आज्यादिक आहुति ग्रहे पसंत्ति
भूतनि उत्तरोत्तर वृध ककै प्रज्वलन होता है सम हारह ककै ह्यसं
तैंतु प्रथम क्षणविषै कैं चित्त शांति होता है उत्तरोत्तर क्षणविषै
तै अधिक अधिक होता है ऐसे क्रम ककै शांति वृध होता है तै
से निरोध चित्त का उत्तरोत्तर अधिक प्रशांत प्रवाह होता है तहां
पूर्व प्रशांत जनित संस्कार हो उत्तरोत्तर प्रशांत का कारण है

तबइनेरोधजअरतनेतेसेचैतन्यांरतेहोइककैं सुध्यानसमाइधेस्से
रोधसंस्कारोसाथअपनीप्रकृतविषैलयहोतहै तबसमा
धिकेपरपाकप्रभावककैं वेदांतवाक्यजनित सम्यकदर्श
नककैं अविद्याने वर्त्तेसंत्ते तत्तहेतुक दृक् दृश्यसंयोग
केअभावतेंपंचविधावर्त्ततेहैं तिने वर्त्तसंत्तेस्वरूप रविषेस्थि
तपुरुषअशुद्धकेवलरुक ऐसेकहीयतहै सोकहाहै तदाद्रष्टा
स्वरूपेवस्थानमित्ति तबउष्टाकास्वरूपविषेअवस्थानहो
ताहैइत्ति तहांकहोयेसर्ववर्त्ततेनेरोधसंत्ते अरवर्त्तेहभागवि
षतुनित्यअपरिणामी चैतन्यरूपताकवैरीतिसकेसर्वद्र
ष्टुत्वसंत्तेहैं अनादिअविद्याकदृश्यसंयोगककैं अंतःक
रणतादात्म्याध्याससंतेअंतःकरणवर्तेसारूप्यकोपावता
होयानभोक्ताहोयाद्दुःखोंकेभोगताजैसेहोसाहै सोकहा
है वर्तेसारूप्यमितरत्र वर्तेका[illegible]सारूप्यहोताहै औरसमय

स्वरूपक

इति इतरस्त्र कहीये यातें के प्रादुरभावसमय येहूं खेचराणिकी
याहै अष्ट हत्रूयोपरक्तं स्वचितं सर्वार्थं दृष्टादृश्यरूपकके उपरागा
स्वचितसर्वार्थ होताहै स्वचितं ही द्रष्टादृश्यरूपकके उपरक्त होयारवे
षई विषयानें भी सचेतनाचेतन स्वरूपको प्राप्त होयारवे विषया
त्मकहूं और विषयात्मक जैसे अस्फ चेतनहूं चैतन्य जैसे स्फ
टिकमणीके तुल्य सर्वार्थ ऐसे कहीयतहै सोइस स्वचितसारू
पकके भोतहूयेके ईश करते स स्वचितको हं चेतन ऐसे कह
तेहैं तासंख्येय वासनामें चित्रमपि परार्थं संहत्यका
रित्वात् सो चितहूं असंख्येवासनादिककें परार्थ होताहै
स्मेलकके कर्त्त्वातें स्त्री सकें भोग अपवर्गार्थ है सो पुरुषव
रहै या चेतन है यह असंगहत पुरुषहै ननु घटादिक जैसे स्मेल
ककैं कर्तारूप स्वचित चेतन हैं ये अर्थ है एवं चाव ब्रूवरा भूनि

असंघहत

१५२

आत्मभावनानिवृत्तिः ॥ ऐसे विवेचन करी कि आत्मभावनाकी
अर्थये निवृत्ति होती है ऐसे जो पुरुषके अंतःकरण अरु पुरुषको वि
शेष करि है तिसके अंतःकरणविषे प्रथम अविवेक करिआ
के वंधते जो आत्मभावना होत भई सो निवृत्ति होती है, ऐसे क
हनि संते अभेद भ्रमकी अनुत्पत्तितें सत्व अरु पुरुषका वि
शेष करनि भेगावर पतिनि धकाम कर्मकि कै साध्य है रे तेस
कालीगायो नाभाष्यविषे दिखाया है जैसे वर्षा ऋतु विषे
तृणांकुरके उदय कर्के तिसके बीजसत्ताका अनुमानका
विषय होता है तैसे मोक्षमार्ग प्रवण करके सिद्धांत वि
वेक वके वंधते जे सत्पुरुषके रोमहर्ष अरु अश्रुपा
त देखनेआवते हैं तहां हूं है विशेष दर्शन बीज मोक्षभागी
कर्म करयाहोया ये अनुमान होता नाही है

जिसके अनुनादत्रा कर्मबीज नहीं तिसके मोक्षमार्ग प्रवर्तावे विषे पूर्व
पक्षपुत्रीयों विषे रुच होतीहै अरु सिद्धांतपुत्रीयों विषे अरु
चे होतीहै तिसके कौन मैं होता भयाहौं कै सौ मैं होता भयाहौं
इत्यादिक भावना स्वाभावकी प्रवृत्ति होतीहै सो तत्त्वविशेषदर्शी
के निवृत्ति होजातीहै ऐसे सत्त्व क्या होता है तहां कहतेहैं तदावि
वेकनिम्नं कैवल्यप्राग्भावं चित्तं तब कैवल्य के अयोग्य चित्त ग्भाव
विवेकनिम्न होताहै निम्न कहीये जलप्रवाह के योग्य नीचे देश प्रा
ग्भाव कहीये तैसे जलप्रवाह के अयोग्य ऊंचे देश ऐसे सर्वदा
प्रवर्तमान वर्ते प्रवाहक के वहते जल के तुल्य है सो पूर्व अनात्मा
के अविवेकरूप विषम मार्ग वाही होया विषयभोग पर्यंत इसका
होता भया अब आत्मानात्म विवेकरूप मार्ग वाही होया कैवल्य
पर्यंत होताहै इस विवेक वाही चित्त विषे अंतर जो भावना है सो

३

हेतुसहितनिवर्तकरनेकायोग्यहै येकहतेहैं व्यसूत्रोंकरकै तिछेदपु
प्रत्ययांतरानितेसंस्कारेभ्यः हानमेषांक्लेशवदुक्तं तिसछिद्रचितके
छिद्रविषेसंस्कारोंतेजेप्रत्ययांतर होते हैं इन्होंकाहानहीकहा
है क्लेशजैसे तिनकहीयेतिसविवेकवाहचित्तविषेछिद्रनेअंत
रालहैं तिन्होंविषेजेप्रत्यांतर व्युत्थानरूपअहंममःइत्येवरूप
व्युत्थानअनुभवतेजन्यतेहीयमानसंस्कारहैं तिन्होंतेजेउ
त्पत्तिहोतेहैं उन्होंकेअरसंस्कारोंकेक्लेशोंकेहानजैसेहानक
हाहै जैसेक्लेशअविद्यादिकज्ञानाग्निकरकैदग्धबीजभा
वहोयनपुनःचित्तभूमविषेअंकुरकोप्रापतिहोतेहैं तैसेज्ञाना
ग्निकरकैदग्धबीजभावहूयेसंस्कारप्रत्ययांतरोंको उत्पत्तिकर
बेकोनहीसमर्थहोते ज्ञानाग्निसंस्कारतुजितनेपर्यंतचित्तहैं तिते
तनेपर्यंतअंतरभूतरहते हैं औसेप्रत्यांतरकेअनुदयकरकैविवे

कयाहीचित्तस्यपरिणामसेंति प्रसंख्यानेप्यकुसीदस्यसर्वथा
विवेकख्यातेर्धर्ममेघःसमाधिः प्रसंख्यानकहीयेचेतन्या
त्माकेविवेकसेंतेहीफलनहींमिलाथीपुरुषकेसर्वथाविवेक
कीख्यातित्तेंधर्ममेघसमाधिहोतहे प्रसंख्यानकहीयेअंतः
करणांपुरुषकाअन्यत्वख्यातक्याप्युहंआत्मज्ञानयेअर्थहे
तहांबुद्धिकेसात्विकपरिणामसेंतेकस्याहेसंयमजेसनेवै
सेपुरुषकेसर्वगुणपरिणामोकास्वामीजैसेअक्रमणहोता
हेअरसर्वाधिष्ठातृत्वहोताहे सर्वाधिष्ठातृत्वकहीयेतेसो
होयातेउदितअव्यपदेश्यधर्मत्वकरकेंस्थितगुणपरिणा
मोकायथावत्विवेकज्ञान क्यासर्वज्ञातृत्वअरविगुणकाना
मसेंहोताहै फलंतदेरागपाचेकैवल्यमुक्तं चपुनवैराग्य
तेंसोकैवल्यरूपफलहेउक्तहे अंतःकरणअरपुरुषकेअ

ते ऐसे अंतःकरण के सै मेहज्ञानमात्र के

संख्यातमात्र के सर्वभावो का अधिष्टातृत्व अरु सर्वज्ञातृत्व

॥ ५० ॥ है तहां वैराग्य करि दोषबीजक्षय कैवल्यं इन सूत्रों करि कैसो

॥ कहीयत है ऐसे प्रसंख्यान संत्ते क्यासम्यक ज्ञान संति

अकुसीद कहीये फलकामनारहित पुरुष के प्रत्यांतरो के

अनुदय संत्ते सर्वप्रकार विवेक की ख्याति ते परवृषत्ते

धर्ममेघसमाधि होता है यज्ञपूजा आचार दम अरु हिंसा

दान स्वाध्याय इन कर्मों कीये हो परम धर्म है जो योग कर

आत्मदर्शन होइ इस स्मृति तें धर्म कहीये प्रत्यक् पुरुष का

साक्षात्कार कों मेह ते कहीये सैचे सो कहीये धर्ममेघ क्या

तत्वसाक्षात्कार का हेतु पेन्यर्यहि ततः क्लेशकर्मनिवृत्तिः

॥ ततः कहीये तिस धर्ममेघ समाधि तें अथवा धर्म तें क्लेश

कहीये पंचविधि अविद्या अस्मिता रागद्वेष अभिनिवेश

इन्होंका अत्र कर्मोंका कथन करिके घामूल प्रफुलक क घम क घम्ठ
क्र [illegible] भेद करके त्रिविध कर्मोंका कथन करिके घा हयसेत्ति बीज
रूप होता है बीज रूप [illegible] तें आत्यंतकी निवृत्ति कहिये कै
वल्य होता है कारण निवृत्ति करके कार्य निवृत्ति तें आत्यं
त्तिकत्व के उच्चारोत्वते ये अर्थ है ऐसे संत्ति युज निवंसद्य
मान इसके कै संप्रज्ञात समाधि ए कारणभूमर्थ विषे कहा
है निवर्तमानस: इसके कै तत्फलभूत असंप्रज्ञात समा
धि निरोधभूमि विषे कहा है और व्यातें कही पर निरोध समा
धि तें उत्पन्न संस्कार का फल भत्त प्रव्यातें चाहता निवलाप
रूपा कही ये धर्ममेघ समाधि का तत्वज्ञान वा राकै वल्य है
उत्तम तत्संख्या इसके कै अपने बतो कै अभिमत कैव
ल्य हि रवौ या जाते ऐसे महाफल है योग ताते इस योग कों म
हाप्रयत्न करके सिद्ध करे ये अर्थ प्राप्त है इति २५ ॥ ॥

अैसेयोगाभ्यासनिष्टकेआहारादिकनियमकोकहतेहैंश्लोकद्व
यककैश्लो० नात्यश्नतस्तुयोगोस्तिनचैकांतमनश्नता ना
चातिस्वप्नशीलस्यजाग्रतोनैवचार्जुन १६ न अतिभोजन
कर्ताकियोगहोताहै अरनअत्यंतअभोजीकेयोगहोताहै
अरनअतिस्वप्नशीलकेयोगहोताहै अरनअतिजागनका
कर्ताकियोगहोताहैहेअर्जुन टी० जोभुक्तकहापाचनीमैंहि
जावे अरशरीरकेकार्यसामर्थ्यकोसिद्धकरै सोआप
केसंमितव्याप्रमाणीकअन्नहै तिसकोउलंघककैलो
भककैजोअधिकअन्नकाभोजनकर्ता तिसकेयोगनहीं
होताजातेअजीर्णहोयककैसोव्याधककैपीडउत्तहोताहै
अरअत्यंतेनभोजनकर्तेकेहुयोगनहीहोता अनाहारतें
अथवाअल्पाहारतें रसपोषणकेअभावककैशरीरकै

कार्यविषैअसामर्थ्यतैं अथवा आत्मप्रमाणतैं अन्नसों र
ह्याकर्ताहि नहीं नाश्राकर्त्ता जो प्रमाणतैं अधिक हैं सो नाश्रा
कर्ताहि जो प्रमाणतैं हीन है सो नहीं रह्या कर्त्ता औसे आतप
पप्रवृत्तितैं नातैं योगी आत्मप्रमाणतैं अनंतैं अधिक वा न्यून
न भोजन करै येअर्थहि अथवा अर्धभाग को पूर्ण कर भोज
न करकै अरतृतीयभाग को पूर्णकर जलकरकै वायुके सं
चारनिमित्त चतुर्थ को शेषराखै इत्यादिक योगशास्त्रोक्त प
रमाणतैं अधिक अथवा न्यून को भोजन कर्त्ताके योग नहीं
सिद्ध होता येअर्थहि तैसें अतिनिद्राशीलअरु अतिजागरणशी
लके योग नहीं होता है अर्जुन तुम सावधान हो वो येअर्थ पूर्व
१६ । यहै एक चकार उक्त आहारके अतिक्रमके समुच्चयार्थहि अर
कहे हो ये अहार प्रकारतैं उलंघितक समुच्चयन निमित्त है
[illegible]

कैसा है अभ्यास जो स्वरूपकी स्थितिपर्यंत है

उताप च कार अनुक्त दोषोंके समुच्चयार्थ है जैसे कहा है मार्कंडे यपुराणविषे आधिमान कर युक्त अरु क्षुधित अरु श्रमित अरु व्याकुलचित्त योगाभ्यासको न करे अरु पुरुष सिद्धता निमित्त है रालेदुः न अति शीतकालविषे अरु ना अति शीतकर न अतिउष्णके उष्णककै न दंधकके न पवन युक्त कालविषे इनि कालोविषे ध्यानतत्पर पुरुष योगाभ्यासको न करे ॥ त्यादिक १६ जैसे आहार हिनियम विरही के योगव्यतिरेकको कर हैं केकैं तिसते नियमवानूके योगान्वयको कहते हैं श्लो० युक्ताहारविहारस्य युक्त चेष्टस्य कर्मसु युक्तस्वप्नाव बोधस्य योगो भवति दुःखहा १७ युक्ताहारविहारके अरु कर्मविषे युक्त चेष्टा पुरुषके अरु युक्तस्वप्नावबोधके दुःखोंका नाशक योग होता है टी० आहरणकरीये सो कहा ये अहार

ते

क्या अत्र रवेहर्त्त कहीये विहार क्यापरयाम वेदांतो मुक्तक
हीये स्नेयत्त प्रमाणता हैं जिसके सो कहीये युक्ताहार विहार
तैसे औरहं प्रत्यवनप उपनिषत्त आवैरागहिक कर्मो विषे
है स्नेयत्त काल चेष्टा जिसकी सो कहीये युक्त चेष्ट कर्मो विषे
ष तैसे स्वप्न कहीये निंद्रा अवबोध कहीये जाग्रत्त ये युक्त
कहीये नियत्त काल हैं जिसके ऐसे पुरुषको योग होता है
क्या साधन के चातुपति समाधि रूप होता है औ औरके दुःख
होता है औ स्नपयत्न विशेषक कैरि सोध योगा यो योगा को नफल
कर्त्ता होता है तहां कहता है दुःखहा इति सर्वसंसार दुःखका
रत्नान्नविद्याके उनमूल हेतु अज्ञान विद्याके उत्पादक तत्ते
समूल सर्व दुःख निवृत्ति का हेतु होता है ये अर्थ है ईहांत्र

हारकानियमजरणावत्तेहैं अर्थसंव्यंजनभोजनकाहै अरतृतीयभाग
जलकाहै वायुकेसंचारनैरमेन चतुर्थकोशेषराखे इत्यादिकपूर्व
कहाहै रवेहारकानियतत्वकहत्तेहैं भोजनतेंअधिकनजावे इत्यादि
क अरकर्ममेंविषेचेष्टानियमत्वकोदिखावतेहैं वागादिकचाप
ल्यकात्याग रात्रिकेरविभागत्रयकोकके प्रथमअरअंतभागद्वय
विषेजागरता अरमध्यविषे स्वप्न ऐसेस्वप्नअरअवबोधकालनि
यत्वकालत्वजनाया ऐसेअमोरहै योगशास्त्रोंकेनियमहैरवबै
योगहै २७ ऐसेएकाग्रभूमविषेसंप्रज्ञातसमाधिकोकरहै कके
निरोधभूमविषे असंप्रज्ञातसमाधिकरहैवेतांईप्रारंभकरते
ख हैं श्लो० यदा विनियतं चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते निस्पृहः सर्वकामेभ्यो
युक्त इत्युच्यते तदा १८ जबजीताहोयाचित्तआपविषेस्थि
तहोवे अरजबसर्वकामोतेंनिस्पृहहोवे तबयुक्त ऐसेकहीयतहै

पद्म कहीये जैसे काल विषे परम वैराग्य वशा तें विनियत कहीये
विशेष करि नियत क्या सर्व वृत्ति शून्यता को प्राप्ति चित्त कारव
गति रजस्तमस्क अंतःकरण सत्व स्व छात्वतें सर्व विषयाकार
महता समर्थ हूं सर्वतें निरुद्ध वृत्तिकत्वतें आपही विषे क्या प्र
त्यक चैतन्य विषे क्या अनात्माकार अनुपरक्त विषे वर्तते राहि
त्य सर्वतें हूं स्वतः सिद्ध आत्माकारके दूर करबे तां ईश्वरावस्थत्वतें
चित्त के ही प्राधान्यतें स्थिर होय जब लक्ष्य न होता है क्या निष्फल हे
ता है तहा कहीयेत्ते स सर्व वृत्ति निरोध काल विषे युक्त कहीये स
माहित जैसे कहीयेत है कौन जो सर्व कामनातें निस्पृह है क्या
निगति है दोष दर्शन करके सर्व दृष्टा दृष्ट विषय कामनातें स्पृहक
हीयेत घ्मा जैसे की [illegible] ऐसे उत्कृष्ट तें र साधन करु तैसे व्याख्या

तहेपूर्व १८ समाधिरवेषेसंनिरुधी कहचित्त की उपमाको कहतेहैं
श्लो० यथादीपोनिवातस्थो नेंगते सोपमास्मृता योगिनो य
तचित्तस्य युंजतो योगमात्मनः १९ जैसेरनिवातस्यानविषेस्थि
त दीपकन ही चलायमान होता अंतःकरण योगा को जुड़ते यत्तचि
त योगी के सो उपमा कहीहे टी० दीपचलनहेतुपवनकर्केरहि
तदेसविषेस्थित दीपकजैसे चलनहेतुके अभावतेंनहीं च
लता सोउपमा चित्तवनाकरीहे क्यासो दृष्टांतचिंतितहे यो
गन्हीनें एकिसका योगी के क्या एकाग्रभूमविषे संप्रज्ञात स
माधिवानुके अभ्यास चानुयत्तें यत्तचित्त कहीयेनिरुधसर्व
चित्तवृत्ति के असंप्रज्ञातसमाधिरूपयोगको निरोधमू
करता एतिसका निश्चलताकर्के परमात्व के आधि क्यक
के अरण का एकताकर्के निश्चलदीपदृष्टांत है ये अर्थ है

स्थ

(left margin, vertical:) ...सद्धिसमाधिसंभवतो...

आत्म

आपके योगको जुउने योगीके ऐसे व्याख्यान खेषे दृष्टांत तिक
कान्त्रलाभ होताहै सर्वअवस्थास्थाई चित्तकी सर्वदा आत्माका
रताकके आत्मपरका विषय होताहै नयोगकके आत्मेकार
तारचित्तकी स्थिघ होतीहै रकिंतु स्वतःही आत्माकारहूयेकी अ
नात्माकारतारनिवर्त्तीहोतीहै तातेदृष्टांततेक पूर्ततिपा स्नाघ
ही आत्मपरहै अथवा यत्रचित्तस्य इसकाभाव परकथन
है क्याजीनपाहे रचित्तात्वजैसेने अथवा कर्मधारे समासहै
क्याजीत्येरचित्तकीपेअर्थहै २८ ऐसे सामान्यककै समाधि
कोकरहकके निरोध समाधिको विस्तार ककै वननिकरबेताई आ
रंभकरतेहैं श्लो० यत्रोपरमते चित्तं निरुद्धं योगसेवया यत्र चै
वात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि तुष्यति २० जेहा योगसेवाकके निरुध
चित्तउपरमको पावताहै अरजहां चित्तकके आत्माको देखताहोया
सोसर्वअवस्था इत्यादि
करदिखावते हैं

आपविषेतोषकोपावताहे टी० यत्र कहीयेरजैसर चैतकैं परिणामरखे
ऩ्राष योगासेवाककैं क्या योगाभ्यासचातुर्यककैं उत्पन्नसंतिखे
त्रनिरुधकहीयेएकरविषयेकवृत्तेप्रवाहरूपएकाग्रताकोत्याग
ककैं निरधनअग्निजैसे शांत्ते होताहोयारने वृतिकताककै स
वचित्ते निरोधरूपककैं पैहिरलीनहोताहे अरजैसपरे
णामसंते आत्मनाकहीयेरजस्तमसककैं अनरमेभूतशु
धसत्वमात्रअंत:करणकरकैं आत्मानंकहीयेप्रत्यकूचैतन्य
कोपरमात्मातेंअभिन्नसच्चिदानंदघनअनंतअद्वतीयहूरवताकू
होया क्यावेदातेप्रमाणउत्पन्नवृत्तेककैं साक्षात्कारकर्ता
होयात्आत्मनेकहीयेपरमानंदघनरविषेतोषकोपावताहे॥
नेहेहेईयसंघातरविषे अथवानतज्ञोगयऔरपदार्थरविषे॥
परमात्मेद्रुनिसंते मनुष्टहेतुकेअभावतेंतोषकोपावता
होहै अथवायेअर्थहै त्तेसअंत:करणपरिणामसवे

स्वित्तवर्त्तेनिरोधको योगजानये श्लोकसाथ अर्थे वहे जैसकातर्षेवे अर्थसनुव्याख्यान असाधुहे तद्धिरन्नाषके अर्थ चेयतें २० आत्माहीरखेवेताषत्वेष हेतुको कहत्तेहैं श्लो० सुख मात्यंतकं यत्तद्बुद्धिग्राह्यमतींद्रियं वेत्तयत्रनचैवायंस्थित श्चलततत्वतः २१ बुद्धिग्राह्यमतींद्रियजोसुखहैतिसकोजा नताहेजहां अरजहांस्थितहोयापेतत्वतेंनहीचलायमानहोता तिसकोयोगजान ८१० यत्रकहीयेजेसअवस्थाविनुोष विषआत्पेतक कहीये अनंत व्याख्येरत्तिरूपपत्रस्वस्व पकोजोअतींद्रियहे व्याख्येवेंद्रियप्रयोगकवैअप्रगट हे अरबुद्धिग्राह्यकहीये रजतामससमलकवैरहेत्तव्यास मागवाहेनीबुद्धिकवैग्राह्यसुखकोयोगीजानताहे व्या अनुभवकर्त्ताहे अरजहांस्थितहोयायेविद्वानतत्वतेंव्या

आत्मस्वरूपतें नहीं चलतावृत्ति सको योग संप्रज्ञात जान ऐसे इसका
भी परचेप्रोक साधन अन्वय समान है ईहां आत्पेत कन्नै सेवल
सुखरूप कोकथन है अतीद्रिय अैसे विषय सुख की व्याव
त्ति कही है तैसे विषय सुखके विषयें द्रिय संप्रयोग के सा
पेक्षत्वतें बुद्धिग्राह्य अैसे सैद्धिक सुख की व्यावृत्ति कही सु
षुप्ति विषे बुद्धि के लयत्वतें समाधि विषे वृत्ति रहितत्ते ब
बुद्धि के सत्वतें सो कहा है और या हाने लीन होता है सुषुप्
ति विषे सो अैसे सकर्णनहीतनहीं लय होता इत्ते नैसे प्रबल
करायत है समाधिक कै लिर धृत है मल जैसे के अरच्या मादि
वं प्रवेशीत है अैसे चित्त के जो सुख होता है नहीं समर्थ होयी
तो है वास्ता कि कै विघ्न न करवे ताई सो सुख तब जो ये अंतः
करण करके ग्रहण करायत है इत्ते अंतःकरण कहीये ति
न्ध सब वृत्ति कक के चेन पहि वृत्ति कर्केनु सुखास्वादन

और ऐसा चाये निस्चै बोध कीयो है नकुं। स्वात्मन के सुख कों तहां
बुद्धि के के रिनै: संग होवे है त्ते बडे इन सुख कों अनुभव
कर्त्ता हि समाधि विषे जैसे सरवे कल्प कवरत्ते रूप प्रज्ञा
का संबंध सुखा स्वा है है तिस सुख कों व्युत्थान रूप त्वक
कै समाधि के रवेरे षित्व तें योगानि करि इस तें हीता ह
री बुद्धि साध संग को त्याग करै क्यों तिस को रिके ये ज्ञ
पहि सि वृत्ति कर चित करि सु स्वरूपों ते सर्व विरिक्त क
ध्य उत्तम सुख है ये स्य है ये पीछें वर्नन करेंगे इति २१
जहां स्थित होय चान हीं चलत तातें इस उक्त कों धड करते हैं श्लो० यं
लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः यस्मिन्स्थितो न दुःखेन
गुरुणापि विचाल्यते २२ जिस लाभ कों पायकै तिसतें और अ
धिक लाभ न नहीं मानता जिस सुख विषे स्थित होय भारी दुःख कर्के

नहीं चलायमान होता २१॰ ये कहिये जैसें सर्वै रसतें सुख आत्मसुख
के ग्रहण करिबे वृत्ति कहिये ता अवस्था विषैं सुष को पाय करि कैं क्याहू मैं रत
रहु त्यास पर स्वपा क के कैं स्थिर कि कैं और लाभ उसतें अधिक
नहीं मानता क्यों कि तें कृत्य प्राप्त भया यें आत्मलाभ तें अन्य नहीं
विद्यमान इस स्मृततें औ सर्व विषय भोग वासना कहि कैं समाधि
तें वे चलनन नहीं होता ये कहिक कैं शीत वात मच्छरादिक उप
द्रव सैं वा रामाधि है सो वे चलन नहीं होता ये कहते हैं जैसे परमा
त्म सुख मय सैं वृत्ति कहिये न कौ रवे रेषा अवस्था विषैं स्थित यो
गी गुरु कहिये महत भारी दुःख पाता है तिसमें तद्दुःख कह कैं हूं नहीं
चलायमान होता क्या कहिये तु छ दुःख कह कैं चलायमान होता
ये अर्थ है २२ श्लो० तं विद्यात् दुःखसंयोगवियोगं योगसंज्ञितं
स निश्चयेन योक्तव्यो योगो निर्विण्णचेतसा २३ इत्ते सब [illegible] ऽः

खसंयोगखवियोगकोयोगसंज्ञोतजानना सोयोगारंभेप्रथमककैं
योगतव्यहै अनेर्थविक्षिप्तचित्तककैं २१० पर्जोपरमन्तेचेतं इस
लैलेककैविकृतखेक्षुबलोककैजोतेवर्तितेक परमार्थ हका
आरंभैव्याज करचित्तकीअवस्थारवेदुषष्ठक्रहै ऐसेसखेद
वर्तितैरनैरोधको क्याचित्तवर्त्तेमपरस्वर्वदुःखखेरोधको
रचितवर्तैरनैरोधेतिनककैं दुःखखवियोगाहीसंज्ञितहै क्या
खयेयोगशास्त्रकेयोग्यहीहै ऐसेसकोखेरोधीलेरहताककैं
योगशास्त्रवाच्यजानना नतुयोगशास्त्रकेअनुकूलतातैंरवेसी
एकसंबंधकोप्राप्तहोताहै येअर्थहै तैसेभगवानपतंजलिह
सूत्रनाकर्ताभयाहै रचित्तवर्त्तैरनैरो योगकहावतहै अरयो
गोभ्यैवतदुःखहायेपूर्वकहाहै सोयेसमाप्तकीया एवंसूत्र
योगखेवेले पक्षपत्तर अवैराग्यकेसाधनत्वकरवेताईकह

२२ गौहै सो यथोक्त फल योगानें पावक कैं क्या भ्रष्ट जाचाय वच
न तात्पर्य विषे समर्थ सत्ताही है जैसें अध्यवसायक के योके
यहै क्या अभ्यसनायेहैं अन्नें वैरा चेत्तसा कहीये इतनें काल
कके योग नलिये हो या क्या है इन्नतें परें काए येअनुतापनें वे
है कहीये रतें सरहे नचितकक्कैं क्या इसजन्मविषे अथवा
है जन्मांतरविषेरसिध होवैगा क्या त्वरा करके जैसें धीर्य
जमनककै ये अर्थहैं सो येगोर पारजी कहते भये हैं
जैसें कुश्रूमयुक्तरवेकैं सन्तउ कर्द्धतें सें कहै तें सें मन कालि
मा होताहै अरवे रत इतें उतसे चन कहीये भूषण केरनेवे
कवैं ठिलका उधरा ये अर्थहै इहां सप्रसाय वेता कथा को
कहतै हैं रके साएक पक्षी के अंतरंग वेग कें हरी पतनें
ये रति सवैं पाछैं उसनें कहा समुद्र को सक्का वोहंगा जैसें पव
लहोया अपनें त्व के जैन रवेंकोऊपर डारतायें

या तब बकुल पक्षी अपने बांधवों कौं निवारण कर्यो हो याहू
नें देवपराभव कर्तो भयो यह छोककैं तहां आगतनाहे इकै कौं
निवारीत हो याहू इस जन्म विषे अपवाद आोत र विषे जो
सर्व कै सर उपाय कर कै समुद्र को सर का वाही लग्यो ऐसे सप परा क
न भियो तो सत्तैं पाछें दैव अनुकूलतें कपाल नाटिर हुतौ गरुड
को तितै सप पक्षी की सहाइ करता को भे घतानि भयो समुद्र ने रजो
त के द्रोह कै कैं नोकों नै राहर करता है ऐसे सब वचन क कैं तिं
सनें पाछें गरुड के पक्षपवनक कैं स्वकन्ताहोया समुद्र कर्यो हो
याते [illegible] ऐसो कोर तैसप ही तांई हिता भयो याइतैं ऐसे अखर
क कैं मनोनिरोधरूप परम धर्म विषे प्रवर्तमान योगी को
ईश्वर अनुग्रह करता है तो सतैं पाछें पक्षी कें मनोपयोसें
तैसका वार छीत हं सोध होता है ये भाव है इति २२

क्या करके योग अभ्यसनीय है मू० संकल्पप्रभवान्कामान् त्यक्त्वा
सर्वानशेषतः मनसैवेंद्रियग्रामं विनियम्य समंततः २४ संकल्प
तें उत्पन्न सर्व कामों को संपूर्णता त्याग करके अरु मन करके ही चहूं ओर
तें इंद्रियसमूह को जीत करके टी० संकल्प कहिये इष्ट विषयों विषे
हूं अभूत मनत्व के अरु शोभनत्व करके ज्ञान मन रने पक्ष यह तिस तें क्या सं
कल्पतें ये मुज के होइ ये मुज के होइ इत्येवरूप काम उत्पत्ति होते हैं ॥
तिन ज्ञान मन अध्यास तें प्रभव विषय अभिलाषों को विचार जन्य अज्ञा
मनत्व अरु नित्यत्व निश्चय करके ज्ञान मन अध्यास के बाध तें दृष्ट स्र
क चंदन वनितादिकों विषे अदृष्ट इंद्रलोक पारजात अप्सरादिकों
विषे अपुनरावृत पायस जैसे स्वतः ही सर्व ब्रह्मलोक पर्यंतों को अ
शेषतः कहिये संपूर्णों को वासनाइ सहितों को त्याग करके स्वतः
ही इंद्रियप्रवृत्ति के कामपूर्वकत्व तें तिस काम के हरिसत्ति विवेक
युक्त मन करके ही इंद्रियग्राम कहिये चक्षुरादिक करणसमूह को

त्तेपमनककैंसमंततः कहीयेसर्वविषयोंतेंफेरककैंशनैं
शनैउपरामकोपावयेअन्वियहै २५ शनैशनैरूपरमेद्बुध्या
धृतिगृहीतया आत्मसंस्थंमनः कृत्वानंकिंचदपिचिंतयेत
२५ शनैशनैउपरामकोपावे धृतककैंगृहीतबुद्धिकेकैंमन
कोआत्मस्थाककैंनिकधुएकचितवनाकरें भूमकाकेजय टी०
क्रमककैं शनैशनैउपरामकोपावे धृतकहीयेधैर्यकयाअ
रवत्ता त्तिसककैंगृहीतजोबुद्धिहै क्याअवग्रूपकर्तव्यतात्ति
स्वरूपाहै त्तिसककैं पश्चाकहाअवरूपहोवेगायोग क्याहै
त्वराककैं इत्येवरूप त्तिसककैंशनैशनैकहीयेएरूपरहे
एमार्गकिकैंमनकोरोके इसककैंअत्नेवेरनेपसयपूर्वोक्त
दिखायेहै तेसेश्रुतिहै यच्छेद्वाङ्मनसीप्राज्ञस्तद्यच्छेज्ज्ञानआ
त्मनि ज्ञानमात्मनिमहतिनियच्छेच्छांतआत्मनीति [illegible] नालध्याया

अहून ग्रहणन वाचार विलापनं रहितत् वाकू कहीयै लोक के कोवि
याको मनसो कहीये व्यापार वानमन रवेषरनेय षेत्तु कहीये रोके
व्यावागवर्त्ते नि रोधक कै मनोवर्त्तमानन्नु षहोवै येअर्थहै
चेहुरारहे निरोध हूत्ते समूमकारवि षेदष्टव्य है मनसो ग्रे सही
धेत्वघारस है त्तेसमनके गे ड्रिय ग्यानें ड्रिय सहकारी नानाविध
रवेकल्प साधन करता रूप कों ग्यान कहीयै जातो सो कहीये ग्या
न इसव्युत्पत्ति कर कै ग्याता रूप आत्मा रवेष क्या ग्रात्तत्वा पारध
अहंकार रवेष यो के मनके व्यापारो को त्याग करकै अहंकार ग्या
न ग्रोष होवै ये अर्थ है त्तेसज्ञान को क्या ग्रात्तत्व पारघे अहंकार
को आत्मनि कहीये महातत्त्व रवेषे क्या सर्वव्यापक रवेषयो के ग्र
हंकार द्विविधहै रवे ग्रो व्याप्त रसामान्य रूप येमेहसका पुत्र हो
इत्येव रूप प्रसिधमानताहोया रवे ग्राषरूप व्याप्त अहंकार है

सामान्यरूप

मैंहों एतावन्मात्रकोमानताहो याँ समष्टिअहंकार है सोहिरण्य
गर्भ महानात्मा कहै है सो सर्वानुस्यूतत्वतें कहियेत्व है ऐतेन अहंका
रोंकै कैं स्वविवेकनें उपाधिक ज्ञानात्मा सर्वांतर स्वविवेककरस
है इसस्वविषे महांतनि कहियेआत्माको ध्यास समष्टिबुद्धिको रोके
कै सतीको दूर अव्यक्तको हूं रोके ऐसें सतें उनिरोपाधिकतत्वं
पदार्थ लहरूप प्रत्यगात्मा साक्षात्कृत होता है प्रथमहीप्रत्य
गात्मा स्वविवेककरस्वविषे जडशक्तिरूप अनिर्वाच्य अव्यक्तप्र
कृतउपाधि है सोउपाधि प्रथम सम्बन्धी अहंकाररूप महानतत्व
नाम अव्याकृतते प्रगट होता है इसतें बाहिर स्वविषे अहंकार
रूपकंचुकै प्रगट होता है ऐसैं तैं बाहिर मनोरूपकंचुकै ऐसैं
सतें बाहिर वाणी इंद्रियरूपकंचुकै प्रगट होता है सो ये सर्व ई

तं प्रकृत करि कै कर्षित है इंद्रीयों को परे कहत है इंद्रीयों तें मन परे है मन तें बु
द्धि परे है बुद्धि तें महान आत्मा परे है महान तें अव्यक्त परे है अव्यक्त तें
पुरुष परे है पुरुष तें परे कैंचित नहीं सो काष्ठा है परमा गति है इति
तहां ग्वारहिकों खविबे जैसे वाराणी कालि रोध प्रथम भूमका है बाल मु
ग्वारहिकों खविबे जैसे सैनेरमन नस्तु रूप द्वितीय भूमका है तेऊ खविबे जैसे
अहंकार राहि है त्यत्तीय भूमका है स्वबुधूर विबे जैसे महातत्त्व राहि
त्य चतुर्थी भूमका है ऐते सइ इस भूम चतुष्टै कों अपेहा कके कै ज्ञाने ज्ञाने
उपराम कों पावे ये कहा है यद्यपि महत्तत्त्व ज्ञानात्मा कै मध्य खविबे म
हात्तत्त्व का उपादान अव्याकृता रव्यत त्व कों श्रुति ने कहा है तो हूं इतै सत्र
व्याकृत खविबे महत्तत्त्व का लेय मन न नहीं कहा सुबुधूर विबे जैसे स्व रूप ल
य प्रसंग तें अरइतैस के कर्म रूप संइते पुरुष प्रयत्न विना स्वतः ही
रसि होत्व तें अरनत्व ह्नुनि के अनुपयोगीत्व तें देखा यत है औ न बुद्धि
का कै सूक्ष्म हस्रीयों नें ऐसे प्रथम कर हि कके सूक्ष्मत्व का लि ह

मेर

ऐसैंये तैं निरोधसमाधिके अभिधानतैं अरु सो समाधि नित्वहेतु रू
पुरुषके दर्शनि साधनत्वकूं कैं अरु दृष्टत्व पुरुषके जीवन्मुक्तरू
पकूंकूंरूपतांईअपेरहितहै ननुजांतात्मारचेषेअरवेरुघजोदर्शतहै
तिसके वर्त्ततरहेतत्वकवैं सुषुप्तजैसे नहीं दर्शनि हेतुत्व इस्ते चेतन्न
स्वतः सिद्ध दर्शनि कौं निवारण करता अनुवाद है जातैं सो कहा है
स्वभावतें आत्मानात्माकार अखेद स्थित है चेतस दैव तिसका
आत्मैकत्व एकाकारताकवैं तत्वें स्फुरन अनात्म दृष्टकरें इस्ते
जैसे उत्पद्यमान घट स्वतः हीं आकाशपूर्ण हीं उत्पन्न होता है
जलतंदुलादि पूर्ण तो उत्पन्न घटविषै पाछे पुरुष प्रयत्नकवैं
होता है तहां जलादिककै निष्कासित संतें हूं आकाश दूर करबे
तांई तिहां समर्थ हूं नाय तं अरु मुख्य केदाचन संतें हूं मध्यविषै
आकाश अस्थित नहीं होता है तैसे उत्पद्यमान चित्त चैतन्य पूर्ण ही उ

सुखदुःखका स्वरूप भोगहेतु सामग्री केवश तें होता है

स्यातें होता ही है अरु तिसचितने उत्पत्ति संतें मूषा ने झिककल पुत्ता
मजैसो सुखदुःखा दि स्वरूप भोगा हेतु धर्माधर्म सह कृत सामि
ग्री केवशतें होता है तहां सुखदुःखा दि अनात्मा कार खेरा मप्र
त्ययके अभ्यासक कैनिवात्त सिंतें हूंने निर्मित चे दाकार हू
करबेता इनि ही सामर्थ्य हू जीयेत रूतें सो हेतु तें निरोधस माधि
ककैनि वृत्ति कचित्त ने ककै संस्कार मात्र की शेषता ककै असे
समत्वे ककै निरोध पाधिक चिदात्म मात्र के अभि मुख त्वतें वृत्ते
रवेनाही निर्विघ्न आत्मा अनुभवे कराय त है तातें ऐ कहते है आ

त्मसंस्थं मनः कृत्वा न किंचिदपि चिंतयेत इस्ते आत्म कूं हायेनिरो
पाधिक प्रत्यकू चेतन्य विषै है संस्था कहायेस माधिजे सकी सो
केहाये आत्म संस्थं कृपासर्व प्रकार वृत्ते अन्यखमा वसोह
आत्माकार मात्र विनी ए मैसो मनको कर्के धीपूर्वक कर्कै नाहीत
रबेवक बुद्धि ककै रसाधक कैसा वृत्तातस मापि विषै स्थित हू

कैसा

योरकें चित्त कहीये अनात्मा वा आत्मा कों नरचित्त वनाकरे क्या
नेचरत्ते के कैरविषयकरे क्या अनात्माकार वृत्ते सें रतेंनें प्र
य कर व्युत्थान होहोताहै अरु आत्माकारवृत्ते सें रत्ते संप्रज्ञातस
माधि होताहै इस्सातें असंप्रज्ञातसमाधि कौ रसोध्यते निरमित्त
रके सहीर चित्तवृत्ते कोन उत्पत्ती करे ये अर्थ है २८ असे निरोध
समाधि को कहि हियाया गी सू० यतो यतो निश्चरति मनश्चंचल
मस्थिरं ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत २७ जहां जहां चंच
ल अस्थिर मनरविचरे नेहां तहां ते सनकोरोकोक कैं आत्मा हीरविष
वसु करे टी० चित्तरविहे पहेतुराहारिकोके मध्यरविषे रजे सरजे स
रनेरमित्त भूत ग्राहारिकोरवे षयतें अरु राग द्वेषारिकते चंचल कही
येरवे हे पके सनुरव होया मन निश्चरते कहीयरवे हे न होयारविष
यानि सुखी प्रमाण विपर्यय विकल्प स्मृतीयों के मध्यरवे षरके
सीए के रुसमाधि रवे रोधकनी वृत्ते को उत्पत्ति करे अरते स रतय

रनिद्रानें उत्पत्ति होय रजगुण सें कामे सो साघधान नहीं ॥ अथवा पूर्व किरी त्या स्वरै तें ग्रेषजो निद्रवृत्ति पंचमहे १

हेसु निद्रा नोगें बहु भोजन आलस्य प्रमादि कर के मध्य रवेषे जैसें सत्ते सत्रेमें तत्ते अरुस्थिर कहीयें लयपाल्येमें सुख होया मनलें खस्ति कहीयें लयनहोया समाधि रवेरोधनी निद्रा रुप्य वृत्ते को उत्पत्ति क रताहे रतें सत्ते सत्तें क्याखे हे परन्ते मेंते अलयल्ते रमेतत्ते इस मनको रोककर के क्यानि वृत्ति कर के आत्मा ने कहीये स्वरुप कोप्राप्त परमानंद रुप स्वरुपविषे चक्राकर क्यारोके जैसें न रवे रहे प्रहे वेनलय होवे एव प्रकार समाधि के अनात्मगोचर तत्व को दूरकर्ता है यें रवे वस्ते है गौर याचार्य पा संते पांच पक्षोको कके श्लोक ७५

येन निग्रहीया दिहि नकामभोगयोः सुगसन्नेल ये चैवय याकामोलयस्तपा १६ः खसर्वं मनु मनुष्य कामभोगान्निव र्तयेत् एवं सर्वं मनु मन्सजातनै वतुपश्यति २ लयेश्री बोध येचित्तं विक्षिप्तं चाम येन्मुनः सकपा यं विजानीयात्समप्राप्तं

न चालयेत् ३ नास्वादयेत्सुखं तत्र निःसंगः प्रज्ञया भवेत्
सर्वतो निश्चरच्चित्तमेकी कुर्यात्प्रयत्नतः ४ यदा न लीयते
चित्तं न च विक्षिप्यते पुनः अनिंगनमनाभासं निष्पन्नं ब्रह्म
तत्तदेति ५ उपाये कहीये वैराग्य अभ्यास कर के कामभोगों
विषे विरह प्रकहीये प्रमाद विषय पर्वत कल्पस्मृतियों के मध्य विषे
बेर केसाए कव त्तीक के यदिलामी मन को लेगलं यात कहीये रोके
आत्माविषे येन्य यहि कामभोगों विषे आसेवित्यमान अवस्था अर
भुज्यमान अवस्था भेद कर द्वय वचन है तैसे लीन होवे इस विषे
सो कहीये लये क्यासषुप्ति से विषे स्वप्न सचकहीये यत्न कर के
वर्जिते हूं मन को रोके ही जे स्वप्न सत्र है मन तो के से रोकीयत है त
हां कहीयत है यथा काम क्या जैसे कामर विषयां गोचर प्रमाद विषे विरत्ते
के अभ्यास कर के समाधि का विरोधी है तैसे लय हूं त्रैव्यवहारते के
अभ्यास कर के समाधि का विरोधी है सर्व विरत्ते विरोधी ने निश्चय कर

समाधिहै इसतेंकामादिकनरवेरूपादिकतेंजैसेभूमादिकतो
लुपतेंहै मनरोकबेयोग्यहै येअर्थहै ७ उपायकरकै मनकोरोकै सो
रकिसउपायकरकै सोकहतेहैं सर्वदैतअखेपाककैंविलसैतअ
लाकरूपदुःखहीहै ऐसेवारवार स्मरणकरकै जोबडाहै सोसुखरूपहै
नअल्परूपसुखहोताहै तातेंजोअल्पहै सोमर्त्यहै सोदुःखहै ऐसे
अनुसंधर्यकोएकरूपदेखतेंपीछेविचारकरकै कामकहीयेसीत्यमा
नेअवस्थारूपरचैविषयोंको अरुभोगानकहीयेउत्तमानअव
स्थारूपविषयोंकोनिवृत्तिकरि मनकाकुलतेयेभोषहै काम
अरुभोग सोकहीयेकामभोग इतेसतैमनकोनिवर्त्तिकरियेअर्थहै
अथवा ऐसेदैतस्मरणकालखेदै वैराग्यभावनाउपायहै येअर्थ
है अरुहेतुखेस्मरणतुपरमउपायहै येकहतेहैं अजे कहीयेअल
हैसर्वनितेसतेअन्यहेकुछू ऐसेसन्यासआचार्यकेउपदेशतेंपीछै
स्मरणकरिकै इतेसतैंयेपवीतकहीये वेजातकोनहरखेही अप्पि
नेस्वातेसोत्तेकरत्वोतनकेअभावतेंपूर्वउपायकोअपेहाककैवेल
अजातकहीयेस्वपरातर

हरणताकौं जातिविलोकनेसौतनुहूं ६हे २ ऐसे वैराग्यभावना अरु
तत्त्वस्मृतिकरिकैं विषयोंतें निवर्त्यमान चित्त जे रहनरहिनलयअभ्या
सवस्तुतें लयकेसंमुखहोवै तबतिनेउत्पन्नअजरादिकुयेजेनष्ट
मलयकाकारतालक्षणजोकेतिनेरोधककरिकैं चित्तकोभलीप्रकार
प्रबोधकरे अप्राप्तप्रयत्नकरिकैं जेपुनः ऐसेप्रबोध्यमानहोयासुचि
त्तरहिनरहिनप्रबोधाभ्यासवस्तुतें कामभोगोंविषेखेदेपूर्वहोवैत
तवैराग्यभावनाकरिकैं अरुतत्त्वस्मरणात्कारकरिकैं पुनःशांतिकरे
ऐसेपुनःपुनः अभ्यासतेंलयतेंभलीप्रकारबोधितअरुविषयों
तें व्यावर्तितनसमप्राप्तचित्त अंतरालअवस्थाविषेस्थितस्तब्धी
भूत अरु कषायोंसहितरागद्वेषादिप्रबलवासनावस्तुकरिकैं
स्तब्धीभावहै नामजेसका ऐसेकषायरूपहोयककैं सुखकोंचि
चोंकेरवेजानीयातें व्याससमाहितचित्ततें विवेककरिकैंजाने तैसतैं
नहींयेसमाहितेंऐसेजानकरदलयरवेहपतेंजेसेकषायतेंभी

बा कैंया है

तास्तिसर

रवेचत्रकोरोके ऐसेसत्तोलयरवेहूप कषायपर इत्तसंतैपरन्तु
अपनें चित्तकवैं सम्यक्ष्युत्नपाईयत्तहै सोसमप्राप्तचितकोक
षायलयभ्रातकवैं नचलायमानकरे अपारवेषयान्स्त्रमिमु
खनकरे किंतुधार्यककैंगहीत बुद्धिककैंलय कषायप्राप्त
तैसमैनककैं ऐसेसहीसमप्राप्तविषेआनेयलकवैं रवचेत
करे ३ तहां समाधै [illegible] परमसुरवध्यंजकसेतिहंसुरवको
नआस्वादनकरे अपाइतैनाकालमैसुरवीहोताभयाहो येसु
हीफलतव्यारव्यानहै प्रज्ञाककैं पाईयतहैजोसुरव सोअरवैपा
धककैंप्रकल्पितहै मृषाहीहै ऐसीभावनाककैंसर्वसुरवो
येषेनिःसंगनिस्पृहहोवे अथवा सर्वविकल्पसुरवाकारव
सोरूप प्रज्ञासाधसंगकोत्यागकरैं ननुरूवरूपसुरवकोहंस्नेऽ
तवकचित्तककैंनअनुभवकरे स्वभावककैंप्राप्तितैसमु

खके इहर कारबेतां ईश्वराकपालतें औरसेसर्वत्तें रनेवर्रत्तिरनेपव
लेप्रयत्नवप्राकु कैं हतरचैत्तकोस्वाभावचांचल्यतें खेअयारमे
मुखत्ताकवैंरनेपत्र रत्तकहायेबाहिर जात्तेकोएकीकुरुयात्तप्र
यत्नतः क्यारनेरोधप्रयत्नकेकैं सम्प्रज्ञत्वचेषएकत्ताकोप्राप्त
करे ४ सम्प्रज्ञात्तचेत्तकीहइ्र होत्ताहै सोकहीयत्तहै जबनली
नेहोत्ताहै नेहंरत्तप्रधहोत्ताहै तामसत्वे सामलपत्रुप्रहकके
हांस्तत्प्रीभावकेउपलहरयतें औरपुनःरवेह्रपकोपावत्ताहै ने
ग्रस्तरिकेन्अकारवत्तेकोअनुभवेकरत्ताहै अरनहंसुखको
आस्वादनकरत्ताहै राजसत्वसाम्पसुखास्वादकेहंरचेहपकोआ
रकैकेंउपलहरयतें प्रथमभेदहनहै अनुप्रयकप्रयत्नकेक
रत्ताहै कोईकहाहै औरसेलयकषायोंकके अररवेहपसुखास्वादो
ककैंअत्लेगानुकहाये ध्यानकहायेचलने सवात्तप्रदीपकेसेलया
अभेमुखरूपत्तेलकके रहित क्यात्निर्वात्तप्रदीपककेतुल्य अर
आस्वादेबमेदकरजो चारदोषरूपककैंकहे है सोसेहोकेरिवाधकउपायोंकेसिद्ध

अनाभास वयानरके सीएकर विषयाकार ककै भासे येअथ हि
कषाय अरु सुखास्वाद होवे ये दोनो का अंतरभाव कहा हीं हैं
जब अैसे दोष चतुष्टय ककै रहित स्थित होता है तब सो स्थित अ
सन अैषा प्त होता है बयासमवलन को प्राप्त होता ही है ये अथ यहि ए
स्ता ह्याया योगाभ्यास के कै प्रति पार हित हे जब ये च हूं ज्ञानम वस
दृत स्यत होते हैं अरु न बुधि चेष्टा करता है तिस को परमाति
कहते हैं तिस को योग अैसे मानते हैं स्थिर इंद्रिय धारणा को
॥ तब अप्रमत्त होता है भव अरु अप्रयय अैसे जो योग है एतन्मूल
क योग है स्थितवत्तै निरोध योग है अैसे स[illegible]कार कहता है सा
तै पुकाहै ये जो तिहां तिहां ते [illegible] ककै तिस चित को आत्मा ही वि
षे स्थित कर ये अर्थ है [illegible] अैसे योगाभ्यास बल ते आ
त्मा ही विषे योगी का मन [illegible] लीन होता है तिस ते पीछे श्लो० प्र[illegible] तिम

है

नसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमं उपैति शांतिरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषं ॥२७॥
प्रशांत है मन जिसको और शांत है रजोगुण जिसको ब्रह्मभूत है और अ
कल्मष है ऐसे इस योगी को उत्तम सुख प्राप्त होता है टीकाकर्ता
के कै शांति क्या है वृत्ति कर्ता कवे निकट है सो स्वार मात्र शोषमन की
सको सो कहिये प्रशांत मनसं क्या वृत्ति शून्यता कवै निर्मनस्क है
सो मनस्क विषे हेतु गर्भित विशेषण है शांत रज से अकल्म
षं क्या शांत है लय विक्षेप रूप रजोगुण जिसके सो कहिये शांति
रजस लय विक्षेप शून्यता कवै नहीं है प्रमाण कल्मष कहिये लय हेतु
तम जिसके सो कहिये अकल्मषं क्या लय शून्यं अथवा शांत र
जसं इस कवै हेतु गर्भित को उपलक्षण है और अकल्मष कहिये
संसार हेतु रूप धर्माधर्मादिक रहित है ब्रह्मभूत कहिये ब्रह्म
ही है सर्व जो है सो निश्चय करके समस्त ब्रह्मता को प्राप्त है क्या जी

वनमुताहै ऐसेयोगीकों ऐसेउक्तप्रकारकरकैऐसेयाअधिरजोकिहते
है उत्तमकहीयेनिरतिशयसुखउपेतकहीयेप्राप्तहोताहै मनमैं
तो वृत्तिकेअभावसेतौसषुप्तिविषेस्वरूपसुखकीआविर्भावकी
प्रसिद्धकोजनावताहै ६ ॥ २७ तैसेपूर्वव्याख्यातहै सुखमात्यंत
केयत्ततईहां २७ उत्तमसुखयोगीकोप्रसिद्धकरतेहैं श्लो॰ युंज
न्नेवंसदात्मानंयोगीविगतकल्मषः सुखेनब्रह्मसंस्पर्शमत्यंतं
सुखमश्नुते २८ विगतकल्मषयोगीऐसेसदैवआत्माकोजुड
ताहोयासुखेनब्रह्मसंस्पर्शरूपअत्यंतसुखकोपावताहै एवं
कहीयेमनकरकैं इंद्रियग्रामकोइत्यादिकउपक्रमकरकेआ
त्मानंकहीयेमनकोसदायुंजनकहीयेसावधानकरताहोया यो
गीकहीयेयोगकरनेतेसंबंधी विगतकल्मषकहीयेविग
तमलवसात्संसारहेतुधर्माधर्मरहित सुखेनकहीयेअनायास

करिकै क्याईश्वर प्रणिधानतें सर्वविषयकी निवृत्ति करिकै ब्रह्मसंस्पर्श
कौं समर्थ्य करिकै निरस्त है विषयसंस्पर्श जिसकें सो है ब्रह्मका स्प
र्श किया तासमय तें जैसे विषे सो विषयोंका असंस्पर्श ही ब्रह्मस्वरूप
स्थिति अत्यंत कहिये सर्वअंतःकरणपरणति हैं कहिये सामर्थ्यकों अत्य
ंतहैं ऐसे निरतिशय सुखकों आनंदकों प्राप्त होताहै क्या
सर्वतें निवृत्ति चित्त करिकै लिय रखे है पतंजलि हरिकों अनुभव क
ताहै ऐसे हीं विषयवृत्तिके सत्वतें अरक्ष विषे मन के स्वरूप
कें असत्वतें सर्ववृत्ति अनास्पद ध्यानमनक कैं सुखकों अनुभव हो
ताहै समाधि विषये अथ हैं इहां अनायासेन इसका तात्पर्य करिकें
संसारायोंकी निवृत्ति कही ये अंतराय दिखाये हैं योगसूत्रक कैं
व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादालस्याविरतिभ्रांतिदर्शनालब्धभूमिक

त्यौं न वस्थितत्वानि चित्तविक्षेपास्तेंतराया ॥ चित्तकौ विक्षेप करें
ते या योग के अंतराय कहावे चित्तविक्षेप करा योग प्रतिबंधक सो नव
ये अन्तरस्मात स्मूनें तौलौ चित्तस्म्पताकके चित्तनिरोधकेसा
क्षात्प्रतिबंधक होहि अरु व्याध्यादिक नुस प्रवृत्तिके सहचारता
करकै इतीसके प्रतिबंधक ही है ऐसें अर्थ है व्याधि कहावे धातुवैषम्यादि
निमित्तक विकार ज्वरादिक स्त्यान कहावे अकर्मण्यता कयारुहु
का कैसी इच्छा मानके हू आसनादिक कर्मों विषें अप्रवृत्ति ऐसें अ
र्थ है योगसाधनीय है वा नहीं ऐसे उभयकोटस्पर्शी ज्ञान
संशय है इतीसके स्वरूप प्रतिष्ठभेलकके विषय यद्यपि अंतर
प्राप्त होया याहु उभयकोटस्पर्शी चित्त अरु एककोटस्पर्शी चित्त
रूपमे हवे ... कोटि रवे हाक कै ईहा विपर्यर्यतें भेद कर

किं सीए कवे
रा॰ ३ न
बयरविवे ५

के कथैत है प्रमाद कहीये समाधि साधनो को न अनुष्ठान करबे
को स्वभाव क्या विषयांतरों को व्याप तेता कके योगसाधनो विषै उदासी
नता आलस्य कहीये उदासीन की प्रवृत्ति संरत्ति है कफादिक कके अरु
तमोगुण कके शरीर अरु चित्त को गुरुत्व सो व्याधि ते कके अप्रवृत्ति
है योग विषै प्रवृत्ति को विरोधी है अविरति कहीये चित्त को विषय भेद
विषै एकांत के अभिलाषा भ्रांतिदर्शन कहीये योग के असाधन विषै
है योगसाधनत्व बुद्धि तैसे योगसाधनत्व विषै है असाधनत्व बुद्धि॥
अलब्धभूमिकत्व कहीये समाधिभूमि एकाग्रता को अलाभ क्यार है प्र
मूह विरहे प्ररूपत्व ये अर्थ है अनवस्थितत्व कहीये समाधिभूमि
लब्ध संति है प्रयत्न शैथिल्य तें तहां चित्त को अस्थिरत्व वे पंह नव
चित्त विक्षेप है योग मल योग प्रतिपक्ष है अरु योग अंतराय औ सो कहीये
तो हैं दुःखदौर्मनस्यांगमेजयत्वश्वासप्रश्वासाविक्षेपसहभुवः
दुःखदौर्मनस्यअंगमेजयत्वश्वासप्रश्वासये विक्षेप के सहोत्पन्न हैं

बाह्यवायुका अंतःप्रवेशन सो समाधिका अंगरूप जो रेचक वायु है तिस
का विरोधी है अरु प्रश्वास कहीये
दुःख कहीये चित्त का राजस परिणाम बाधनालक्षण सो आध्यात्मि
जीउ
के शरीर संबंधी अरु मन संबंधी व्याधि वशात् अरु कामादि वशात् हो
ता है आधिभौतिक व्याघ्रादि जानें तें होता है आधिदैविक ग्रहपीडा
दि जनित होता है सो द्वेष्य आरव्या विपर्याय हेतु तें तिस समाधि का विरोधी
है दौर्मनस्य कहीये इच्छा विघात तें इक बलवत् दुःखानुभव ज
नित चित्त का नाम सपरिणाम विशेष क्षोभ होता है अरु प्रपर्यव्याप
रिजे सका जैसो चित्त का सत्व भी भाव सो तो वासना तें कल्पित लय को स
समाधि का विरोधी है अंगमेजयत्व कहीये अंगों का कंपन सो
आसन के स्थैर्य का विरोधी है श्वास कहीये प्राण करके कोष्ठ वि
षे स्थित वायु का बाहेर निकसन सो समाधि का अंग जो पूरक
रूप वायु है तिस का विरोधी है ये दोष समाहित चित्त के नहीं होते
किंतु विक्षिप्त विक्षेप रूप चित्त के होते हैं इसी हेतु तें विक्षेप साथ उत्पन्न होते

यापहीहै येअभ्यासअरुवैराग्यकवैनिरोधव्याहीहै अरुईश्वर
केप्रणिधानकवैनिरोधव्याहै तौअसवेगीकोनिकटवर्त्तीसमा
धिलाभप्रसंगप्राप्तसोतेईश्वरकेप्रणिधानतेंहोताहैअथवा
औरसाधनहोतरकहाहै प्रणिधायकहीवेप्रणिधानकवेयोग्यक्या ॥ ६४
ईश्वर क्लेशकर्मविपाकआशयकरकाहूकालकैअपरामृष्ट
क्याअस्पर्श पुरुषविशेषईश्वरकहावतहै तत्रनिरतिशयं
सर्वज्ञबीजं सपूर्वेषामपिगुरुः कालेनानवच्छेदादिति तहां
ईश्वरनिरतिशयसर्वज्ञबीजरूपहै सोपूर्वकाहूगुरुहै काल
कवैअनवच्छेदते औसंतानपरंपराकोकर्कै ईश्वरकोप्रतिपादनसंजो
कवैतैसईश्वरकेप्रणिधानकोहृदयसंयोककैसूचनकर
तेअथयहै तस्यवाचकःप्रणवः तज्जपस्तदर्थभावनमिति ततःप्र
त्यक्चेतनाप्यधिगमोप्यंतरायाभावश्च तोसईश्वरकोवाचकप्रण

वहे ऐसे इसका जप अरु ईश्वरके अर्थका भावन ऐसे करते प्रत्यक् चेत
नका अधिगम कहं अरु अंतरायका अभाव होहे ऐसे कर्ते प्रणव
जप रूप ते अरु ईश्वर के प्रणिधान रूप ईश्वर प्रणिधानते प्रत्यक् चेत
न पुरुष का अरु कर्ते खेवेक कर्के अधिगम कहाये साक्षात्कार होता है
॥ उक्त अंतरायों का अभाव हू होता है ये अर्थ है अभ्यास वैराग्य कर्के अं
तरायों की निवर्त करने का कहते अभ्यास की घडता अर्थ कहते हैं तत्प्रति
षेधार्थमेकतत्वाभ्यासः इन अंतरायों के प्रतिषेध निमित्त एक कि
सी अभिमत तत्व विषे अभ्यास कहाये चित्त का पुनः पुनः स्थापन
कर बेयोग्य है तैसे मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षा सुख दुःख पुण्याप
ण्य हे विषय जिन्हों का ऐसी है तिन्हों की भावना ते चित्त का प्रसा
द होता है मैत्री कहाये सौहार्द करुणा कहाये कृपा मुदिता कहि
ये हर्ष उपेक्षा कहाये उदासीनता सुखादि युक्तों के सुखादि वान
प्रतिपादन कराये ते हैं सुख संभोग युक्त सर्व प्राणियों विषे साधु

है ये सर्व मित्रो का सुख वित्त ऐसे १ मैत्री को भावना करे न तु ईरषा को ॥
दुःखितो विषै करुणा की दुःख निवृत्ति होवे ऐसे कृपा ही की भा
वना करे न उपेक्षा को न वा हर्ष को पुण्यवानो विषै पुण्य के अ
नुमोदन करके हर्ष को करे न तु वैद्वेष को न अथवा उपेक्षा को करे
अपुण्यवानों विषै उदासीनता ही की भावना करे न अनुमोदन को न
वा द्वेष को ऐसे भावना करते इसके शुद्ध धर्म उदय होता है अरु त्ति
स तै पीछे खिंच जाती है राग द्वेषादिक मल जिसका ऐसा चित्त प्रसन्न हो
या एकाग्रता के योग्य होता है अरु मैत्र्यादिक चतु उपलक्षण रूप हैं र
अमयं सत्व अस्तेय इत्यादिक धर्मों का इन सबों कि शुभ वासना रू
प त्वक के मलिन वासना के निवर्तक चित्त राग द्वेष रूप मल के उल्लूत
है सर्व पुरुषार्थ के प्राप्ति बंध करते है वे उपलक्षक के ये ईश्वर करबे योग्य
है ये सब का अर्थ है ऐसे अभ्यास प्राणायामादिक उपाय चित्त

केप्रसादनतेंरमतरदिखायेहैं सोयेचित्तकाप्रसादनभगवद
नुग्रहकरकेंजिसपुरुषकोंहोयाहे तिसप्रतियेवचनकहेहैं
सुखेनब्रह्मसंस्पर्शमित्ति अन्यथामनकेंप्रशांमताकीअनुप
पत्तितें २८ सोऐसेहीनिरोधसमाधिकरकेंत्वंपदलक्ष्य अरुतत्
त्पदलक्ष्यप्रत्यक्षसाक्षात्कारसंसतिसेंज्ञाताकेएकागोचरतातत्त्वम
सीतिवेदांतवाक्यजन्यनिर्विकल्पसाक्षात्काररूपावृत्तिवि
तसेंअविद्याअरुमेंधानाउत्पत्तिहोतीहै अरुतिसतेंपीछेसंपूर्ण
अविद्यातत्कार्यकीनिवृत्तिकरकेंअत्यंतब्रह्मसुखकोंभोक्ताहै
ऐसेयेउपपादनकरतेहैंतिनपद्योंकोकरकें तहांप्रथमतत्त्वं
पदलक्ष्यकीउपस्थितिकोकहतेहैं श्लो० सर्वभूतस्थमा
त्मानं सर्वभूतानिचात्मनि ईक्षतेयोगयुक्तात्मा सर्वत्रसम
दर्शनः २९ सर्वभूतविषेस्थितव्यापकोंअरुसर्वभूतोंकोंआ
पविषेदेखताहे योगयुक्तात्मा सर्वत्रसमदर्शनिहोया

अनुपपत्ति

सर्वभूतोंविषेव्याप्यावरजोंमनुषादिकोंविषेभोक्तत्वकहैं तिसि
तेरकहारलेत्यारविमुख्मात्माकोव्यापकत्यक्रूचेतन्यसाक्षीपमार्थि
सत्यस्थानेरयन्कोसाक्षीतोंनेव्याअनंतजउपारेहिंग्रकुरवरू
पोनेरविवेककरके ... देखताहै व्यासाक्षात्काररताहैअपरतेस
आत्मासाक्षीविषेसर्वभूतोंकोव्यासाक्षरूपोकोअध्यासि
कसंबंधकके भोगयताकरकेकल्पितोंकोसाक्षीआरसाक्षके
संबंधांतरकेअनुत्पत्तितेत्समेघ्याभूतपरिरंघ्रजउकुरवरू
पोको साक्षीतेरविवेककरकेदेखताहै कौन योगयुक्तात्मा योग
ककेनिर्विचारवेशारघरूपककेपुरूकंव्याप्रसादकोप्राप्त
है आत्माकहीये अंतःकरणजेसकासो तैसपूर्वहीउक्तहै नि
र्विचारवेशारघासेतिअध्यात्मप्रसादहोताहै तहांक्रतंभराप्र
ज्ञाहै सा श्रुतअनुमानप्रज्ञातेअन्यविषयाहै विशेषार्थत्वात
इति तेसस्ते श्रुतअनुमानकरकेअगोचरव्यापरविशेष
वस्तुगोचरयोगजप्रत्यक्षरूपऋतंभरसंज्ञककरकेएकस

व्युत्थानसंस्कार१ संनिरोध१ आत्माका१ अनात्मा प्रेम१

और सूक्ष्म अरु ब्यवहित को औरबै प्रकृष्ट सर्वको तुल्यहीं देखता है
इसीतें सर्वज्ञ समर्थ कहूनि है तिसके ऐसे सर्वज्ञ समर्थ कहूनि होया
आत्मा को अरु अनात्मा को योगयुक्तात्मा यथावस्थित देख
ता है ये युक्त है अथवा जो योगयुक्तात्मा है अरु जो सर्वज्ञ समर्थ
कहूनि है सो आत्मा को देखता है ऐसे योगी अरु समर्थ कहि आत्मे
करा विवेक अधिकारी कहे हैं जैसे होए चित्तवृत्ति निरोध सो ही
के अरु सो ध्यै सो हान्या का रवैषै हेतु है तैसे जड के विवेक कै कैसे
बन्धि स्यूत चैतन्य का पृथक करणा है सो ही सो ही के साक्षात्का
र का हेतु है न अवतूपक योग नहीं अपेक्षित है इसी हीतें कहते हैं
योगसिद्धि नो य्या० डोकमे चित्तनाशस्व योगो ज्ञाने चराधव योगोव
रतें निरोधोऽहं ज्ञाने समाधि वेदतां१ असाध्यः कस्यचित् योगः कस्यचि
हि त्तत्त्वनिश्चय प्रकारे द्वौ नतौ देवो जगाद परमः शिवः इति चित्तनि-
रोधके सोही तें तडुपाधिभूत चित्त के पृथक करण तें तिस चैतन्य के जो
दर्शन हैं तिसका उपाय दूय है एक संप्रज्ञात समाधि दूसरा असंप्र

ज्ञानसमाधि॥ संप्रज्ञातसमाधि विषे निष्पापक कैं आत्मेनाकारवृत्ति प्रवा
हपूर्वक अंतःकरणसत्वं साक्षी कैं अनुभव करीयतु है ॥ निकष सर्ववृत्ति के
अंतःकरणसत्वतु उपन्न तो तत्वतें साक्षी कौं नहीं अनुभव करीयतु है पेवि
शेष है ॥ उत्तीयतु साक्षी विवेकत्वेन साक्षी अनुवर्तते नहीं है साक्षी तिंतु प
र्यपि स्वरूप केवल विद्यमान है पर वेचार है तहां प्रथम उपाय को प्रपंच कैं प्रमो
र्यता वार्ताहि रस्या गाभीर्यिक प्राप्त होते भये है ॥ इति श्लोके प्रमाणिस्पष्टिता के अर्द
ध्यनि कैं साक्षी के दृष्टनिवेशनेरोधतें अतिदृढ उपायके असंभवतें
अरण्यमात्र ग्राक्तन भगवत्पूज्यपाद मताव जीवी अपने बहुतु प्रपंच के अन
तवाद ही उत्तीयहि उपाय को प्राप्त होते भये है ॥ इति श्लोके निष्पापक कैं अधि
ष्ठान ज्ञान के दृढत्व संतति तहां कल्पित कैं बाधित दृष्टकु चित्त अरु दृश्य
का अर दृष्टि निअनायास क कैं प्राप्त होता है ॥ इसी तें ही भगवत्पूज्यपाद
कहा है प्रसिवेत्या के योग की अपेक्षा को नहीं उत्पत्ति करते भये ॥ इसी
तें ही अपने बहु परमहंस प्रवृत्ति प्रते पादित्त वहां तत्वाकर विचार विषे
ही गुरु को प्राप्त होइ कैं प्रवृत्त होते है ब्रह्मसाक्षात्कार ॥ निरमित्त नो
केवल अपनो स्वरूप जो ब्रह्म को जान्याच हतें है ॥ इति श्लोको ३

योगरवैषप्रवर्त्तेहोतेहैं विचारककैंहीचित्तदोषकेंनिराकरणोंक
कैंलिसवप्रलेपकाहाल्कारकेअन्यथासिधत्वतें इसीतेंक्याहैंअधिक
कहेणोकके इति २२ अवसुप्रसत्नेपदार्थकोनिरूपणोककैंप्रस
तत्वदार्थकोनिरूपणोकरत्तेहैं श्लो० योमांपश्यतिसर्वत्रसर्वंचम
यिपश्यति तस्याहंनप्रणश्यामिसचमेनप्रणश्यति ३० जोमोको
देखताहैसर्वत्रअरसर्वकोदेखताहैमुजविषैतिसकेमैनहींदूर
होताअरसोमुजकेनहींदूरहोता जोयोगीमुजईश्वरतत्वदार्थको
क्याअन्योपप्रपंचकाकारणमायाउपाधिकस्वरूपको उपाध
केविवेककरकैंसर्वत्रप्रपंचविषैस्फूर्त्तिरूपअवस्थरूपकरकें
अनुस्यूतसर्वाधिष्ठानविनिर्मुक्त परमार्थसत्यज्ञानंदघनअनं
तकोदेखताहै क्यायोगजप्रत्यक्षकरकैंअपरोक्षकरताहै तैसे
सर्वप्रपंचजातकोमायाहीककैंमुजविषैआरोपितमसत्मेव
ताककैंमृषात्वककैंहीदेखताहै तैसेअैसेविवेककरज्ञानीके

तेस्वं ४

तन्नेमाली ऐसे वाक्य का विषय सो ना पीली है

मैतत्त्व सारूप्य भगवान्‌ न प्रकास्यामि क्या ईश्वर को इक
मुजते ऐसे ग्रह है ऐसे परोक्ष ज्ञान का विषय न होवो ॥ किंतु योगज
अपरोक्ष ज्ञान का विषय होवो यद्यपि वाक्य जन्य अपरोक्ष विष
यत्व पक्ष पाती अभेद कथै है तो हूं केवल तत्त्व सारूप्य किन्हीं सो योगज
अपरोक्ष ज्ञान कथै विषयत्व बतावता ही है ऐसे योगज प्रत्यक्ष
कथै मो को अपरोक्ष कर्ता होया सो मुजते न हो प्रत्यक्ष होता क्या
नहीं परोक्ष होता क्या स्वात्मा नाहिं है मुज का सो विद्वान अति प्रय
त्नते सर्वदा मुज के अपरोक्ष ज्ञान का गोचर होता है ये पद्या मा
प्रप घंते ता सद्यैव भजाम्य हं इस उक्तते अरु तैसे बालक विहा वि
बसे स्थित भी अध्यान के विषे ईश्वर प्रति भगवान कथै कह्या
ताते अरु विद्वान्‌नु आत्म रूप होयें हूं भगवान्‌ को नहीं देखते इ
सीतें भगवान्‌ तिस को देखता हूं नहीं देखता सो ये भगवा

कथै है २

नष्टवैहोतहोयानहे अंगीकारकरताइसप्रकृतिनै खेद्यानतुसहै
व[illegible]लिकीटहै भगवानकेअनुग्रहकापात्रहै येअर्थहै ३०
जैसेसत्वपदार्थअरतत्वपदार्थप्रथककोलेरूपताककैतत्वमसि
इसवाक्यार्थकोलेरूपताकरतेहैं श्लो० सर्वभूतस्थितंयोमां
भजत्येकत्वमास्थितः सर्वथावर्त्तमानोपिसयोगीमयिवर्त्तते
३१ सर्वभूतांविषेस्थितजोमुजकोभजताहैएकत्वकोआस्थि
तहोया सर्वथावर्तमानहोयाहू सोयोगीमुजविषेवर्तताहै टी०
सर्वभूतांविषेअधिष्ठानताककैस्थितसर्वानुस्यूतसन्मात्र
मैईश्वरतत्वरूहकोअरूपतोत्वंपदलक्ष्यरूसाथ एकत्वकोआ
प्रत्यंतामे रूहकोआस्थितहै घटाकाशमहाकाशहै ईहांहीउपा
धीमे रूकोलेयाकरताककैविचारताहोयाजोभजताहैक्याअ
हंब्रह्मास्मिमेसेवेदांतवाक्यजन्यसाक्षात्कारककैअपरोक्ष

अथवा

कर्त्ता हि सो अरु वे घा अरु तत्कार्य की निवृत्ति करि कैं जीवन्मुक्त
फल कृत्य होता है अरु जौलों ऐसे के बाधितानुवृत्ति करि कैं सं
सारादि इन्हों न अनुवृत्ति होता है तौ लौं प्रारब्ध कर्म के प्राबल्य
तैं सर्व कर्म के त्याग करि कैं याज्ञवल्क्यादिकों जैसे अथवा विहित
कर्म करि कैं जनकादिकों जैसे अथवा प्रवृत्ति बिध कर्म करि कैं द
त्तात्रयादिकों जैसे सर्वथा व्यासादिकों जैसे कि स्वरूप करि कैं हीं वर्त्तमा
न होया हूं क्या व्यवहार कर्त्ता होया हूं सो योगी भला हूं मैं औ ऐसे
जानता होया मुझ पर मातार विषै अनेक करि कैं वर्त्तता है सर्वथा
ऐसे के मोह प्रवृत्ति नहीं प्रवृत्ति बंधनूं का ऐसे के निष्प्रपंच कर्के
न देवता अरु न भूत समर्थ होते हैं आत्मा हीं निष्प्रपंच करि कैं द्र
ष्टा के होता है इस प्रकृति तैं यद्यपि देवता महाप्रभाव हैं वे हूं
ऐसे सज्ञानवान् के मोह के अभावतांई नहीं समर्थ होते और

दुःखका कहीयें पै अप्राप्यहि व्रतलवेदके नै बे धक मैं विषे प्रवर्त्त
कर्मो रागहै पहै त्ति क्रो के अ संभव क कैं निषेध कर्म कि अ
संभव संतै है सो अंगीकारक कैं ज्ञान के स्तुताध्य के कहा है
सर्वथा वर्त्तमानोपि हत्वापि स इमांल्लोकान् हंति न स निबध्य
ते इत्यादि वैसे ३१ असे तत्व ज्ञान उत्पत्ति संतै कोई एक मनोनाशवास
नाक्षय के अभाव तें जीवन्मुक्त सुखको न ही अनुभव कर्त्ता अरु
चित्त रवि हयपक कैं दृष्ट दुःखको अनुभव कर्त्ता है सो अपरम
योगी है। देहपात संतै कैवल्य भागित्व तें अरु देह सद्भाव पर्यं
त दृष्ट दुःख के अनुभव तें तत्वज्ञान मनोनाश वासनाक्षययो
केंतु एक काल काल अभ्यासतें दृष्ट दुःख निवृत्ति पूर्वक जीव
मुक्त सुखको अनुभव कर्त्ता होय या प्रारब्ध कर्म विनाश तें समा
धि के व्युत्थान काल विषै श्लो० आत्मौपम्येन सर्वत्र समं प
श्यति योऽर्जुन सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ३२

हे अर्जुन जो सर्वत्र सुख दुःख कों आत्मौपम्य कर कैं सम देखता है
सो परम योगी मत है टी० आत्मा ही अपम्य कहिये उपमा ताते स
क कैं क्या आत्म दृष्टांत कर कैं सर्वत्र प्राणी समूह विषे सुख अथ
वा दुःख को सम कहिये तुल्य जो देखता है क्या आपके अनिष्ट
को जैसे नहीं इच्छ्या करता तैसे औरके अनिष्ट कोंहु जो नहीं इच्छ
या करता [illegible] ष पूज्य तातें ऐसे आपके इष्ट कों जैसे इच्छ्या क
रता है तैसे औरके इष्ट कोंहुं इच्छ्या करता है राग द्वेष रहित तातें सो नि
र्विसनता कर कैं उपशांत है मन जिसका ऐसा योगी क्या ब्रह्म
वित परम कहिये श्रेष्ठ मान्या है पूर्व योगी तें हे अर्जुन इसी
तें तत्व ज्ञान मनोनाश वासना क्षय यों के यथाक्रम अभ्यास तां
ई महान प्रयत्न कर्तव्य है ये अर्थ है तहां ये सर्व द्वैत जात अ
खिनी परचिदात्मा विषे माया कर कैं कल्पित तातें मिथ्या है है अ

मात्रोएकपरमार्थसत्य है सच्चिदानंदरूप सो मैं हों ऐसो जो ज्ञान है सो तत्वज्ञान है प्रदीपज्वाला के लाटों के संतान जैसे वृत्ति संतानरूप कै परिणाम मान जो अंतःकरण द्रव्य है मन नाम कत्वे मन ऐसे कहावत है तिस का नाम वृत्तिरूप परिणाम को परिणाम कके सर्व वृत्ति विरोधी निरोधाकार कै परिणाम है पूर्वापर विचार विना आघ उत्पद्यमान को धारादि वृत्ति विक्षेप का हेतुरूप चित्तगत तिस संस्कार विक्षेप वासना कहावत है पूर्व पूर्व अभ्यास कर कै चित्त विषय वासना मानत्वे तें तिस का हृदय नामादि विवेकज न्यायत्वे तें अनुमानवासनाध्यास तें बाह्य निमित्त सत्ति हू को धारादि की अनुत्पत्ति नहीं होत तत्वज्ञान सत्ति मिथ्या भेदत जगत सत्ति मेरवि बाह्यादि को विषय जैसे धी वृत्ति के अनुसार तें अर

आत्माके स्वरूपत्व करकै पुनर्वृत्ति के अनुपयोगतें निरंधनाग्निकी
सें मनना श होता है अरु मनन नष्ट भयेसें अग्निरूप इमारहित संपत्ति करकै
तत्वज्ञान उदय होता है औसे तत्वज्ञान उत्पन्न भयेसें रागद्वेषादि
रूपवासना क्षय होती है औसे वासना ही तासूत्रि प्राप्तेबंध
कें अभावतें तत्वज्ञानका उदय होता है औसे परस्पर कारणता
त्व इहां जानीये है इसीहीतें भगवान् वासिष्ठ कहता है तत्वज्ञा
न मनोनाश अरु वासनाक्षय यह परस्पर कारणताकों प्रा
प्त करकै दुःसाध्य स्थित है तातें हे राघव सत्य करकै पौरुषकरकै
विवेक करकै भोगइच्छाकों त्याग करकें इस तीनोंहीकों आश्र
य करो इति पौरुष कहीये यत्न क्योंकि सर्व प्रकार करकें
इसी हीसें रागा औसा रूप निर्बंध विवेक नाम भिन्नता करकै
निश्चय है तत्वज्ञानका अवलंब रहे कसाधन है मनोनाश
कोपरम प्रयत्न उत्साह
करसाध्य है ५

१०१

काचोगहे वासना हृयकाप्रतेकूलवासना काउत्पादन है एताह्यणविवेकयुक्त प्रयत्न ककै स्वल्प भोगे छावे है पे तो ककै अग्निजैसे इस न्याइ ककै वासनाकेवर्ते हुए वे ते इस त्याह भूसे कहा है छिविधहै सो घाधिकारी कृतो पास्त अठतोपास्त नहोजोउपास्यकेसाक्षात्कारपर्यंत उपासना ककै तत्वज्ञान निमित्त प्रवर्ती है तिसके वास नाहृयमनोनाशुंघउत्तत्वक कै सामनैही भ्यनीवस्मु क्त स्वतः ही होवैहै अब अकृतोपास्ति बहुधान्य कृतोपास्ती है समुह अल्पकमात्रतें शींघ्रही विद्याविषप्रवर्ते होताहै योगविनाविवेकमात्रककै ही मनोनाशुवासनाहृय तात्कालिकरसिघकके शमदमादि संपत्तिककै पावल मनन निदिध्यासनाकारसिधकताहि घउनाम्याप्त मना

नानुष्यादिकोंके सर्वबंधविषे दीनतत्वज्ञानउदय होता है अ
विद्या और अवलत्व हृदय के पास पुण्य कर्म सर्व कारण
संतुष्ट परपुनर्जन्म के कर बंध बंध नाना कर्म के
होता है तैसे परब्रह्म कहा है इसको जो जानता है गुरु
के स्थानको सो अविद्या गंधको त्याग करता है सो मन
विशुद्ध ही होता है मे हृदय पावता है हृदया नंद भ्रष्ट हृदय पावते
हैं सकल सो पुण्य और हील होता है इसके कर्म तिस पर
वह हृदय संतति सत्यज्ञान अनंत है भ्रम जो जानता है गुरु
विषे पापरमा कापुरविषे नहीं इसको सो पावता है सर्व
कामो को शीघ्र इसको जान कर भरतम तको पावता है
जो विज्ञानवान है सो होता है मन स्वस्थ प्रभु वे सो पुनि

स्वपद को पावता है। जैसे तैं पुनः जन्म को नहीं पावता। जो ऐसे जानता है मैं ब्रह्म हौं
ऐसे सो यह सर्व होता है ऐसे अरु सर्व वानिवर्त फल उदाहरण करिबे योग्य है सो यह
विदेह मुक्त है। देह संसृति भी ज्ञानोत्पत्ति समकाल नाश जानिबे योग्य है। अरु विषे
अविद्या कर कै अध्यारोपित इस बंधनो का अरु विद्या नाश संसृते नैवृत्त संसृति पुनः
उत्पत्ति कै असंभवतें। तिस ज्ञान कै अंतः श्रौत्र रूप है तिसकै अभावतें तत्वज्ञान संसृ
सकै अनुकूल वर्तता है। अरु मनोनाश वासनाक्षय अरु धउ अभ्यास कै अभाव
तें अरु भोगप्रद प्रारब्ध कर कै बाध्यमानत्व तें सर्वात्मदृष्टि दीपकालैसे ज्ञानी
प्रवृत्त होते हैं। इसी तें अब मय तत्वज्ञानी के पूर्वसिद्ध तत्वज्ञान रक्षण नहीं
प्रयत्न की अपेक्षा। किंतु मनोनाश वासनाक्षय प्रयत्नसाध्य है तिसतें नहीं मनो
नाश अरु संप्रज्ञात समाधि निरूपण करने रूप तें है प्रारब्ध अरु वासना
क्षय अरु निरूपण करीयत है। तहां वासना का स्वरूप विशेषज्ञान निरूप
ण करते हैं। धउ भावना कर कै त्याग कीया है पूर्वापर विचार कर जो पदार्थ
का ग्रहण है सो वासना कहीयत है। इहां अपरोक्ष अपरोक्ष दृष्टांत अरु कु
लधर्म स्वभाव जैसे प्राप्त अपमान अरु सुख दुःखादि को विशेष प्राप्त लोका
चार निषेध शास्त्र समान कर कै उदाहरण रूप है सो वासना द्विविध है एक
बुरा भला।

ना

मलिना है दूसरी प्रथा है मुख्य दैवी संपत्ति शास्त्र संस्कार प्राबल्य ते तत्व
ज्ञान के साधनत्व करि एकरूपा है अरु मलिना तु त्रिधा है लोकवासना
शास्त्रवासना देहवासना इति सर्वजन जैसे अनुकूल होवैं तैसे आचार
करों ऐसे अशक्य पदार्थ अभिनिवेश रूप लोकवासना है ज्ञानवान के
सर्वलोक आराधना करबे को अशक्य है इस न्याय करि कै संपूर्ण सकवै
तांई अशक्यत्व ते अरु पुरुषार्थ कि अनुपयोगित्व ते मलिनत्व है शास्त्र
वासना त्रिविधा है पाठव्यसन बहुशास्त्रव्यसन अरु अनुष्ठानव्यसन
अरु सु क्रम करि कै भरद्वाज के दुर्वासा के निदाघ के प्रसिद्ध है मलिनत्व
इस के अशक्य आचार पुरुषार्थ कि अनुपयोगित्व ते दर्प कि हेतुत्व ते अरु के
जन्म के हेतुत्व ते देहवासना त्रिविधा है आत्मत्व भ्रान्ति गुणाधान भ्रां
ति दोषापनयन भ्रान्ति इति तहां आत्मत्व भ्रान्ति विरोचनादिकों विषे
प्रसिद्ध है सर्व लोक की अरु गुणाधान द्विविधा है लौकिक की शास्त्रीय
समीचीन शब्दादि विषय संपादन लौकिक है गंगास्नान शालिग्राम
तीर्थादि संपादन शास्त्रीय है दोषापनयन द्विविधा है लौकिक की शास्त्रीय
सो मानरहे प्राप्त

खिकत्वसमूतमोक्त औषधोकौं आधकोदूरकरबेलो ककी
है अरु वेदक स्नान आचमनादिकोंकौं अन्नोचारिकोकोदूर
करबेवो विहक है सर्वप्रकार दूसवासनाके मलिरनेत्व अप्रामा
णीकत्वते अरु आकपत्वते पुरुषानुपुचोगित्वते अरु पुनर्जन्म हेतु
त्वते त्याज्य प्रसिद्ध है सो पेलोक शास्त्र देहवासनात्रय अरु
खिवेकीयो केउपारयत्वककैं प्रतिभासमान है खिवेदेह्नाके
वेदनोत्पत्तिके विरोधित्वते अरु बहु प्रपंचज्ञाननिष्ठाके खेदे
धित्वते खिवेकीयोने त्याज्य है सो अरु से बाह्य विषयवासनानिरू
पित है आंतरवासनातु कामक्रोधदंभदर्पादिक आसुरसंपत्ति रू
पसर्वनिषिद्ध मलामानसी वासना अरु एककही पत्ति है सो अरु से बाह्या
भ्यंतरवासनाचतुष्टेकोशुद्धवासनाककैं हृदयसंपादनीय है

सो कहा है वसिष्ठजीने हे राम प्रथम मानसी वासना को त्याग करकै
अंतर विषय वासना को त्याग करकै मैत्र्यादि वासना रूप निर्मल
वासनाऊं को ग्रहण करकर दूसरी जो है विषयवासना भी एक कै
पूर्वोक्त त्रयलोक ग्राम्य देह वासना कही है मानसवासना भी
एककै कामक्रोधादि भेद परिछिन्न आसुर संपत्ति कही है पंच
प्रत्यक्ष शब्द स्पर्श रूप रस गंध विषय वृत्तियों की भुज्यमानत्व ज्ञानजन्य
संस्कार विषय वासना है काम्यमानत्व ज्ञानजन्य संस्कार मान
सी वासना है इस पक्ष विषे पूर्वोक्त चारों को ग्रहण ने विषे ह अंतर
भाव है बाह्याभ्यंतर निरंतर करकै वासनांतर कै भेद से भेदवंत
तीन वासनाऊं का परित्याग नाम ततरद्धि कह्या मैत्र्यादि वासना का उत्प
त्ति है वे मैत्र्यादि वासना भगवान पतंजलने कही है पूर्व सिद्ध प
कके कल्पित है पुनः व्याख्यान करीयत है चित्तरहित राग द्वेष पुन्य

पावैकलुषीहैतें तहांसुखका अनुकूलवर्त्तीराग है सो हतें अनुभूयमान
सुखको अनुकूलवर्त्तताहै कोईएकरजसीधीवर्त्तिविशेष सर्वसुख
जातमुजकै होवैं असे सो सुखदृष्ट अदृष्ट सामग्रीके अभावतें स्थिर
करवेताईं अक्षमाकोहै इसतें सो राग चित्तको मलिन करताहै जबतें सु
खीप्राणीयोंविषये पुरुष मैत्रीको भावना करताहै सर्वये सुखी मेरे
हैं असें तब सो सुख स्वकीयही सिद्धहै येभावहै जातें तहें राग निवृत्तहो
जाताहै जैसे आपके राजके निवृत्तसें रतें हूं पुत्रादिको कारनहीस्वकी
यराजहै तैसजैसे अरगानिवृत्तिसें रतें वर्षाकालकी निवृत्तिसें
रतें जल जैसे चित्त निर्मल होताहै तैसें दुःखका अनुकूलवर्त्तीद्वेषहै दुःख
को अनुकूलवर्त्तताहै कोईएक बुद्धिवर्त्तिविशेष तसो अनुगति रजोगुणताप
रिणाम ईहुआ सर्वदुःख सर्वप्राणिजके मत्तहोवैं सो अनुत्तु व्याघ्रादिसें रतें
नहीं तजे वर्त्तितेहोइवेताई अक्षमाको अरन सर्वदुःख हेतु मारवेताई अक्षमाहो
ईयतेहै इसीतें सो द्वेष सदा हृदयको जलावताहै जबतें आपके जैसे

औरसबकिहूं दुःखमतहोवै इसकरुणाको दुखितपुरुषोंविषे
भावनाकरैहै तबवैरीयादिकोंविषेद्वेषकीनिवृत्तिसंतचित्तनि
र्मलहोताहै तैसेभूतात्मोंविषेसमर्पकारीयतहै धूर्ताजैसेआप
केप्रयत्नमहै तैसेऔरभूतोंकेहूंप्रयत्नमहै आपत्यौअपम्यकर्कै
सर्वभूतोंविषेदयाकरतेहैंसाधइति यहहूंईहांहूंकहाहै आत्मौ
पम्येन सर्वत्र इत्यादि तैसेधूर्तास्वभावतेंहीपुण्यकोनहींकरतेअरपा
पकोकरतेहैं तैसेकहाहै पुण्यकेफलकोचहतेहैं अरपुण्यकोनहीं
चहतेमानव अरनपापफलकोचहतेहैं अरपापकोकरतेहैंय
त्नतेंइति वेपुण्यपापकर्मकेयमानक्रियमानहूयेवपश्चात्तापकोउ
त्पत्तिकरतेहैं सोश्रुतिकेकैंउरदेतहै कहामैशुभकर्मकोनक
रतभिया कहामैअशुभकर्मकोकरतभियाइति जेयेपुरुषपुण्य
पुरुषोंविषेमुदिताकोभावनाकरैहै तबतिससवासनाचानआ

१०५ वर्द्धन असूयमत्तहोयात्रप्रपुण्यकेअकथा पुरायरखेषप्रवृत्तिहोताहै सोक
होहै कर्मअप्रपुरायअकथायोगीकिहैं अरुलेरवेषअौरोंकहैं अ
योगीकेलिरवेषकहोये प्रपुरायरूपप्रम कथ्यरूपअप्रपुराय प्र
केकथा प्रभावप्रहरते तैसेपापपुरुषौंरवेषउपेक्षाकोभाव
नाकंतनहिंहोया अपहैं तिसवासनावान्होयापापतेरनिवृत्ति
होताहै अरुतिसतैंपुरायकाअकरना पापकाकरना तिनितैं
पश्चात्तापकेअभावतैंचित्तनिर्मलहोताहै औरसुखीप्राणी
योंरवेषमैत्रीकोभावनाकरतेकि नकेवलरागनिवृत्तहोताहै किं
तुअसूयाईर्षादिकभीरनिवृत्तहोतेहैं औरकेगुणोंरवेषदोषकी
प्रगटकरनाअसूयाकहीयतहै परगुणोंकाअसहनईर्षा
की कहीयतहै तबमैत्रीवेद्रूतैंपरसुखस्वोपहासिद्धहै तबऔर
केगुणोरवेषकैसेअसूयादिकहोवैहै तैसेदुःखितपुरुषों
रवेषकरुणाकेभावनाकरतेकिअनुग्रहधारकरतहिंपजबने

वरत्ते होता है तब दुःख प्राप्त योगी सुख विलास कर्के प्रयुक्त हर्ष हुं नेव
न होता है ऐसे देहांतर निवरत्ते हुए विचार लगाय है वासिष्ठ रा
मां संसार के विषे सो ऐसे ही तत्त्वज्ञान मनोनाश वासना क्षय
ऐसे ये त्रय हैं अभ्यास करते योग्य हैं तहां केसा है वार कर्के
पुनः पुनः तत्त्व का अनुसंधान तत्त्वज्ञान का अभ्यास है सो कहा है
इतेस का चिंतवन इसका कथन अरस्पर अन्योन्य प्रबोधन अ
रु तिस ही विषे एकपरत्व ये ब्रह्माभ्यास कहते हैं बुद्धिमान सर्व
के आदि विषे हैं नहीं उत्पन्न दृश्यरूप अरु सो सर्व हैं न होंही ये जगत
मैं ही हों ऐसे सो ये परम बोधाभ्यास कहते हैं इति दृश्यावभास
के विरोध कर्के अभ्यास मनो निरोधाभ्यास होता है सो कहा है ज्ञा
ता ज्ञेय वस्तु के अत्यंत ही अभाव संपत्ति से तिस युक्त कर्के शास्त्रों
कर्के जो यत्न करते हैं वे हैं इहां अभ्यासी स्थित हैं ज्ञान ज्ञेय

कोंमिथ्यात्वबुद्धि अभावसंपन्नकहीयेहै स्वरूपककैंहं अ
प्रतीत अत्यंताभावसंपन्नकहीयेहै इतिसलनेरमेनयुक्तकही
येयोगककैं १ २ अयकं असंभवबोधककैं रागद्वेषादिकोंकी
सूक्ष्मताककैं जोसघनरत उ२ यहवेहै सोअभ्यासकही
यतहै इति रागद्वेषादिकोंकीतनतारूपवासनाक्षयाभ्यासउक्त
हैइतिसीनेंपुक्तहैये तत्वज्ञानाभ्यासककैं अरमनोनाशवास
नाक्षयाभ्यासककैं रागद्वेषपरस्परताककैं जोस्वपरसुखदु
ख्यादिकोंविषेसमदृष्टिहै सोपरमयोगीमतहै अरजोविष
मदृष्टिहै सोतत्वज्ञानवान्हूं अपरमयोगीहै ३२ उक्तार्थको
नहिंस्कारकरतहि पार्थअर्जुनकहतोहै श्लो० योयंयोगस्त्वयाप्रोक्तःसाम्ये
नमधुसूदन। एतस्याहंनपश्यामिचंचलत्वात्स्थितिंस्थिरां ३३ जोये
योगतोंनेसाम्यककैं ककैंकह्योहै चंचलत्वतैं इसकीस्थितमेंस्थिर।
नहींदेखताहूं मधुसूदन टी० जोयेसर्वत्रसमदृष्टिलक्षणपरम

योगसाम्यकहीयेसमत्वककैचित्तगानरागद्वेषादिकोंविषमदृष्टहेतों
केरनेंहाकररगककैतोसवहीईश्वरनेउक्तकहेहेमधुसूदन क्यास
ववैरक संप्रदाइकाप्रवत्तकि इसतुजककैकरघेतसर्वमनोवत्तोनि
रोधलहगयोगकास्थितकहीयेविद्यमानताकोस्थिराकहीयेदी
र्घकालानुवर्त्तनितानहींदेखता क्यानहींसंभवनाकर्ता मे अथवाउ
जसरीखाओंयोगाभ्यासदृवैधरनेपुरा रकिसतेनहींसेभावनाकर्ता
नहांकहत्तहै चंचलत्वतेंमनकेइतिरूपः ३३ सर्वलोकप्रसिधत्व
ककैतिसचंचलत्वकोधडकरत्तेहैं श्लो॰ चंचलंहिमनःकृष्णप्र
माथिबलवद्दृढं तस्याहंनिग्रहंमन्येवायोरिवसुदुःष्करं ३४ हे
कृष्णशरनेवालककैमनचंचलहे प्रमाथीहैबलवानूहैधडहेतिस
कारनेनिग्रहमैवायुकेनिग्रहजैसेदुःष्करमानताहों टी॰ चंचलकहीं

येअत्यर्थचलायमान क्यासरा चलनस्वभाव है मन सो कहिये प्रसि
ध है ये भक्तों के पापादिक सर्वदोषनिने वारण करबे को अनुग्रह की
है २ तिन्हों को हे कृष्ण तू कहिये निवारण करे अथवा तिन भक्तों के ही
सर्वथा पाइबे को अशक्य पुरुषार्थों को आकर्षत कहिये प्राप्त
है सो कहिये कृष्ण २ तिस स्वरूपक कै संबोधन करत्ता होवा दुर्निवार
है २ चेत चांचल्य को निवर्त करके दुःप्राप्य है समाधि सुख को तू ही
प्राप्त करबे को समर्थ होता है ये जनावता है न केवल अत्यर्थ चल स
ही है २ किंतु प्रमाथी है क्या शरीर इन्द्रिय इन्हों को क्षुभित करबे ता इ
है स्वभाव जिसका क्या क्षोभकता करके शरीर इन्द्रिय संघात को वि
वशता का हेतु है ये अर्थ है २ किं च बलवत है क्या विचार तें विषयतें
२ के स्या ही उपायक के निवारण करबे तां दृढ ग्रह का है २ किं च ध

से

टहै क्याविषयवासनासहस्रविषेप्रोलताकरिकैभेदकर्बेको
अज्ञाक्यहै तंतुनागजैसे अघोघहै अैसेमाब्बरविषेकहाहै तं
तुनागनामपाशहै तांतुनाअैंगृजुरारहेहै सोरविषेप्रसिद्धहै
अथवामहाहदवासीएकजंतरविशेषहै तिसकेअतिघडतांक
कैबलवान्केबलवत्ताकरिकैप्रमाथ्यताकरिकैअतिचंचलमहस्म
तबनागजजैसेमनकारनैरोधक्यारनैरोध क्याअज्ञानंदरूपताक
रअवस्थानसुदुःकरहै क्यासर्वपापाकरनेकोअज्ञाक्यामैमा
नताहूं वायुकेरनैरोधजैसे जैसेअाकाशविषेभ्राम्यमानवायु
केरनैप्रश्लत्वकोसिधकरकेरनैरोधकरबोअज्ञाक्यहैतैनुजे
सेयेअर्थहै येभावहै तत्वज्ञानउत्पनसंतिं प्रारब्धकर्मभोग
तांईजीवनपुरुषकेकर्तृत्वभोक्तृत्वसुखदुःखरागद्वेषादिलं
हराचिंतधर्मलिंगहै तु त्वंतैबाधताअनुवृत्तकरिकैहूं बंधरूपहोताहै

चित्तवृत्तिनिरोधरूपकक्कैतिसकारनेवादरतोजीवन्मुक्तमैसकही
यतहै जिसकेसंपादनकके सोयोगोयमनमतहै येकहाहै तहांये
कहीयतहै. बंधकहासाहीकाभिवारयतहै अथवाकहा चित्तते
आघहूनही तत्वज्ञानसंतैते साहीकेबंधकेनिवारततिते नहीउ
तीय स्वभावकेखेदपर्यंयकेअयोगतें अरखेदाधीकेसद्भावतें
नजलतैं प्राइतिअरअस्मिकेउधमतरनिवारतोकरबकोसमर्थ
होईयतहै प्रतेहलमहेरतोमाहैभावविनाचित्तमूतकेकेहस
न्याइककैप्रीति हृदुगनहेरतोमत्वस्वभावतेतें चित्तकेअवपूर्ध
भोग [illegible] कर्मकैतोने [illegible] करके अरवेघामरततका
यनाबूानविषप्रवर्तितिल्वज्ञानकेहूं प्रतेबंधकोककैंअपरोप
तहानताइ देहेंद्रियस्थापितहै अन्नकर्मकिकैं स्वारतेसुखदुःखा
दिभोगाधित्तवृत्तिविनासिधकरबेताईसमर्थहोईयतहै ताते यद्यपि

स्वाभाविक है चित्त परिणामो को कथं चित्त योग करि कैं आरंभ
मूव कर बेतांई समर्थ होईयत है तो हूं तत्त्वज्ञान तैं जैसें योगतें
हू प्रारब्ध फल कर्म कि प्राबल्य तें अवरूप भावा चित्त को चांचल्य
संतें योग करि कैं तिसका निवारण आनुकूल्य में अपलो बोधतें
ही मानताहे तातें अयुक्त है ये आत्मौपम्य करिकैं सर्वत्र सम
दर्शी परम योगी मन्त है ऐसो अर्जुन को तात्पर्य है ३४
तिस इस आक्षेप को हर करता हो यो श्रीभगवानुवाच श्लो० असंशयं महा
बाहु मनो दुर्निग्रहं चलं अभ्यासेन तु कौंतेय वैराग्येण च गृह्यते ३५ असं
शय है हे महाबाहु मन दुर्निग्रह है अरु चंचल है हे कौंतेय अभ्यास करि कैं
अरु वैराग्य करि कैं निग्रह कराइयत है टी० भली प्रकार विदित है तेरे चित्त
का चेष्टित मन को निग्रह करि बेतांई समर्थ होवेगा ऐसे संतोषक के
संबोधन करता है हे महाबाहु महत कहीये बडा है सो हमतें महात्व

साधकतत्रप्रहताहैं मुजाविसकीनैसेनिरत्तिनायउत्कर्षाकोसूचना करतेहैं प्रारब्धकर्मकेप्राबल्यतेंग्रसत्तात्मापुरुषकवैं उन्निग्रह हेक्याउःखककैंहं ग्रनहत्याकरनेकोग्रमूक्यहै प्रमाथबलवद्दहैं जैसेरविन्नोषबलात्मयाएकत्रककूंपैकहाहे चलं क्यास्वभावककैं चंचलहै मन जैसेसन्न्रसंग्रायहै क्यासंन्नायनहींसत्पहींयत्नेक हत्ताहैं येन्रर्थ हि नैसेसत्तिहं संयतात्माककैं मरत्तेनायउपाय ककैयोगकेकैंग्रभ्यासककैंग्ररवैराग्यककैंग्रहताकरीय तेहैं क्यासर्ववृत्तिशून्यकरायत्नहे सोमनयेग्रर्थहि ग्रसंय तात्मात्तेसंयतात्माकेरविन्नोषजनाइवेतेंनिवत्तनायहे मनके वे ग्रनहरविषग्रभ्यासवैराग्यकेसमुच्चयजनाईनेनिवृत्तचन्नायहे हेकौंतेयजैसेपेलाकीमगनाकापुत्रहैंतूं ग्रवत्रयमुजकर्केसु रवीकर्तव्यहेतूं जैसेस्नेहसंबंधसेचनेकैवैदैलासाकरताहे इहांप्रथमसाधककेचित्तकाहठलेनिग्रहनहींहोताये कहाहे

अरहूसरेअर्धककैक्रमरनेनहहोताहैयेकहाहै एहदिरवैधहैमनकानि
ग्रहहठककैअरक्रमकवै नहींचहुस्मात्रादिकज्ञानेंद्रियोंकोअ
रवाकपारणादिककर्मेंद्रियोंकोतनगोलकमात्रकेउपरोधककै
येहठहै एतैसदृष्टांतककैमनकोहूंहठककैरोकोंगा औरसेमह
के भोत्तहोतीहै ततैसेरोकबेतोंईआकाहोईयत्तहै एतैसकेगोल
करूपहृदयकमलकेरोकबेकोंअज्ञाकोत्वत्त इसीतेंक्रमतेनिग्रह
होयुक्तहै सोपेभगवानवसिष्ठकहताहै बैठबैठककैवारंवार
खचितसनेमनजीतबेतांईआज्ञाकाहै एवेनाअनेंहितयुक्तकै १ जैसे
मत्तवारहस्तीअंकुशरवेनाजीतबेकोंअज्ञाकाहै अध्यात्मरवेद्या
कीप्राप्तिअरसाधसंगमवासनाऊंकापरित्यागप्राणस्पंदका
निरोधयेपुरुषयुक्तचित्तकेजीतणविषेरिष्यतहैंतेपरवचकर
इनयुक्तोंसंरतेहूंहठतेंजेचित्तकोरोकतेहै वेदीपककोत्यागककै

 अंजनकरि तमकौ नाश करते हैं इति अरु क्रमतें नेत्र हरविषें अध्यात्मवि
द्याका अरथीगमनकों ही उपाय है सो दृश्यके मिथ्यात्वकों अरु दृग
वस्तुके परमार्थसत्त परमानंद स्वप्रकाशत्वकों जनावत्त हैं तैसें
सत्तिसो मनस्वगोचर दृश्यों विषें मिथ्यात्वकरि प्रयोजना भाव
वान् कों अरु प्रयोजनवत् परमार्थसत्व परमानंद दृगावस्तु विषें स्व
प्रकाशत्वकरिकें अपरोक्षगोचरत्वकों जानकरिकें निरंधन अगि
को जैसें शांति होत्ता है अरु जो बोधित हूं तौ त्वं न भलीप्रकार जाने अथवा
होनेरवे स्मरण करते तिनकों साधसंगम ही उपाय है तिसपक्षविषें साध
पुनः पुनः बोध करते हैं अरु स्मरण करावत्ते हैं अरु जो एवं प्राप्त हूं ते उ
वासनाकरिकें पीड़मान होय ता साधकों अनुकूल वर्तमानताई नहीं
नदि उत्साहकर्ता तिसका पूर्वोक्त विवेककरिकें वासनात्याग ही उपाय है
अरु जो वासनाऊंके अतिप्राबल्यतें तिन वासनाऊंके त्यागविषें न होय स
मर्थ होता तिसके प्राणायाम ही उपाय है प्राणस्पंद वासनाऊंके स्थि
तिरूप

तप्रकट्यतें तिनकौ केतैं राघव तैं चित्त नाश तैं सिद्ध होता है सोहं
कहता है सोई हो भगवान वासिष्ठजी वृषबीज हैं चित्त वृक्ष के प्रा
णस्पंदन अर वासना तिन दोनो विषे एक ही के नाश कै प्राप्त होनो
हीना श होते है प्राणायामो के घडा भ्यासों कैके अर गुरु दत्त
युक्तो कर कैं आसन अर ध्यान योग कर कैं प्राण स्पंद रोकीय
ते है असंग व्यवहार तैं अर संसार की भावन वर्जन तैं अर शरी
र के नाश लखते इनितें वासना नही प्रवर्त होती अर वासना के परि
त्यागतैं चित्त अचितनाको प्राप्त होता है अर प्राण स्पंद के रोक तैं
जैसे इच्छा होइ तैसे करो एतावन्मात्र ही चित्त के रूप को मान माहो
हे राघव जो भावन है वस्तु कैके अर रस कके अर ज हैं न भाव न
ना करि ये कछु हे यो पादेय रूपी जो रस्पन्न होवै सर्व को त्याग कर कै
त ब चित्त नहीं उत्पन्न होता अवासनत्व तें नैरंतर जब नही मननक

तामन नबन्अमनस्ता उदय होत्ताहै परमात्मपदप्रापक इत्ति ईहां
द्वयहीउपायरनेच्छित्त हैं प्राणस्थे इ निरोधार्थ अभ्यासवैराग्ना
पत्तेत्यागाय्यविराग्यइत्ति साधसंगमअध्यात्मएवे घाका अत्थोर
मनुअभ्यासवैराग्यकी सार्थकताकौं अन्यथा सीध है इत्ति
कोकेअंतरभूत है इसीतें भगवान् ने अभ्यासेनतुकौंतेय वैराग्येण च अौ
साद्वयहीउक्त है इसीतें भगवान् पतंजल सूत्र कर्त्ता भयाहै अभ्या
सवैराग्याभ्यांतन्निरोधइत्ति इत्तिस पूर्वोक्त प्रमाणविपर्ययवि
कल्पनिद्रास्मृतिरूपककैं पंचविधअनंत आसुरत्वककैं क्लिष्ट
दैवत्वककैंअक्लिष्ट हैं सर्ववृत्तीयोका निरोधलनिरधना जिनसें
उपन्नएमारच्यपदेशोमें अभ्यास अरु वैराग्यककैं समुच्चित्त होता
है सोकहा है योगभाष्यविषें चित्तनदीनामउभयतुवाहनीवाहती
है कल्याणतांईवहत्ती है अरुपापत्तांईवहती है तहां जो कैवल्य

जैसे गैलनिम्र रेनू को जाना है तैसे जो चित्त प्रवाह कैवल्य स्वरूप पूर्व दिसि धरनेम्र रेनू को जाना है
अपवा विषय प्रवाह है वैराग करि दूर होता है और
प्राग्भावां विवेक करनेम्र है सो कल्याण वहा है और जो अविवेक
निम्र अर संसार प्राग्भारा है सो पापवहा है तहां वैराग करिके
विषय प्रवाह मन्द करीयतु है और विवेक दर्शन अभ्यास करिके
कल्याण प्रवाह उदय करीयतु है ऐसे उभयाधीन है चित्तवृत्ति
निरोध इति प्राग्भार निम्न जब उदय होती है तब विवेक निम्न
कैवल्य प्राग्भार चित्त ऐसे इहां व्याख्यान करीयतु है जैसे नदी
के वायु के न दी प्रवाह को सेतु बंधन करिके निवर्त्त करिके कुल्या कर्म
के आन लोक के हित के सन्मुख वर्त्ते एक प्रवाहान्तर उत्पत्ति
करीये है तैसे वैराग करिके चित्त नदी का विषय प्रवाह को निवे
वार करिके समाधि अभ्यास करिके प्रशान्तवाहता सिद्ध करीय
तु है ऐसे द्वार मे इतरेतर समुच्चय ही है एक द्वार तव संती नहि पावै से
विकल्प होवै है इति मंत्र जप देवता ध्यानादि करि क्रियारूपो को अ

सो नित्य सम्प्रवाह का लत सम
कृ संसार गाम अस्थ सभ

११२ वृत्तिलक्षण अभ्यास होवै है और सर्व व्यापार को उपरम रूप समाधि का
कौन नाम अभ्यास है इन दूंका केहूर करबे नैमेन अभ्यास को सू
चना करते भये न नत्र स्थितो यत्नो भ्यास इत्ति नत्र कहीये स्वरूपाव
स्थित उसा प्रशान्त वाहितार्थ विषें चित्त की प्रशान्त वाहिता रूप ले प्रचल
जो स्थित है ते स निमित्त जो यत्न है क्या मानसी उत्साह है क्या स्वभाव
चांचल्य ते बहि प्रवाह शील चित्त को सर्व व्यापारों को गमें सो स्थिच अ
वर्तमान अभ्यास कहीयत है सो तु दीर्घकाल नैरंतर सत्कार सू
है कैं सेवित धृढभूम होतो आने वेद्य कके दीर्घकाल सेवित विच्छेदाभाव
भाव क कैं निरंतर सेवित सत्कार श्रद्धा भक्ति आयक कैं सेवित सो अ
भ्यास धृढभूम होयार वैषयसुख वासना क कैं चलाइबे तो ईश्वर
क्य होता है अरु दीर्घकालत्व विषे दीर्घकाल संततेहि खेद्ध सविष इस
व नु संत ते अरु भक्ति श्राय श्रद्धा के अभावक कै लपर वेद्य क षाय
सरवा रवा होके अपर हार संति व्युत्थान संस्कार के प्राबल्य संतेअ
धृढम म अभ्यास फलता ई नहीं होवै है इसी ते न यह ही एन हत्ताक रूचे है

अपरपर आइसे भेदकरके वैराग्य द्विविध है यतमानसंज्ञा वशीकार[२]
संज्ञा व्यतिरेकसंज्ञा एकेंद्रियसंज्ञा इनभेदोंकरके चतुर्विध है तहां पूर्वभू
मिजयकरके उत्तरभूमिकी संपादनविवक्षाकरके चतुर्थ हांकी रच
नाकरनेवाले दृष्टानुश्राविकविषयवितृष्णस्य वशीकारसंज्ञावैराग्यमि
ति। दृष्टानुश्राविकविषयवितृष्णपुरुषके वशीकारसंज्ञा वैराग्य कहा
है स्त्रीअन्नपानऐश्वर्यइत्यादिक दृष्टविषय हैं स्वर्गविदेहताप्रकृति
लयइत्यादिक वैदिकत्वकरके अनुश्राविकविषय हैं तिनोंउभयविधोंवि
षें हू तृष्णावंते हू विवेकतारतम्यकरके यतमानादित्रयवैराग्य होते हैं इ के
षाजगतविषे क्यासार है क्याअसार है याइसे गुरुशास्त्रोंकर जाननेंका
उद्यम है सोयतमानवैराग्य कहाए अपुने चित्तविषें पूर्वविद्य
मान दोषोंके मध्यविषे अन्यअन्य मान विवेककरके ० दोषपरिपक्व
हैं एक्वा बाकिए हैं याइसे चिकित्साकजइसे ... ज्ञान है व्यतिरेकसं
कहावे दृष्टअनुश्राविकविषयप्रवृत्तिनें दुःखात्मकबोधकरके बहि
रिंद्रियप्रवृत्तिकोंअसमर्थकरनी जोतृष्णा होवे ताकों अनुक्षमात्रकर

के मन विषे जो भया पन है सो एकेंद्रिय वैराग्य है मन विषे हूं तृष्णा क्षय
न कर के सर्वथा वैतृष्ण्य रूप परम विरोध । नी चित्त वृत्ति ज्ञान प्रसाद
रूपा वशीकार संज्ञिक वैराग्य है सो संप्रज्ञात समाधि को अंतरंग
साधन है असंप्रज्ञात समाधि को बहिरंग साधन है तिस असंप्रज्ञात को
अंतरंग पर वैराग्य है तदुक्तं सूत्रकार ने तत्परं पुरुष ख्याते र्गु
णवैतृष्ण्यं तिस संप्रज्ञात समाधि । विषे चातुर्य कर के गुण त्रय ता का कड़

मोक्ष था ता ते पृथक् जो पुरुष को ख्याति है क्या सम्यक् ज्ञान है का सा का
कारण सम्यक् होता है तिस विषे संपूर्ण गुण त्रय पर व्यवहार से विषे जो

सो वैतृष्ण्य है ता है सो पर कहा है क्योंकि फल रूप वैराग्य है तिस के प्रतिपा
क निमित्त चित्त पंच य [illegible] पारिपाक तें अविलंब कर के कैवल्य हो
ता है २५ [illegible] जो [illegible] होता हैं जो सार्थ हैं ओ गति सो ते [illegible]
न तें हूं सब [illegible] ओ जो कर्म हो ति स कर के अपुने फल दाता नाहूं मन

५ की वृत्ति [illegible] उपशम शांति कर के उत्पन्न वृत्ती यों का निरोध करि बे कों समर्थ
होइ पन है इति वहां कहा पन है [illegible] यता ना ना यो गो दुःखाप इति से

[illegible]

दुःखककैंअप्राप्य

भा॰टि॰ वश्यात्मनानुयतताशक्यो वाप्तुमुपायतः ३६ भाषाटि असंय

तककैं योग दुःप्राप्य है अरु वश्यात्मा उपायतें यत्न करनेकि कैं पाइबेलाइ

क्य है टी॰ तत्वसाक्षात्कार उत्पन्न संतेहू वेदांतव्याख्यानादिक करि

बे व्यासंगतें करि विगतसंगतें अपवा आलस्यादि दोषतें अभ्यासवैरा

ग्य ककैं नहीं संयत करि नहीं निरुध्य आत्मा कहिये अंतःकरण जिस

नें तैसे असंयतात्मा साक्षात्कारवाननें हूं योग जो मनोवृत्ति निरोध है तैसे

सो दुःप्राप्य है करि दुःखककैं हूं नहीं पाइबेको लाइक प्रारब्ध ककैंकृत जैसे तैसे

जो चित्तका चांचल्य है तिसतें अभ्यासवर्जित कहता हैं तहां मेरी मति है करि मुजका

संमत हू तैसे है ये अर्थ है रु किसनें तव पाइयत है कहा पायत है वश्यात्मना

वश्य वनी है आत्मा जिसका तैसेनें तु वैराग्यपरिपाक ककैं वासनाक्षय

संते वश्य कहीये स्वाधीन है कृति विषयपारतंत्र शून्य है आत्मा कहीये

अंतःकरण जिसका तैसेनें तु पूर्व असंयतात्मातें विलक्षण्य यतनाइबे

खिलेता है अभ्यवाने अभ्यसनेमें तहै एतादृशनेहू यतता कहीये यतमा

नवैराग्य ककैं विषयप्रवाहके शून्यकरण संतेहू आत्मप्रवाहके

जालौकिक वैदिक पुरुषार्थ कै ५

उदयार्थ पूर्वोक्त अभ्यास करते ने योग कहीये सर्व चित्त वृत्ति ने रोध पा
ई बे नाई छा क्या है क्या चित्त चांचल्य निमित्त प्रारब्ध कर्म कौ दबाइ कर्कै
पाइबे को शक्य है कैसे अत्ति बलवान प्रारब्ध भोग कर्म का अरंभ भवहो
याहै कहीयत है उपायत: क्या उपायत्त उपाय कही ये पुरुषकार ईत्ति स
लौकिक के अथवा वैदिक कै प्रारब्ध कर्म का अपहारक कै प्राबल्यात्॥
अन्यथा लौकिक कौ कैनि मित्त कृष्यादि प्रयत्न का अरु वैदिक कौ के नेम
ते ज्योतिष्टोमादि प्रयत्न कौ वैयर्थ्य की प्राप्त्ते सर्वत्र प्रारब्धु कर्म
के सद्भाव सत्त्व के कल्पक कै नासत्ते प्रारब्ध कर्म कि सत्त्व सत्ते ति सही
ते फल प्राप्त्ते क्या पौरुष प्रयत्न के कै अरत्ते स प्रारब्ध कर्म कि अ
सत्त्व सत्ते तु सर्वथा फल के असंभवत्ते क्या है त्ति स पौरुष क कै इत्ति
कर्म कि दृष्ट साधन संपत्त व्यतिरेक क कै फल जनन स्वैष अ समर्थ त्तिते
अपेक्षित है कृष्यादि कौ विशेष पुरुष प्रयत्न इत्ति चेत्तत्राह योगाभ्यास
स्वैष है समान है समाधान त्ति स योग कर्कै साध्य जो वस्तु कै कैहु स
क्या है योग स्वैष
अदृष्ट त्तो

क्यौं जीवन्मुक्तनाविषे सुखकी अधिकताहै तैसे प्रारब्ध

स्यात्ते न्यायलक्षणवत्त्वकके प्रारब्धकर्मफल विषे अंतरभावते अथ

वा जैसे प्रारब्धफलकमनित्वज्ञानते प्रबलहै अैसे कलानाकरीयत्त

है ॥ ९ ॥ त्वते तैसे तिसकमनेहूं योगाभ्यासप्रबलहोवैहै शास्त्रीयप्र

यत्नके सर्वत्रत्तेसत्तें प्रबलपद्दनुनित्तें अरतैसे कहत्तेहैं भगवानूव

सिष्ठ ॥ सर्वहीइहां नेप्रयत्न कै संसारविषे हेर घुनंदनभलीप्रका

रप्रयुक्तपौरुषत्तें सर्वहीनेपाईयत्तहै शास्त्रबाह्यअरशास्त्रीय

प्रयत्न द्विविधकहाहै तहां शास्त्रबाह्यअनर्थताईहै अरशास्त्रीय

प्रयत्नपरमार्थताईहै शास्त्रबाह्यकहीये शास्त्रप्रत्तिषेधअनर्थकहिये

यनकत्ताईहै शास्त्रीयकहीये शास्त्रवरहितसोअंतःकरणाशुद्ध

द्वारापरमार्थकहीये चारअर्थोविषेपरमएककहीयेमोक्षताईहै पु

नःशुभअशुभमार्गोकि कै वहत्तीहैवासनारूपीनदी सोपौरषप्रयत्नक

कैअशुभमार्गविषेयोजनायेहै अशुभमोरविषेप्राप्तहूयेअपनेमन

कोबलीपुरुषार्थककै शुभमोहीविषेस्थितकरोहबलीयोरवे

बपुरुष योगाभ्यासकेवशतेंजबतेरीवासनाउदयकोपावैहै तब
अभ्यासकेसाफल्यकोतूंजानहेअर्जुनाअन वासनाकाप्रशमये
ज्ञावहै संदेहयसंत्तेहूअतेशूयकके प्रशमहीवासनाकोअंगी
कारकरौ प्रशमवासनाचरितेसंत्तेहैतातेतब दोषकोईएकनही
जौलौंअनुत्पन्नमनअरण्यज्ञाततनत्वहतहैतौलोंगुरुशास्त्रप्रमाणो
ककेनिरंतरको आचरणकरौ ऐसेसतेंपाछैपक्ककषायअरव्वे
ज्ञातवस्तुनिरोधयुक्तजनेप्रशमहूयेवासनाप्रत्याज्यहै इसतेताते
साहित्तातेसंसारकेविवेककेसाक्षात्कारतेंअपनयसंतेहैप्रार
ब्धकर्मककैअवस्थापितचित्तकीस्वाभावकीहूयेतीयाकेयो
गाभ्यासप्रयत्नककेअपनयसंतेजीवन्मुक्तपरमयोगाहै इचित्त
वृत्तिनिरोधकेअभावसंतेतुतत्वज्ञानवानूहूअपरमयोगाहैअसे
रसिध्यौ आविल्लोइप्रकारजीवन्मुक्तविवेकरवेषक्तविस्तरजानबे
योग्यहै ३८ ऐसेप्रात्मनगंधककेउत्पन्नतत्वज्ञानअनुत्पन्न

जीवन्मुक्त अरु परमयोगी है अरु उत्पन्न तत्वज्ञान अरु उत्पन्न जीवन्मुक्त
परमयोगी मत है ये कहा है इन दोनों कहूं ज्ञान तें अज्ञान नाश संस्कार तें हूं
जैसें प्रारब्ध भोग कर्म देह इंद्रिय संघात के अवस्थान तें प्रारब्ध भोग
कर्म के हरत्व संस्कार तें वर्तमान देह इंद्रिय संघात के अभाव तें पुनः उत्पाद
क के अभाव तें एवं देह के वत्सप्रति काई हूं न हीं आश्रम का अरु जो प्राप्त
न कर्मों कैं कैलेश्य एवेव देशापर्यंत रचेतन्न प्रवृत्त है इन कर्मों सर्व कि
मों को त्याग के कैं प्राप्त परमहंस परिव्राजक भाव होया परमहंस
परिव्राजक आश्रम साक्षात्कार के कैं जीवन्मुक्त परब्रह्म बोधन एवं पर
हम गुरु कों पाय के कैं तिस तें वेदांत महावाक्यों परे शास्त्र कों पाइ के कैं
नहीं अंश भावना एवं प्रीति भावना रूप प्रकृत बंधन तें शास्त्र तें रहित अ
र्थ तो मन रखे ज्ञान साइत्यादिक अनावृत्तिः श्मशान इत्यादि चतुर्दल हरा
मीमांसा के कैं श्रवण मनन निदिध्यासनों कों गुरु प्रसाद तें करवे

नांईं आरंभ करता है अरु ध्यान होया है। और बल के अल्पत्व करिकै
अल्पप्रयत्न तें अलब्ध ज्ञान परिपाक होया अरु वासना मनन रहित ध्यासन
रूपमान संरत्ते है। मध्य विषे जो मरण होता है सो ज्ञान परिपाक अभूता
त्व करिकै अनिष्टा ज्ञान न होया नहीं मुक्त होता और रूप है उपासना सहि
त कर्मफल रूप देवलोक को अनुभव करता है। अर्चिरादि मार्ग करिकै॥
नहीं केवल कर्मफल रूप पितृलोक को अनुभव करता है धूमादि
मार्ग करिकै कर्म और उपासना उभय के त्यागत्व तें इस लोक तें एतादृश ग्रा
म्य कीटादि भाव करिकै कष्ट रूप गति को पावै है और तत्व संप्रति
देवयानु पितृयान मार्ग कि असंबंधित्व तें वर्णाश्रमाचार जैसे
अथवा कष्ट गति को नहीं पावता या प्रकार नें रहित कर्म शून्यत्व तें
वामदेव जैसे ऐसे संशय करिकै व्याकुल मन होया अर्जुन उवाच
अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः अप्राप्य योगसंसि

धिकां गतिं कं प्राप्नोति ३७ अथ यत्नशील श्रधायुक्त योगतें चलि
तमानस योगसंसिद्धि कौं न पाय क कैं किस कौं पावता है हे कृ
ष्ण टी यत्न कहा वे यत्नशीलतें अल्प वीर्य विषें न्यहै अलवल॥
य वा गृ कपालु वलोत रहैत ताविचरी इत्यादि जैसे अयत्न है क्यां अ
ल्प यत्न है श्रधा गुरु वेदांत वाक्यों विषे स्वे श्वास बुद्धि स्वपाक कैं
युक्त श्रधा अपरोक्ष सहचारी शम दमादि कौ का उपलक्षण है
शांत दांत उपरत मतें हु श्रधा स्वेत होय क कैं आपही विषे आत्मा
कौं देखता है इस प्रकृति तें त्तेसक कैं नित्यानित्य वस्तु विवेक इहामु
त्र भोग वैराग्य शम दम उपरति तितिक्षा श्रधा संपत्त मुमुक्षु
ता जैसे साधन चतुष्टय संपन्न होया गुरु कौ पाय क कैं वेदांत वाक्य
श्रवणादिक कौं कर्त्ता हिया हुं केवल आयकि अल्पत्व क कैं मरणा

कालरविषेइझेके व्याकुलत्वकरिकै साधनानुष्ठानके असंभवतैं
योगतैं चलितमानस योग कहीये अवतार है परपाककरिकै
लब्ध है जन्म जेसनैं असो जातत्वसा ह्यालाकार है तिसतैं चलेतत्त
है क्यातिसके फलको अप्राप्त हैमन जेसका योगकारिने ध्यानकरिकै
कैहीं योगसंसिद्धि कोनपापककरिकै तत्वज्ञानलेमैनअपुनरावृत्ति
सरहेतैं तत्कार्यकोरिनैवर्त्ते है रतेसको नपाइकरिकै क्याअतत्वज्ञ ही भै जो
न्यहोयाकोनगतिको है कृष्णपावताहै सुगतिकोवादुर्गतिका कर्मो
केपरित्यागतें ज्ञानकीअनुत्पत्तितें तू एकसोकमोहसाधनके अनु
ष्ठायेत्वतैं अर शास्त्र ग्रहणतैं कर्मभ्रष्टत्वतैं ३७ इसहीसंशय
बीजको विवर्ण करते हैं श्लो० कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमि
वनश्यति अप्रतिष्ठो महाबाहो विमूढो ब्रह्मणः पथि ३८ कहउ
भयविभ्रष्ट होया छिन्नाभ्रजैसे नाश होता है अर विमूढ होयाहै
वाने

महाबाहुन्नलके मार्गविषैनष्प्रातेप्त है टी० कच्चित्न्प्रोस सारमेला
एष प्रश्नविषेहै हेमहाबाहु महांत्तकहीये सर्वभगतों के सर्वोपद्रव
रनेवाले विषैसमर्थ हैं अथवा पुरुषार्थचतुष्टय हनविषैस
मर्थहै चार पुनाजोहैस काभैसैपगट रहीमैतकोधामाव भूर
स्तीसके उत्तरहानविषेसाहैयुन्त सर्वत्न हैं ब्रह्मको पवेकही
येवेस प्रप्तमार्ग ज्ञानविषैं रवेमूढ है रवैपनहैं कयानुत्यनब्रह्मा
त्मैका साक्षात्कार है यंत्र्यर्थहैं अप्रात्तिष्टकहीये देवयानू पपेत्याया
नमार्गगमन हेतु उपासनाकर्म लक्षपरतेएह साधनोकर्कैं रहेहैते हैं
और सो उपासन सर्वकमों केफलको त्यागर्नेएतो हुआउभयर विभ्रष्ट है
कर्ममार्गतैं अरज्ञानमार्गतैं सोर छिन्नाभ्रजैसे वायुकरकैं दूदिन्न
भयार वंडेदेन पूर्वमेघतैं भ्रष्ट भ्ररमेघांतर कोंअप्राप्त भ्रजैसे

वर्षाकि अयोग्य होय अंतरालरवेषहीनाश होताहै तैसे योगआरूढ़
पूर्वकर्ममार्ग तें रवेरष्टीत्र अरु उत्तर कहीये ज्ञानमार्ग कों अप्राप्त अं
तरालरवेषहीनाश होताहै कर्मफल पाई बिनांई अयोग्य होताहै
न कहलेय अप्रमाथ है इसके कै ज्ञान कर्म का समुच्चय पतैरा करते है॥
तेऊ पहेउ वैसे ज्ञानफल के अलाभ संते हैं कर्मफल लाभ के सं
भव के कै उभय या वे भ्रष्टत्व के असंभव तें औरु से न हीं कहे है योग्य
तैसके कर्मों कि संभव संते हैं फलकामना के त्याग तें तैसे फ
लकों भें ज्ञान कल्पना करीयत है निष्काम कर्मों कि हू फलसम्भा
वके अपस्तें भव वचनादिक के उदाहरण के कै बिकुधा प्रसंते पार्द
तैसें तातें सर्वकर्मत्यागी प्रतीहीये प्रघाहै अनपे प्राप्तयुं का
ये केतहोंहों संभव तें उर यथापदारथीं तासें भूयक के अपां करतागता
ई भगवान् अतयमि कों प्रार्थना करता है पार्थ कहो एतनमे संशूये

कृष्ण छेत्तुमर्हस्यशेषतः त्वदन्यः संशयस्यास्य छेत्ता न ह्युपप
द्यते ३९ इस मेरे संशय को संपूर्णता करकै दूर करबेको योग्य हो
हे कृष्ण तुम्हतैं और इन संशय का छेत्ता नहीं प्राप्त होता टी० एतत्
कहिये इस पूर्व दिखाये मेरे संशय को हे कृष्ण दूर करबे तांई
संपूर्णता तैं योग्य हो संशय मूल अधर्म कैं उछेद करकैं तुम्हतैं औ
र कोई ऋषि अथवा देवता तो इस संशय को दूर करैगा ये आ
शंका करकैं कहता है त्वदन्यः तुम्ह परमेश्वर सर्वज्ञ सर्वशास्त्रक
र्ता परमगुरु दयाल तैं अन्य ऋषी स्वर तक कैं असर्वज्ञ कोई ऋषि वा दे
देवता इस योगभ्रष्ट परलोक कारते संशय का छेत्ता क्या सम्यक
उत्तर हानन करकैं ना शक्त जानने नहीं होवै है तातैं तुम्हीं प्रत्यक्ष दर्शी
सर्वका परमगुरु मेरे इस संशय को दूर करबे तांई योग्य है इत्यर्थः
३९ अथ से अर्जुन के योगी प्रति आशंका को दूर कर्त्ता होया उत्तर को

श्रीभगवानुवाच श्लो० पार्थनैवेहनामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते नहिकल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिंतात गच्छति ५ ० हे पार्थ इन लोक परलोकविषै हीनाशतिसका नहीं होता हे तात कल्याणकर्ता कोई दुर्गतिको नहीं पावता टी० उभयविभ्रष्ट योगीनाशहोताहैयेकौनअर्थहै कहाइसलोकविषैभ्रष्टकारनैं यहहोताहै वेदरहेतकर्मकित्यागतैं जैसेकोईएकस्वतंत्रभयवाकहापरलोकविषैनरकप्राप्तिको पावताहैजैसेकहाहैश्रुतिकै इनदोनामार्गविषैनरकेसोकवैंजोवनतेहैं येकीटपतंगहोतेहैंसर्पादिकहोतेहैं जैसेकहाहैमनुनेजो विप्रअपनेधर्मतैंचुतहैसोमत्स्यहोयाश्वानमंजारादिकहोताहैइसतेसोउभयभ्रष्टनहीं येकहतेहैं हे पार्थ इनलोकपरलोकविषैनहीं विनाशतिसकाहोताजोयथाशास्त्रकृतकर्मसंन्यासहै सर्वतैंविरक्तहै गुरूकोपाइकरकैवेदांतश्रवणादिककोकरताहै अंतरालविषैमृत्युकोपायागयाहै उभयभ्रष्टनहीं तिसकाविनाशनहीं होताइसमेंहेतुकहतेहैं

अपत्ती अपूर्व विषै अगाउ त्याये हे ॥

जातें कल्याणकर्त्ता कया भूतासया परहेतकारी कोई हू दुर्गति कहा येई हां
आप यज्ञ को अरपरत्र की टारि रूपता को नहीं पावता देतु सर्वतें
उत्कृष्ट ही होय दुर्गति को नहीं पावता ये क्या कहे है ब योग्य है ये अर्थ
है ताते कहीये विस्तारता है आपको पुत्र रूपक कै सोय ताते
कहीयता है स्वार्थ के अर्थ है ताही सो कहीयता त रा ह सवातास
जैसे पिता ही पुत्र रूपक कै होता है असे पुत्र स्थान रखि षष्ठ कै ताते
संबोधन है ताते असा संबोधन कृपाते श्री यसूचनार्थ है तो कहा है
योग भ्रष्ट कष्ट गत को पावता है अरु तत्वसत्ते देवयान पितृयान मार्ग वि
षै एक कै संबंधीत्व तें स्वधर्म भ्रष्ट जैसे सो अयुक्त है इस योग भ्रष्ट कै
देवयान मार्ग कै संबंधीत्व क कै हेतु के अरसंबंधीत्व तें पंचाग्नि वि द्या
विषे जे इस प्रकार जानते हैं अरु जे आरण्य विषै श्रद्धा अरु सत्य को
उपासना करते हैं ते अर्चिरादि मार्ग कि कै सिमेव पावते हैं असे सन्यासव
रे पता क कै पंचाग्नि विद्या जैसे कर्म क दे रहित श्रद्धा सत्यवान

मुमुक्षुकेउं देवयानमार्गकहै ब्रह्मलोकप्राप्तिकेकथनतें अरु
श्रवणादिकपरायणयोगांगकेप्रधानत्वेन होया इसवचनक
केविधाकेप्राप्तत्वतें अंगीतो होत इसवाक्यकहै अन्तर्भाव
रूपवाणव्यापारनें रोधरूपसत्यकेलक्ष्यत्वतें [illegible] बाहेर इया
कोस्पतें वेत्त्वव्यापाररूपकारनेरोधरूप कहीयत है अरु यागाभ्या
सादिविषय अहें सासतें असत्यप्रसंगच यं अपारे जहयम हैं जैसेयो
त्य गकेअंगत्वकहैं केहलोनें अरुजेसत्यरूपहेंकरब्रह्मकहीयेतब
कुहचाननहीं [illegible] वे होत पश्रवणादिककेउं सत्यरूपब्रह्मके चिंतन
रूपत्वतें कर्मयोगहैत्यसत्तेंउं पंचाग्निविद्याजैसे ब्रह्मलोकप्राप्ति
केसंभवतें तैसेस्मरतें हैं संन्यासिनतें अरुलोकास्थानहोताहैइतें
तैसेप्रवर्ततेरहेनैवे होततये चारकेउं अंसीतें कैं पुफलतुल्यफलत्व
स्मर्तकरीयत है जैसेसत्ते संन्यासप्रधासत्य ब्रह्मविचारो वि
धारककेउं ब्रह्मलोकप्राप्तिकेसाधनत्वतें समस्तलोकोकेब्रह्म
लोकप्राप्तिसाधनत्वकोनआपत्ति है इसीतेंही सबवस्तुकेनरूपत्व

[illegible]

कौ योगी चरित्र के नैत्तर मानते हैं तस्यां ह वा एवं विरथु यज्ञस्य इत्या
दिकके अरु समस्त विषे हूं कहावत है स्नान कीयो है त्ते सबने सर्वती
र्थजलं विषे अरु दान करौ है सर्व पृथ्वी अरु यज्ञाके सहस्र ठन
कीये हैं अरु सब देवताउन ने पूजे हैं अरु संसार तें अपने पितरन्हे तें
कौन उधरते हैं अरु ये सब लोकीक कै पूज्यनीय हैं जैसे सकाम न ह
रभ्यान हूं अरु विचार विषे स्थैर्य को पावे इत्ति ४० तैसे हूं योगभ्र
ष्टके शुभ कर्म कि कैं लोकन्ह पर विषे हूं नाशा के अभाव संत्ति कथा
होता है ये कहते हैं श्लो० प्राप्य पुण्यकृतान् लोकानुषित्वा शा
श्वतीः समाः शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते ४१ पांच
क कैं पुण्यकर्त्ति लोकों को अरु दिक कै बैकुंठ समाप्त सर्वत्र
मानो के घर विषे योगभ्रष्ट उत्पन्न होता है योगमार्ग विषै सर्व कर्म
सन्यासी वे हैं तिप्र्य वैराग्यादिक को केतन्हि या अंतराल विषे मृयमाण

टी०

कर्ता

हो या कोई एक पूर्व संपादित भोगवासना के प्रादुर्भाव तें विषय
सुख को चहता है अरु कोई तु वैराग्य भावना का घट जाने तें न हि चहता
रहै न हो ना विषय प्रथम जो है ता यकरि कै पुरायें अन्य में था रहै या जो
यों के लोकों को क्या आचरै राही मार्ग करि कै ब्रह्मलोकों को एक कहीं लो
क विषयहूं भोगां भूमिका में रही अपेक्षा करि कैं ऊ वचन है तहां टीक
करि कै वास को अनुभव करि कै प्राप्त होत कहीये ब्रह्म परमात्म
करि कै श्रेष्ठ [illegible] समा क्या संवत्सरैं तिस के अंतर विषय पवित्र कहीये
शुद्ध पवित्र मित कहीये विभूतमान महाराज चक्रवर्ती यों के गेह
कहीये कुल विषय भोगवासना के [illegible] वतें युधिष्ठर्य
ने काल्है कि जैसे योग अष्ट उत्पत्ति होता है भोगवासना के प्राब
ल्य तें ब्रह्मलोक के अन्नती विषय सर्व किं सिन्नास के अयोग्य म
४० हाराज होता ये अर्थ है ४१ उत्तीप प्रतेप हांतर को कहता है श्लो०
अथवा योगीनाम व कुले भवति धीमतां एतद्धि दुर्लभतरं लोके

जन्म यदीदृशं ॥ ४२ ॥ अथवा धीमान योगीयों के कुल विषे होता है
येंनें पापक कै इन लोक विषे जो ईदृशं जन्म है सो दुर्लभतर है
॥ ४० ॥ अर्थ वा वैराग्यादि प्रभु मनुष्यों के आधिक्य संतु भोगवास
नाके खैर हते पुण्य कर्त्ता के लोकोंको अन्य पापक कै योगीयों के
ही कथा रह इ भाषा रयोके नत्तु राजोके कुल विषे होता है धीम
तो कहीये ब्रह्मवेत्तों के इस कर कै पारंपिनां ऐसे कहह ते नके
मीयोंके प्रबुद्ध प्रमान राजों के गृह विषे जो योग भ्रष्ट का
जन्म है सो ही दुर्लभ है अनेक पुण्य कर कै साध्य तत्तें अरु मोक्ष
के पर्यवसायी तत्तें ..... अरु जो प्रथम हम इ ब्रह्म वेत्तावानों के
कुल विषे जन्म है यह सो है प्रकार दैको ऐसे दुर्लभतर है
क्या दुर्लभतर है दुर्लभ है लोक विषे जो ईदृशं कथा सर्व प्रमाद
रहित अन्य जन्म ऐसे सदुत्तीय की स्तुति करीयेत है भोगवासना

अथ स्वत्वक कैं सर्वकर्मसंन्यास के योग्यत्वतैं ॥४२॥ एतादृशजन्म
दुर्लभ के दुर्लभित्वका हेतु तैं है ॥ ता तैं श्लो० तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौ
र्वदेहिकं । यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनंदन ॥४३॥ तहां पौ
र्वदेहिक रीतिसु बुद्धियोग को पावता है अरु पुनः हे कुरुनंदन रीति
सतैं संसिद्धि रूप विषय यत्न करता है तहां इस प्रकार हूं जन्मर विष
पूर्व देह रूप विषै भया है सो कहिये पौर्वदेहिक सर्वकर्मसंन्यास
गुरूपसत्ति श्रवण मनन निदिध्यासनों के मध्य विषै जे
तने पर्यंत अनुष्ठित है तावत पर्यंत ही रीति स ब्रह्मात्मैक्य विषै बु
द्धि कहैं सं योग को [illegible] योग साधन समूह को
ये [illegible] लभते कहिये प्राप्त होता है न केवल लभता है किंतु
रीति स तैं कपात् तिसलाभतैं अनंतर भूयः कहिये अधिक लभ्य
भूमि तें आगम भूमि के लिये कर बेता है संसिद्धौ कहिये संस

धूयंज्ञामोक्ष इतिसन्निमित्तप्रयत्नकर्त्ताहि मोक्षपर्यंतभूमि
कांउत्कौरसेय कर्त्ताहि ये अर्थ है हे कुरुनंदन तुजके इस
सप्रामानोके कुलरवेषेयो गाम्भष्टन महोयाहै औसे पूर्व
वासं केवहुतैरनेयत्नि हीज्ञानवला महोवैमायेजनाइवे ना
रनेरमेत महाप्रभावकुरु का कथन है ये अर्थ भगवान व
रसेष्के वचनरवेषेप्रसिद्ध है जैसे श्रीभगवानोवाच एक
अर वतीयरत्तीयभूमका कों आरूढ मत्यकर्कीं दृढ ज्ञान न होती है हेम कौ
गवन पूर्वसप्तभूमका व्याख्यात हैं तहां रनेत्यारनेत्यवस्तुरवेवेक
पूर्वक जोइहां अरु परत्र अर्थभोगरवेषेणौ वैराग्य है इति सत्तं शम
मधाराधितेहस्सर्वकर्मसन्यासादेपूर्वकमुमुक्षुतापमेख्या
प्रथमभूमका है क्यासाधनचतुष्टसंपन्न इति सत्तं [illegible]
गुरुकोपायककै वेदांतवाक्यविचारणात्मका दूसरी भूमका है

अवलोकन मननसंपन्नरूप है तिसतें अवलोकन मननरूप तत्वज्ञान की
नैरंतर्य स्थितिकल सात्विक ज्ञानता तृतीयाभूमिका है तिन्हुं ध्यास नसंपन्न
रूपा चतुर्थी भूमिकानुतत्वसाक्षात्काररूप ही है पंचम षष्ठ सप्तम
जीवन्मुक्त के अवांतरभेद हैं औसे तृतीय अध्याय पर विषे पूर्व व्याख्या
त है तहां चतुर्थी भूमिका को प्राप्त भए के जीवन्मुक्त के अभाव संतें हूं
विदेहमुक्ति प्राप्ति नहीं संभव तिसतें उत्तरभूमित्रय को प्राप्त जीव
ना होयाह मुक्ते है क्या कहा पर्वीर ह औसे तहां भूमिका चतुष्टय विषे दू
कां साधन भूत भूमिकात्रय विषे तु कर्मत्यागते अरु ज्ञान के अला
भ ते होता है दूका औसे तहां ही प्रथम है अवस्थिष्ट जो कहते हैं यो
गभूमिका के वैराग्य कहे जो रखि तिसने ओ सन्यासरी के भूमिका कों
के अभ्यासानुसार कवै पूर्व दुःख तही रोग होता है तिसतें स्वर्ग विमानो
विषे अरु लोकपालो के पुरो विषे अरु स्मर के उपवन के कुंजो विषे
या सुख होया रमता है तिसतें सुकृत को संभवो पूर्व कृत दुष्कृत
औरु

शुचीनां इसका अर्थ कहै जो पूर्ण मर्म है ५ = जन्म को पावते हैं

भोग हुयने पर ही लोक संते होते हैं पृथ्वी विषे योगा शुद्ध श्रीमान
गुणवान संतो के गृह विषे जन्म को पायकरकै वे योग वासित हो
ये योग को सेवते हैं तहां पूर्व भावना कर अभ्यस्त जो योग भूमिका के
मै है तिसको देखकर कै वे बुध उत्तेजक कै उत्तर भूमिका को क्रम प्राप्त तै पहु
चते हैं इहां पूर्व विषय भोग वासना के प्राबल्य तें अल्प काल अभ्यस्त
वैराग्य वासना के दौर्बल्य करकै प्राणों कि उत्क्रांत समय विषे प्रा
दुर्भूत है भोग स्पृहा जिसको ऐसा कर्म संन्यासी जो है सो ही उक्त है
॥ अरु जो वैराग्य वासना के प्राबल्य तें प्रकृष्ट पुण्य करकै प्रारब्ध जो पर
मेश्वर का ऐसा रहै तिसके वशा करकै प्राणों के उत्क्रांत समय वि
षे अनुद्भूत है भोग स्पृहा जिसको ऐसा संन्यासी मोक्षार्थ विधान रवे
ना हु ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मण लोकों के सर्व प्रमाद कारणशून्य कुल विषे
उत्पन्न होय या तहां प्राक्तन संस्कार के आसेव्यता तें बिना यत्न ही से

१२४ है क्यापूर्वला ते सज मरविषे वा और जन्म विषे मुक्त होता है यनु ईहां ही मुक्त हो

वैं नहीं पूर्व के जैसे मोहप्रते आश्राका औसवसिष्ठजीने नहीं कहा

पूर्व पर मद्याल मग वामनु ने नं अपयवाक्यसे पहातर करके कहा है

और रत्यह है ५२ ननु जो ब्रह्मवेत्ता ज्ञानलोके सर्वप्रमाद कार रागप्रू

ण्य कुल विषे उत्पन्न है ते सके मध्य विषे विषय भोग के वधान

के अभाव ते अवश्य वहे तत्त्वज्ञान विषे रत्कार के उद्बोध ते पुनः हुस सर्व

कर्मसंन्यास पूर्वक ज्ञान साधन का लाभ होवे है और जो नु अज्ञान

महाराज चक्रवर्तीयों के कुल विषे बहु विध भोग के व्यवधान करके

उत्पन्न है ते सके विषय भोगवासना के प्राबल्य ते आरप्रमाद के

रक के संभव ते कैसे अत्र ते अवश्य वहे तत्त्वज्ञान संस्कार का उद्बोध होवे

है इत्यत्व करके सर्वकर्मसंन्यास अयोग्य करके कैसे ज्ञान साधन

का लाभ होवे है इसते नहीं कहीयत है श्लो० पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते

ह्यवशोऽपि सः जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते

कैसे श्रीसाहजी श्रीजानकी प्रसाद प्रसिद्धि के कर्मका बहुत करिके ज्ञानकी ठीक हैं

पूर्वाभ्यासतें संकल्पैं ही अवश्यही सो हरात है योगकाजिज्ञासु
हूआ एवम्असत्को उलंघवर्त्तता है टी॰ अरतैं चिरकालव्यवहित जन्मकरकैं
बंधतें सही पूर्वाभ्यास करकै कृतापूर्व उत्पादित ज्ञानसंस्कारकरकैं
अवश्यही क्यों मोक्षसाधनतांई अप्रयत्नमान हू हराये है क्या
अपता व्यवहारीकरीये है क्योंअकस्मातें ही भोगवासनाद्वैतें अ
स्थान करकै मोक्षसाधनके सन्मुख करीये है अल्पकाल अभ्यस्त
ज्ञानवासनाके हू वस्तुविषयत्व करकै अवस्तुविषई भोगवास
नाओं तें प्राबल्यतें हे रघुवंशी सत्य ही पुरुष विषे प्रवर्त्त हैं ज्ञानतांई अप्र
वृत्ते हैं और ज्ञानतांई अप्रयत्नमान हू है पूर्वसंस्कारप्राबल्यतें
अकस्मातें ही रत्नाभ्यास विषे ज्ञानके सन्मुख होता भया है॥
इति इसा हीतें पूर्वोक्त है वे हामै कमनाशोस्तीति अनेकजन्म
सहस्र करकै व्यवहित हू ज्ञानसंस्कार स्वकार्यको करता ही है हावे

विरोधीके उपमर्दककै ये अर्थमेंप्राप्त है सर्वकर्मसंन्यासके अभा
वसैं तै हूं तिनै भ्रष्ट कर इन्हीके ज्ञानाधिकार रक्षीत नहीं है जैसै घाट
चेरतेंके र हक बहुत्योंके मध्य विषै वर्त्तमान हूं अपनार हि द्व्य
स्वयं अल्ने वर्त्तमान हूं तिन सर्वकितिर स्कार ककै अपुने सामर्थ्य
तै हीलरी है अरपीछेतु कवहस्या है ऐसै विचार हू होता है ऐसै बहु
तज्ञान प्रीतैं बंधको कर्म ध्या विषै विद्यमान हूं बलवत्त ज्ञानसंस्कार नें
स्वसामर्थ्य विश्राषत हीं सर्वप्रतैं बंधको कोर रबाय ककै अपुने
वश्य कर लिये हैं ऐसे ही अन्यप्रयोगकके जनायो है इसतें ही संस्कार
के प्राबल्यतें जिज्ञासु कहिये ज्ञानतमे हूं मोक्ष साधन योगको विषै
प्रकारको प्रथम नम कार विषै स्थित होया संन्यासी ऐसे साहूं तैसै ही
मकार विषै मन्त्र होया अन्तराल विषै बहुत विषयोको भोगककै महारा
जचक्रवर्तीयोंके कुलविषै समुत्पन्न हूं योगभ्रष्ट पूर्वबद्ध ज्ञानसंस्का
र के प्राबल्यतें रति सजन्म विषै ग्राए असत कहिये कर्मप्रतिपादक

है

वेदन्अरत्तेवर्तते क्या उलंघक कैरटिकर्त्ता है कर्माधिकार के अरत्तेक
मक कैं ज्ञानाधिकारी होता है येअर्थ इसक कैं हूं ज्ञान कर्म समु
च्चय इहर कीयो अरसे दुष्ट्यो है समुच्चय विषे जाते ज्ञानी के हूं कर्म
काउ केअरत्ते कर्म के अभावते ६५ जब अरे सप्रयम भूमिका विषे
मत्य हूं अनेक भोगवासना कैं व्यवहित हूं विवेध प्रमाद कार रा
वानू महाराज कुल विषे हूं जन्म पाय क कैं योगाहूं योग भ्रष्ट पू
र्व विध ज्ञान संस्कार प्राबल्य क कैं कर्माधिकार को उलंघक कैं ज्ञा
नाधिकारी होता है तब येक्या क हिवे योग्य है जो द्वितीय तृतीय भू
कार विषे मृत्य विषय भोग के अंतर विषे महाराज कुल जन्मवान
य द्वा भोगा कोन क कैं हीं लि च्यवन लविक्षाल ताँ जन्मवानू योग
भ्रष्ट क र्माधिकार के अरतेक मरण क कैं ज्ञानाधिकारी होइ क
कैं रत्ते सद्ज्ञान साधनों को ल्लेस क कैं रत्ते सद्ज्ञान के फल लाभ क कैं.

श्लो॰

संसारबंधनतैंमुक्तहोताहै इतैसोयेकहतेहैं प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगीसंशुद्धकिल्बिषः अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो यातिपरांगतिं ४५ प्रयत्नतैंयतमान संशुधकेलविषयोगीअनेकजन्मकरकैसंसिधहोयाइतिसतैंपरमगतकोपावताहै टी॰ पूर्वकृत प्रयत्नतैंहू अधिकअधिकयतमानकयाप्रयत्नाधिकाकोकर्ता होयायोगीपूर्वविधसंस्कारवान् इतिसहीयोगप्रयत्नपुराणककैसंशुधकिलविषहै कयाधोताहै ज्ञानप्रतिबंधकपापमलजिसका इसीतैंहीसंस्कारकीवधतातैं अरपुरणकावधतातैं अनेकजन्मोंककैसिंसिधसंस्काराधिक्यककैअरपुरणाधिहै पर कहांयेअरूपगतमुक्तकोनहीं ईहांकोई संशायहै अब योगीस्तुतिकरीयतहै अर्जुनप्रतिश्रीधाअरतेग्रायके

उत्साहपूर्वक योग को करै निमित्त श्लो० तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानि
भ्योऽपि मतोऽधिकः कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन ४६
तपस्वियों तें भी योगी अधिक है ज्ञानियों तें भी अधिक मत है अरु कर्मियों
तें भी योगी अधिक है तातें योगी होवो हे अर्जुन टी० तपस्वी कहीये कृच्छ्र
चांद्रायणादि तपः परायण तिन्हों तें हूं अधिक कहीयेउ स्पष्ट है योगी का
तत्वज्ञान की उत्पत्ति तें पीछे मनोनाश वासनाक्षय कारी रविघा कर कै
रतें सप्त को आरूढ होते हैं जहां काम क्रूर भये हैं ते तहां चतुरथ प्राप्त हो
ते हैं तम क्रूढ प्राप्त होते हैं ते तपस्वी ऐसा पढ़ु न तें इसी तें ही कर्मीयों
तें क्या इस हृदगोस रहे तत्त्वा तें ऐसो मारि कर्म कि अनुष्ठान तें अधिक
है योगी कर्मी अरु तपस्वीयों के अतत्त्व क कै मोह के प्रयोग यत्वतें ॥
ज्ञानीयों तें हूं कापरोक्ष ज्ञानवानों तें हूं अपरोक्ष ज्ञानवान् अधिक
मत है योगी ऐसे अपरोक्ष ज्ञानवान् तें हूं मनोनाश वासनाक्षय के
अभाव तें अजीवन्मुक्तों तें मनोनाश वासनाक्षय वंक कै जीवन्मुक्त

योगीउ अधिक मत है मुज के जाने अइसे है ता तें आधिकाधिक मयत्न बल तें तूं यो
ग अष्टअंग बं तत्व ज्ञान मनोनाश वासनाक्षयों कर के योगी जीवन्मुक्त है जो सो
योगी परम मत है अइसे पूर्वोक्त सो ता दृष्ट हो वो साधन पाइके ...वें हे अ
र्जुन तूं अइसो योगी हो धन्यो है ४६ अब सर्व योगीयों विषे श्रेष्ठ यो
गी को कहता है या अध्याय को समाप्त करते हैं श्लो० योगिनामपि
सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना श्रद्धावान् भजते यो मां स मे युक्ततमो म
तः ४७ सर्व योगीयों के मध्य विषे मद्गते चित्त करि कै जो श्रद्धावा
न् हो या मो को भजता है सो मुज के अतिशायक कै युक्त मत है टी०
नं यामैं कहा पंच सहज्ञादि देवत्यों के सर्व भक्तो के मध्य विषे स
गुण भगवान् वासुदेव विषे पुरुषपरायण करवे रूप नें गत कहा है
प्रीत वृत्ति प्राप्त ऐसे मद्गत अंतरात्मा का अंतःकरण ता करकैं
प्राग्भवी संस्कार चातुर्य तें अरु साधसंग में तें मुज के भजन विषे ही

श्रधावान करा अनेन्नय करकै ऐश्वर्य ध्यान होया जो सेवता है क्याले
रेतर चेतवना करता हि मैनारद लोई ईश्वर सगुण वाले गुण को
मनुष्य है ये और ईश्वर के साधारण है ये ऐसे भ्रम को त्याग
करके सो ही मुज काम में कयो सी युक्ततम क्या सर्व समार हेतारचेत
योगायो तैं श्रेष्ठ मुज के मत है क्या ईश्वर सर्वज्ञ का मत जो श्रद्धे
तो है समान योगाभ्यास करु सो ती हूं और समान मेल नपते
सो रती हूं मड़ कर करकै ऐश्वर्य ज्यो तैं मड़ कर केही श्रेष्ठ त्वतें हू मड़क
तत्पर युक्ततम अनायास करकै हि देखता इस मध्य हि वो देभाव
है सोऽस्स अध्याय करकै बुद्धि पुरुष का हेतु जो कर्मयोग है तिस
की मर्यादा को दिखावते और तिस तें कृतसर्वकर्मसंन्यासके
सो गायोग वचल कि ते और मनो निग्रह उपाय को तरे स्कारों करकै
निरासपूर्वक उपदेश करते योगभ्रष्ट के पुरुषार्थ शून्यता को

कारखोछोलकर्त्तसृजने कर्मकोसमरत्वंपदार्थनिरूपणकसमाप्ते
नेहै इसतेपरेंषष्ठध्यावानजोमोकोंभजताहेसोमुजकेपुरूतमम
नेहै ऐसेसप्तूल्वेतजोभक्तयोगहै भजनीयेभगवानवासुदेवतेस
दार्थत्तिसकोनिरूपणाकरबानेसेंतसप्तमअध्यायपदटक
आरंभकरीयतहै ऐसेसुरवहै ४७ इतेश्रीभगवकातागूढ
ठार्थदीपकायांषष्ठोध्यायः समाप्तः प्रथमंचकांडंसमाप्तं



